महात्मा मार्टिन लूथर।

Onkar Press Allahabad.

ओंकार आदर्श चरित माला की २३ वीं पुस्तक

महात्मा मार्टिन लूथर

का

जीवन चरित्र

लेखक

लालता प्रसाद टंडन

एम० ए०, एल० एल० बी०

स्वर्गीय पण्डित ओंकारनाथ वाजपेयी

तथा

पं० रामप्रसाद त्रिपाठी एम० ए०

द्वारा

सम्पादित

पं० काशीनाथ वाजपेयी के प्रबन्ध से ओंकार प्रेस, प्रयाग से छपकर प्रकाशित

प्रथमावृत्ति] [मूल्य ।=)

समर्पण

—:०:—

जिनका उत्साह अदम्य, जिनका चरित्र स्वच्छ और पवित्र,

जिनके विचार उच्च और उदार जिनके उद्देश्य

शुद्ध और निःस्वार्थ

थे

ऐसे श्रीमान् पंडित ओङ्कारनाथ वाजपेयी जी

की

स्मृति में ग्रंथकार की यह तुच्छ भेंट

सादर समर्पित है ।

भूमिका

धर्म, नदी के स्रोत की भांति, प्रारम्भ में स्वच्छ और पवित्र होता हुआ भी कुछ दूर आगे बढ़, कुछ समय के उपरान्त, अनेक अन्य गुणवाले सहकारी स्रोतों के संगम से, अनेक प्रकार के स्वभाव और गुणवाली जातियों को स्वीकार करने के कारण गंदला और मैला हो जाताहै। उसकी आदि निर्मलता नष्ट हो जाती है और उस निर्मलता का स्थान जघन्यकार्यों ग्रहण करती है संसार के सब धर्मों के इतिहास से प्रमाणित धर्मों की उत्पत्ति उत्थान और प्रलय का यह एक साधारण नियम है। धर्म के अशुद्ध हो जाने और आदि पवित्रता से गिर जाने पर, उस धर्म की कुछ महान् आत्माएं उस धर्म को सुधारने का उद्योग करती हैं क्योंकि "यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहं" इति।

महात्मा मार्टिन लूथर भी संसार के अनेक धार्मिक सुधारकों में से एक है। ईसाई धर्म के लिये मार्टिन लूथर ठीक वैसे ही हुए हैं जैसे आधुनिक हिन्दू धर्म के लिये स्वामी दयानन्द। जिस समय मार्टिन लूथर ने जन्म लिया था उस समय की ईसाई धर्म की अवस्था (जिसका सविस्तार वर्णन पुस्तक में किया गया है) आधुनिक हिन्दू धर्म की अवस्था से इतनी अधिक मिलती है कि कुछ आश्चर्यान्वित सा हो जाना पड़ता है। धर्म पुरोहितों का धनले पाप प्रतिशोध

का आश्वासन देना, साधुसंघों का निःसीम धनी और फलतः व्यभिचारी होना, धर्म के वाह्य कर्म कांड पर मुग्ध हो धर्म के तत्वों का भूल जाना; धर्म के आदि ग्रन्थों का स्वार्थ लोलुप भाष्यकारों द्वारा मनमाना अर्थ किया जाना; जनता का अधिकांश रूप में वहमी और भूत प्रेतों में विश्वास करनेवाला होना, धर्मकृत्यों का सत्यनारायण की कथा तथा तीर्थ यात्राओं की रेल पेल तक ही परिमित होना; प्रत्येक तीर्थ स्थानों पर, गया प्रयाग के पंडे, मथुरा के चौबे, काशी के संन्यासी, श्रीनाथ के गोसाईं आदि के रूप में एक के स्थान पर अनेक पोपों का होना; एक विचित्र तुलनात्मक चित्र हृदयांक पर चित्रित करता है।

यह एक सामान्य अनुभव की बात है कि अपने दोष अपने आप को नहीं दिखायी पड़ते। परंतु वे ही दोष यदि किसी अन्य में दीख पड़ते हैं तो बड़े घृणास्पद विदित होते हैं। दूसरों के दोषों की समालोचना करते हुए कभी २ ध्यान हो आता है कि कहीं येही दोष मेरे में भी तो नहीं हैं। इस संदेह का उठना कि मनुष्य अपनी परीक्षा करना प्रारंभ कर देता है। हमें आशा है कि हमारे हिन्दू पाठक पाठिकायें गण तत्कालीन ईसाई धर्म की अवस्था का ज्ञान कर फिर एक दृष्टि अपने धर्म की ओर भी करेंगे और यह सोचने का उद्योग करेंगे कि कहीं वेही दोष हमारे धर्म में भी तो नामांतर से उपस्थित नहीं हैं। यदि यह जीवनी किसी अंश में भी हिन्दुओं की समालोचना बुद्धि उनके निज के धर्म की त्रुटियों की ओर प्रेरित कर सकी तो अपने उद्देश्य में बहुत कुछ सार्थक समझी जानी चाहिये।

यद्यपि जीवनी अल्पकाय है परंतु तब भी यह बात दृढ़ता के साथ कही जा सकती है कि मार्टिन लूथर संबंधिनी कोई घटना या विवेचना ऐसी नहीं है जो किसी महत्व की हो और इस पुस्तक में स्थूल या सूक्ष्म रूप से उसका समावेश न किया गया हो। दूसरी उल्लेखनीय बात यह है कि इसमें कोई भी ऐसी बात नहीं लिखी गयी है जो किसी न किसी प्रमाणिक ग्रंथ के आधार पर न हो।

यह जीवनी श्रीमान् स्वर्गीय पंडित ओंकारनाथ वाजपेयी जी के जीवनकाल ही में समाप्त कर उन्हें दे दी गयी थी और पंडित जी ने इसे स्वयं देखने की कृपा भी की थी। यद्यपि यह जीवनी उनके सामने प्रेस में नहीं जा सकी परंतु इसका और सब प्रकार का संपादन कार्य पंडित जी स्वयं समाप्त कर चुके थे। श्रीमान् पंडित ओंकारनाथ वाजपेयी जी द्वारा संपादित आदर्श चरित माला का यह अंतिम प्रसून है; उनकी हिन्दी साहित्य सेवा का यह अंतिम फल है, उनकी समाज सेवा सम्बन्धिनी वाञ्छाओं का यह अंतिम उद्गार है।

मुट्ठीगंज–प्रयाग

निवेदक—
लालता प्रसाद टण्डन

नोट:—यद्यपि अभी अन्य कई एक पुस्तकें स्वर्गीय पं० जी के द्वारा सम्पादित की हुई पड़ी हैं जो यथा समय प्रकाशित कीजायगी—सं०

महात्मा मार्टिन लूथर

प्रथम परिच्छेद

जन्म और बाल्यकाल

संसार के अधिकांश महापुरुषों ने, जिनकी विद्युत शक्तियों ने मानुषिक जीवन-प्रवाह के एक नवीन मार्ग पर चलने को वाधित किया है बहुधा अपनी बाललीला किसी (नंद) ग्राम ही में खेली है। किसी तुच्छ बन-खंड, किसी अप्रसिद्ध कुल को ही उच्चतम और प्रसिद्ध बनाना मानो इन महापुरुषों को अभीष्ट है। महात्मा मार्टिन लूथर का जन्म भी एक बहुत सामान्य कुल तथा अज्ञात स्थान में हुआ था। १० नवम्बर सन् १४८३ ई० में ईसलीवन नामक स्थान पर आपका जन्म हुआ। इनके पिता का नाम हैन्स लूथर और माता का मारगरेट था। लूथर के माता पिता का पैतृक निवास स्थान सैक्सनी (जर्मनी) प्रांत में थुरजियन बन के निकट मोहरा ग्राम था। लूथर के जन्म समय के कुछ ही पूर्व उनके पिता मोहरा से ईसलीवन में आकर बस गये थे। मार्टिन लूथर के पिता ने मोहरा क्यों त्यागा इसके बारेमें कई किंविदंतियाँ हैं। किसी-

श्रान्त पथिक को मोहराग्राम वृद्धके अब भी वह खेत दिखाते हैं जहाँ हैन्स लूथर के मोटे लट्ठ ने खेत में अनधिकार प्रवेश करने वाले किसी गड़रिये को जीवन मुक्त किया था। कहते हैं कि इसी हत्या के भय से हैंस लूथर मोहरा छोड़ भागा। कुछ लोगों का कथन है कि ईसलीवन में एक बड़ा मेला लगता था और मार्टिन लूथर की मां मेला देखने गई थी और वहां ही लूथर का जन्म हुआ। परंतु यह असंभव सा प्रतीत होता है। ईस-लीवन मोहरा से १४ जर्मन मील है। इतनी दूर एक कठोर गर्भा स्त्री मेला देखने जायगी! वास्तविक बात यह है कि ईसलीवन के भूगर्भ में कच्चे ताँबे की अच्छी खानें थीं और हैंस लूथर खान का व्यवसायी था। ऐसी अवस्था में भूगर्भस्थसंपत्ति की खोज ही हैंस लूथर के देश त्याग का पर्याप्त कारण विदित होता है।

जापान को उन्नतिशील देख, तथा प्रतिद्वंद्वता में बराबर की टक्कर मारते पा, कुछ पाश्चात्य विद्वानों को उसे पुरखिन यौरोपा का नाती सिद्ध करने की बड़ी लालसा होगई है। मार्टिन लूथर को भी लोथाएर नामक निकटस्थ भारी सामन्तकुल का पुत्र सिद्ध करने का बड़ा उद्योग किया गया है परन्तु महात्मा लूथर स्वयं अपनी हीन अवस्था का यों प्रमाण देते हैं "मैं कृषक का पुत्र हूं, मेरे पिता, पितामह, प्रपितामह सब ही एक सीधे कृषक थे"। उसे उसके गरीब पिता की गोद से छीन एक अमीर खानदान का (गोद लिया) पुत्र सिद्ध करने के और कई प्रमाण भी दिये जाते हैं परंतु वे सब सारहीन हैं।

हैंस लूथर का काम ईसलीवन में न जमा। मारगेरट के गर्भोत्पन्नरत्न को छोड़ ईसलीवन के पृथ्वी गर्भ से हैंस को

बड़ी निराशा हुई और इन्हें जीविका निर्वाहार्थ मैन्सफील्ड जाना पड़ा। यहाँ आकर प्रथम तो इस कुल को दरिद्रता से घोर युद्ध करना पड़ा। लूथर कहता है "मेरा गरीब पिता एक खान का काम करने वाला था, मेरी माता को सब लकड़ी अपनी पीठ पर ढोकर लानी पड़ती थी"। परंतु 'उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः' के अनुसार हैंस की अवस्था शीघ्र सुधरने लगी और थोड़े ही दिनों में यह कुल, रोटी दाल से खुश हो गया'। धन प्राप्ति के साथ ही साथ पदोन्नति भी होती गई यहाँ तक कि हैंस लूथर नगर की सभा (City Council) के सभासद् हो गये।

हैंस लूथर के सात लड़की लड़के थे उनमें मार्टिन लूथर ज्येष्ठ था। हैंस लूथर संतति की शिक्षा दीक्षा के विषय में चाणक्य का शिष्य था। उसका भी यही सिद्धांत था कि "लाड़ने बहुवो दोषाः ताड़ने बहुवो गुणाः तस्मात् पुत्रश्च शिष्यश्च ताड़येन्न तु लालयेत्"। यद्यपि बड़े होने पर मार्टिन लूथर भी उपरोक्त सिद्धान्त के पक्ष में हो गया था और उसके बहुत से ऐसे वचन उद्धृत किये जा सकते हैं जिससे यह स्पष्ट है कि उनकी परिपक्व बुद्धि ने 'चटकनं मुख भंजनं' से बढ़कर दूसरी बालरोगौषध नहीं ढूढ़ पायी थी परंतु तब भी जब ये औषध उन्हें स्वयं पीनी पड़ती थी तब वो इसे बड़ी असहनीय और कड़ुई मानते थे। जो कुछ भी हो मार्टिन लूथर के माता पिता तनिक २ से दोषों के उपसंहार में इनकी (लगुड़िमुष्टिकाहस्तपादप्रहारेण) अच्छी खबर लेते थे। यहाँ तक कि मार्टिन लूथर लिखते हैं कि "बाल्यकाल के ऐसे कठोर जीवन ने आगे चलकर साधु होने में मुझे अधिक सहायता दी"।

मार्टिन लूथर ग्राम-पाठशाला को भेजे गये। इस पाठशाला का वर्णन मार्टिन लूथर स्वयं यों करते हैं, "पाठशाला क्या थी छोटी मोटी कारागार थी यदि नरकशाला या पापशोधन स्थान (Purgatory) कहें तब भी अत्युक्ति न होगी। गुरु जी तो साक्षात् यम के वशंज थे। सारी शिक्षा मारने पीटने ही तक परिमित थी इत्यादि "विद्यार्थियों को मार्टिन लूथर सच्चे धर्मार्थ प्राण त्यागियों (Genuine Martyrs) की उपाधि देते हैं। इस सब शरीर कष्ट के बाद भी लड़का जो कुछ पढ़ पाता था वह "बिलकुल नहीं के" बराबर था। "क्या यह वास्तव में कष्ट की बात नहीं है" महात्मा लूथर कहते हैं "कि बीस या इससे भी अधिक वर्षों तक परिश्रम करने के बाद लड़के को केवल इतनी गलत पलत लेटिन (संस्कृत) आजाय कि वह एक पादड़ी होकर येन केन प्रकारेण 'मास' कहता फिरे।

१४ वर्ष की अवस्था में लूथर मैजवर्ग के स्कूल में भेजे गये और इसके एक वर्ष बाद ईसनैक के स्कूल भेजे गये। इन उत्तरोत्तर अच्छे स्कूलों में आने से इनकी मानसिक शक्ति का अच्छा विकाश होने लगा और धीरे २ उनके हृदय में ये प्रश्न उठने लगे "कोऽहं कस्य च संसारो" इत्यादि। मैजवर्ग का एक वर्ष घटना रहित है। यहां इनको खाने के लिये घरघर जाकर भीख मांगनी पड़ती थी। लूथर का कथन है कि हमी को नहीं वरन् अमरों के लड़कों को भी यही करना पड़ता था। कहा जाता है कि एक रोज कठिन ज्वर से पीड़ित लूथर अकेले अपने कमरे में थे। पिपास लगने पर ये रेंगते २ घड़े के पास पहुंचे। ठंढा पानी खूब पेट भर के पिया। आकर

सो रहे, आते ही नींद ने धर दबाया। जब उठे तो पाते हैं कि रोग दोष का कहीं नाम नहीं है। ईसनैक के स्कूल के गुरू के विषय में कहा जाता है कि जब वह पाठशाले में आता तो टोपी उतार लेता था। पूंछने पर उत्तर देता कि हमें इन बालकों की गुप्त शक्तियों का आदर करना चाहिये। इनमें से कोई तो एक दिन जज कोई मजिस्ट्रेट और कोई दूसरे ऊंचे पदों पर होगा।

सन् १५०१ ईसवीमें १८ वर्ष की अवस्था होने पर मार्टिन लूथर एरफर्ट के विश्वविद्यालय को भेजे गये जो उस समय जर्मनी के सर्वोत्तम विश्वविद्यालयों में से था। लूथर के पिता की यह तनिक इच्छा न थी कि लूथर पादड़ी हो। उसने इन्हें एरफर्ट कानून सीखने को भेजा था। कानून में इन्होंने बहुत उद्योग किया बहुत कुछ सफलता भी प्राप्त की परन्तु इनकी आत्मा कानून की सूखी हड्डियों से शांत न होती थी। एरफर्टमें लूथर की जीवनी मैथीसियस यों वर्णन करता है "यद्यपि वह (मार्टिन लूथर) प्रकृति से एक प्रसन्नचित्त हृदयग्राही युवक था तब भी वह सदा प्रार्थना करके गिरजा जाकर और फिर प्रातःकाल ही से अपने पठन पाठन में लग जाता था क्योंकि उसका सिद्धान्त यह था कि अच्छी तरह ईश्वर प्रार्थना करना मानो आधे से अधिक सबक याद कर लेना है" लूथर न तो कभी अधिक देर तक सोता रहता था न नाग़ा करता था। गुरू से प्रश्न बहुत पूंछता था और पाठशाला के समयोपरान्त पुस्तकालय में पुस्तकें देखा करता था। उसने लैटिन भाषा के प्रसिद्ध ग्रन्थकार जैसे सिसरो, वर्जिल, लिवी आदि की पुस्तकें पढ़ीं थी। अभी तक ग्रीक भाषा में मार्टिन लूथर ने

प्रवेश नहीं किया था। इसके बाद भी मार्टिन लूथर को ग्रीक भाषा का वैसा ज्ञान न था जैसा लैटिन का। अरस्तू ही एक ऐसा ग्रीक ग्रंथकार है जिससे मार्टिन लूथर को विशेष परिचय था। मैथोसियस कहता है कि "एक दिन जब वह पुस्तकें लौट रहा था, शायद इस मतलब से कि भली बुरी किताबों का भेद जान सके, कि अचानक उसे एक लैटिन भाषा की बाइबिल मिलगई जिसे उसने अपने जीवनमें पूर्व कभी भी नहीं देखा था ......" लूथर भी उपरोक्त विषय का यों समर्थन करता है "आज के तीस वर्ष पूर्व बाइबिलों* को कोई जानता न था... जब तक मैं बीस वर्ष का न था मैंने बाइबिल देखी भी न थी।

*पुस्तक छापने की विधि प्रथम २ जान गुटेन्वर्ग ने १४३६ ईस्वी में आविष्कृत किया। इससे भी पूर्व लकड़ी पर खुदी तस्वीरें और लिखे हुए वाक्य के वाक्य छापने का उद्योग किया गया था परन्तु अलग अलग अक्षरों को जोड़कर (जो हटाये बैठाये जासकें) छापने की विधि किसी ने नहीं सोची थी। जान गुटेन वर्ग एक दरिद्र मनुष्य था अतः उसने जान फास्ट और पीटर शाफर की सहायता मांगी। पीटर शाफर बहुत सुन्दर लिखता था अतः उसे तो अक्षर बनाने का काम दिया गया और फास्ट को रुपया जुटाने का काम दिया गया। इन्होंने छापने की स्याही भी आविष्कृत की। १४५७ ईस्वी में प्रथम लैटिन पुस्तक छपी और १४६२ में प्रथम वार बाइबिल छपी। फास्ट ने गुटेन वर्ग को गहरा धोखा दिया। फास्ट को जब छापे का भेद ज्ञात होगया तो उसने अपना उधार दिया रुपया गुटेन्वर्ग से मांगा। गुटेन्वर्ग देने में असमर्थ हुआ। फास्टने नालिश कर छापाखाना आदि कुड़क करा लिया। गुटेन्वर्ग को भाग जाना पड़ा। तब फास्ट और शाफर ने मिलकर बाइबिल छापना प्रारंभ किया। बहुत शीघ्रता से एक दूसरे से मिलती जुलती बाइबिलें बिकते देख लोगों ने गप उड़ा दी कि फास्ट तो भूतों से मिला है और उनके द्वारा बाइबिल बनवा धन कमाता है।

अंत में मुझे * पुस्तकालय में एक बाइबिल मिलगई, उसे मैं पढ़ता था और डाक्टर स्टौपिज को बड़ा † अचंभा होता था।

* आज कल जब कि गुदड़ी बाजार में सारी पुस्तकें एक तरफ और बाइबिल अकेली एक तरफ वाली दशा होरही है तब मार्टिन लूथर का उपरोक्त कथन एक गल्प मात्र सा मालूम पड़ता है परन्तु बात यह है कि वास्तव में एक समय था जब लूथर का कथन अक्षरशः सत्य था। यद्यपि छापे की विधि का आविष्कार हो चुका था परन्तु तब भी लूथर के समयतक छपी पुस्तकें उतनी ही कम थीं जैसे आज कल हाथ की लिखी पुस्तकें वो गिरजा धन्य समझा जाता था जहाँ एक हाथ की लिखी बाइबिल जंजीर से बंधी, बीच टेबिल पर रक्खी रहती थी। इस तरह से सुरक्षित बाइबिल का एक वाक्य भी पढ़ लेना मानो हवड़े के स्टेशन पर थर्ड क्लास का टिकट खरीदना था।

† एक ग्रंथकार यों लिखता है:

"I have in my youth seen an ungerman German Bible without doubt translated from the Latin: it was dark and obscure. For at that time learned men set almost no store by the Bible. My father had a German book of homilus (Postille) in which besides the Sunday's Gospels some passages of the Old Testament were expounded; out of it I have often read to him with pleasure. "How gladly," said my father "should I see a complete German Bible."

दूसरा परिच्छेद

मार्टिन लूथर का संन्यासी होना

लूथर एकबार अपने माता पिता को देखने मैसफील्ड गये। कुछ लोगों का कहना है कि इस पितृ दर्शन का वास्तविक कारण यह था कि एरफर्ट में एक प्रकार की महामारी ने आकर अपना अड्डा जमाया था। मार्टिन लूथर एरफर्ट को लौट रहे थे कि बीच ही में स्टाट रहीम ग्राम के पास इन्हें एक घोर विपत्ति का सामना करना पड़ा। बड़ी भयंकर आंधी ने उठ कर अंधेरा कर दिया इंद्रदेव एक गरीब पथिक के प्राण लेने को यहां तक उतारू होगये कि जल वृष्टि के साथ ही साथ पाषाण वृष्टि भी करने लगे। निकट कोई शरण योग्य स्थान न था। मृत्यु मुंह बाये सामने खड़ी थी। पुराने जीवनी लेखकों का कथन है कि इसी समय बिजली गिरी और लूथर के निकट ही उसका नवयुवक मित्र अलकसियस इंद्रबज्र का आखेट हुआ। लूथर स्वयं घोड़े से गिर पड़ा। परन्तु आधुनिक ग्रंथकार अलकसियस की मृत्यु की घटना असत्य मानते हैं। जो कुछ भी हो सत्य यह है कि मार्टिन लूथर के प्राण ऐसे संकट में फंस गये थे कि उन्हें जीवित एरफर्ट लौटने की आशा न रही थी। इसी घबड़ाहट में मार्टिन लूथर कह उठे "पवित्र एन! बचाओ बचाओ यदि आज बचा तो संन्यासी हो जाऊंगा"।

मार्टिन लूथर के प्राण बच गये। ये सकुशल एरफर्ट पहुंचे।

इन्हें स्वस्थ होते ही अपनी प्रतिज्ञा का स्मरण आया। स्मरण आते ही इन्हें अपनी प्रतिज्ञा पर बड़ा पश्चात्ताप हुआ क्योंकि लूथर जानते थे कि उनके माता पिता को इस प्रतिज्ञा के पूरी करने से बड़ा कष्ट होगा। एक ओर तो निराशामय और अश्रु-पूर्ण पिता का मुख और दूसरी ओर ईश्वर के सम्मुख की हुई प्रतिज्ञा दोनों का ध्यान आते ही लूथर की भी 'भई गति सांप छछूंदर केरी'। अंत में लूथर ने निश्चय कर लिया कि प्रतिज्ञा निवाहनी होगी।

एक पक्ष (पखवारे) तक हृदय से युद्ध कर लूथर ने अपना प्रण निवाहने का दृढ़ संकल्प कर लिया। अन्त में लूथर ने अपने सब प्यारे मित्रों का निमंत्रण किया। संगीत जो लूथर को इतना प्रिय था आज अन्तिमबार मित्रों के साथ खेला गया। लूथर ने सब को अभिवादन कर उन से विदा ली। लूथरके सब मित्र उसे आगस्टाइन मठ तक पहुंचाने गये। अंतमें लूथर ने यह कहकर उन से बिदा ली, मित्रो ! आज आप लोग मुझे देखते हैं फिर कभी न देखियेगा"। ये सब निरुत्तर खड़े रोते रहे आगे चलकर लूथर कहते हैं "मुझे कभी आशा न थी कि मठ मैं कभी त्यागूंगा। संसार के लिये वास्तव में मैं मृत हो चुका था। परन्तु ईश्वर की इच्छा थी, टटेज़ेल और उसके इन्डल-जेन्सों* (Indulgence) ने मुझे खदेर निकाला"।

जब यह समाचार हैंस लूथर को मिला तो उसके क्रोध और दुःख का ठिकाना न रहा। जब से लूथर एम० ए० पास हुआ था तब से उसका पिता उसे 'तुम' कहके संबोधन

* इन्डल जेन्सों का प्रकरण अन्यत्र

करता था। परन्तु इस समाचार को पाते ही उसने फिर वही पुरानी परिपाटी 'तू' द्वारा संबोधन करना प्रारम्भ किया मानों हैंस लूथर ने मार्टिन लूथर को ऐसी मूर्खता करते देख उचित समझा कि लूथर का एम० ए० का प्रमाण पत्र छीन लिया जाय। हैंस लूथर का यह क्रोध फिर तबही शांत हुआ जब उसने महन्त लूथर को 'सुधारक' लूथर में परिवर्तित पाया।

आगस्टियन मठ लूथर जिसके महन्त हुए थे, अपनी प्रथा के अनुसार किसी संपत्ति का प्रभु नहीं हो सकता था। इङ्गलिस्तान में 'मार्टमेन' कानून के अनुसार किसी मठ को स्थावर संपत्ति का अधिकारी होने का अधिकार न था। ये महन्त घोर दरिद्रता में अपना जीवन व्यतीत करने का आदर्श रखने वाले थे। लूथर को अभी वर्ष डेढ़ वर्ष तक अपनी दृढ़ता की परीक्षा देना पड़ी। हैंस लूथर को दृढ़ आशा थी कि लूथर इस परीक्षा से घबड़ा कर लौट आवेगा। लूथर को मठ का नीच से नीच कार्य करना पड़ता था और शहर भर में जाकर भिक्षा मांगनी पड़ती थी। लूथर भी घोर से घोर तप करने लगा। वह निराहार रहता, दिन भर प्रार्थना किया करता, पत्थर की शिलाओं पर सोता, सदा अपने को पापी स्वीकार करता था और अनेक अनेक प्रकार की यंत्रणाओं से अपना शरीर* सुखाया करता था। लूथर को इतने से भी संतोष न हुआ। अब वह केवल बाल की बीनी कमीच पहिनते और घंटों अपने शरीर

* शरीर आत्मोन्नति का बाधक है अतः शरीर सुखा डालना आत्मोन्नति की प्रथम सीढ़ी है इन विचारों ने माध्यमिक काल के ईसाइयों को बेतरह सता रक्खा था।

की सोटों से पूजा किया करते थे। लूथर के अन्य सहवासी समझते थे कि वास्तव में बहुत दिनों के बाद एक सच्चा महन्त उनके मठ में आगया है।

लूथर की परीक्षा अवधि समाप्त हुई। दीक्षा का दिन आया। हैंस लूथर को मार्टिन लूथर की दीक्षा के दिन निमंत्रण गया। हैंस किसी प्रकार भी उस उत्सव में सम्मिलित होना स्वीकार न करता था परन्तु मित्रों के बहुत अनुनय विनय करने पर किसी प्रकार राजी हुआ। दीक्षा वाले दिन २० घोड़सवारों सहित हैंस लूथर मठ को पहुंचा और मार्टिन लूथर को बहुत से रुपये उपहार स्वरूप में दिये। लूथर अपने पिता को इस प्रकार प्रसन्न देख बड़े प्रसन्न हुए और भोज के समय सब के समक्ष अपने पिता से पूछने लगे कि भगवन्! आपने इसके पूर्व हमारे महन्त होने में इतने विघ्न क्यों डाले थे?" अब तो पिता से न रहा गया। उसने तुरंत पूछा "क्यों! विद्वानो! क्या आपने धर्मग्रथों में यह नहीं पढ़ा कि पुत्र को अपने माता पिता की आज्ञा माननी चाहिये"। महन्तों को कोई उत्तर न सूझा। सब एक स्वर हो कह उठे "ईश्वर की इच्छा ऐसी ही थी ईश्वर की आज्ञा यही है"। हैंस लूथरः—"परम् पिता कहीं ऐसा न हो कि यह शैतान का बहकावा हो"।

इसके बाद १५०८ में लूथर को विटेनवर्ग के विश्वविद्यालय में एक आचार्य का पद मिल गया। विटेनवर्ग का विश्वविद्यालय सैक्सनी के राजा फ्रेडरिक 'बुद्धिमान' ने १५०२ में स्थापित किया था! इस समय तक लूथर कहता है कि "मैं पक्का यहां तक कि पागल* पोप भक्त था। मैं अभी तक पोप

* पोप के इतिहास के लिये तीसरा प्रकरण देखो

मंत्रों से ऐसा मुग्ध था कि यदि कोई तनिक भी उनकी (पोप मन्त्रों की) सत्यता में संदेह करता तो मरने मारने को उतारू हो जाता" । फ्रेडरिक इलेक्टर * भी सच्चा रोमन कैथलिक था और उसे यह स्वप्न में भी विचार न था कि यही विश्वविद्यालय पोप लीला को भस्म करेगा; यहीं उस कुल्हाड़ी पर शान रक्खी जायगी जो पोप वृक्ष को काट गिरायेगी । परन्तु यह सदा का नियम है कि मनुष्य सोचता कुछ और है परमात्मा करता कुछ और है ।

सन् १५११ ई० में अगस्टाइन मठ को पोप के पास अपने दो प्रतिनिधि भेजने की आवश्यकता हुई । मार्टिन लूथर और जानवान मिचलिन इस कार्य के लिये चुने गये । दोनों मनुष्य "पवित्र नगर" रोम की ओर चल पड़े । उन दिनों न रेल थी न तार । सड़कें एक तो बहुत कम थीं और जो थीं वे भी ऐसी टूटी फूटी कि उस पर चलनेवाले सदा अपने अंग भंग भय से कंपित रहते थे । बैलगाड़ी घोड़ागाड़ी निश्चय चलते थे परन्तु उनका किराया सामान्य स्थिति के मनुष्य के लिये देना असंभव था । इन दोनों गरीब महंतों को अपने पैरों का भरोसा कर पैदल ही चलना पड़ा । ये लोग दिन भर चलते संध्या को किसी गरीब किसान के झोंपड़े या ग्राम-गिरजे में आश्रय लेते और इन्हीं लोगों का आतिथ्य स्वीकार करते । मार्ग के कठिन कष्टों को सहन करते हुए ये लोग मिलन नगर पहुंचे । मिलन के गिरजे में इन्हें पूजा करने का अधिकार न मिला

* इलेक्टर का प्रकरण अन्यत्र मिलेगा

क्योंकि ये अंब्रोसियन* संप्रदाय के न थे। लूथर को मिलन आकर यह प्रथम बार मालूम हुआ कि ईसाई धर्म ऊपरही से देखने को एक है, भीतर ही भीतर इसके अनेकों टुकड़े होते जाते हैं। अंत में छः सप्ताह के बराबर परिश्रम के बाद 'पवित्र नगर' की उच्च अट्टालिकायें दिखाई पड़ने लगीं, गिरजों की चोटियां दृष्टिगोचर होने लगीं। भक्ति पूर्ण लूथर इस दृश्य को देखते ही घुटने टेक पृथ्वी पर बैठ गया और "पवित्र नगर" को बारम्बार प्रणाम करने लगा।

* हिन्दुओं की तरह ईसाइयों में भी अनेक मतमतान्तर और संप्रदायें है। मुसलमान धर्म भी इस रोग से नहीं बचा है।

तृतीय परिच्छेद

पोपों की महिमा

लूथर की जीवनी का महत्व समझने के लिये, उसके कार्य की गुरुता का ज्ञान प्राप्त करने के लिये हमें थोड़ा सा ज्ञान उसके समय की धार्मिक तथा राजनैतिक स्थिति का भी होना चाहिये। हर एक सुधार जो पुराने समय में हुए हैं, वे व्यर्थ से प्रतीत होते हैं यदि हम उन्हें उनके समय की आवश्यकताओं के अनुसार न देखकर अपने समय की आवश्यकताओं के अनुसार देखें। हर एक वस्तु को समझने के लिये यह परमावश्यक है कि हम उन कारणों को समझें जो उस वस्तु की उत्पत्ति के पूर्व विद्यमान थे और जिन कारणों से वह वस्तु कार्य स्वरूप में उत्पन्न हुई है।

हम इस प्रकरण में अति संक्षेपतः यह दिखाने का उद्योग करेंगे कि पोपों की उत्पत्ति किस प्रकार हुई, किस प्रकार इन्होंने अपना प्रभाव धीरे २ बढ़ाया और अंत को किस प्रकार इनके अत्याचारों के कारण इनका पतन आरंभ होगया। लूथर और लूथर जनित प्रोटेस्टेंट धर्म वास्तव में उन सब कारणों का मुखिया है जिनके द्वारा पोपलीला इस संसार से उठगई। लूथर का पोप लीला से इतना घनिष्ट संबन्ध है कि पोप लीलाका वर्णन किये बिना लूथर की जीवनी समाप्त करना मानो रावण का नाम लिये बिना ही रामायण लिखना है। यही कारण है कि लूथर को प्रणाम करते छोड़ हमे थोड़ी देर के लिये

अपना ध्यान दूसरी ओर खींचना पड़ता है।

रोमन कैथालिकों का कथन है कि ईसामसीह ने स्वयम् अपने पीटर नामक शिष्य को अपने सब शिष्यों में श्रेष्ठ माना। पीटर ही में ईसाने धार्मिक विश्वास अधिक पाया पीटर ही में आत्मोन्नति अधिक पाई। पीटर सब शिष्यों में श्रेष्ठ था अतः पीटर द्वारा स्थापित गिरजा भी सब गिरजों में मुख्य है। ईसा मसीह की मृत्योपरान्त पीटर रोम नगर गया और वहां उसने एक गिरजा स्थापित किया। इस गिरजे की मुख्य महन्ती पीटर स्वयम् २५ वर्ष तक करता रहा। ६७ ईस्वी में उसे अपने धर्मार्थ प्राण त्यागने पड़े। पीटर के बाद अन्य महन्त उसके गिरजे के महन्त होते गये। इन सब महन्तों को अपने धार्मिक विश्वास के लिये बड़े बड़े कष्ट उठाने पड़े और बहुधा यहां तक नौबत आती थी कि पीटर की तरह इनको भी अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ता था। रोमन लोगों के पुराने धर्म और ईसाई धर्म के बीच ५०० वर्ष तक घोर युद्ध होता रहा। इस धर्म-युद्ध में लाखों मनुष्यों के व्यर्थ प्राण गये। ईसाई धर्म की जीत हुई और पूर्वीय रोम का सम्राट् कांस्टेंटाइन स्वयम् ईसाई होगया। यही पहला ईसाई सम्राट् था। इसके बाद से ईसाई धर्म राज-धर्म होगया। पीटर के उत्तराधिकारी पोपों ने इस धर्म-युद्ध *में बड़े २ कष्ट उठाये परन्तु सहिष्णुता धैर्य तथा दया

---

* धर्म-युद्ध से हमारा तात्पर्य वास्तविक युद्ध से नहीं है जैसा ३० वर्ष वाले युद्ध में हुआ था। हमारा तात्पर्य इतना सा है कि ईसाई लोगों की संख्या बराबर बढ़ती और पुराने धर्म के अनुयायियों की संख्या बराबर घटती जाती थी। जिसका बदला ये लोग ईसाइयों को सता कर लेते हैं।

न त्यागी। इन्हीं लोगों के सद्गुणों तथा त्याग का यह फल था कि ईसाई धर्म की जीत हुई। जब ईसाई धर्म राजधर्म हो गया तब पोपों का भी प्रभाव बहुत बढ़ गया और उस समय के पोप इसके सर्वथा योग्य भी थे। पोपों ही के सतत् उद्योग का यह फल है कि सारा योरप आज ईसाई है।

कांस्टेंटाइन ही के समय में रोम साम्राज्य की राजधानी रोमनगर से उठ कर बिजैंटियम् गई। बिजैंटियम् उस समय से सम्राट् कांस्टेंटाइन के नामानुसार कांस्टेंटीनोपुल कहा जाने लगा। राजधानी के उठ कर कांस्टेंटीनोपुल चले जाने से रोम नगर में अंधेरा सा होगया। ऐसी अवस्था में प्राकृतिक था कि रोम में रहने वाले पोपों का प्रभाव प्रजा पर और बढ़े। कांस्टैंटाइन के वंशज दिन २ निःशक्त होते गये अतः इतने बड़े साम्राज्य का संगठित रहना असंभव होगया। जर्मनी की असभ्य जातियां जो सदा से रोम साम्राज्य हड़पने के उद्योग में लगरही थी अब पश्चिमी रोम साम्राज्य को निःशक्त और अकेला पा उस पर टूट पड़ी और इस तरह पूर्वी रोमन साम्राज्य पश्चिमी रोमन साम्राज्य से सदा के लिये प्रथक होगया। पश्चिमी रोमन साम्राज्य, सारा योरप जिसके अंतर्गत था, अब जर्मनी की भिन्न २ जातियों में विभक्त होगया। ये जातियां सर्वदा परस्पर लड़ा करती थीं और एक दूसरे का नाश किया करती थीं।

यद्यपि रोमन साम्राज्य नष्ट हुआ परन्तु ईसाई धर्म की जीत हुई। जर्मनी की सब असभ्य जातियों ने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया। १२ वीं सदी तक सारा योरप ईसाई होगया। ये सब नव शिष्य पोप ही एक ऐसा व्यक्ति था

जिसका सम्मान करते थे। इस तरह पोप एक प्रकार से सारे योरप के मान्य होगये। इस ही बीच में ईसाई संसार में एक बड़ा विवाद खड़ा होगया। कुछ लोगों ने कहा ईश्वर और ईसामसीह में कुछ भेदही नहीं है कुछों ने कहा कि ईश्वर और ईसा में भेद है। फल यह हुआ कि सारा ईसाई संसार दो भागों में विभक्त होगया — (१) रोमन चर्च (२) और ग्रीक चर्च। पोप के अनुयायी रोमन चर्च वाले या रोमन कैथलिक कहे जाने लगे। इस धर्म विभाग का फल भी यही हुआ कि पोप लोग धार्मिक विषय में भी सर्वोपरि और स्वतंत्र हो गये। यहाँ तक तो पोप पद की उन्नति प्राकृतिक घटनाओं वश हुई जिसमें पोपों का कुछ भी वश न था परंतु अब पोपों को अपनी उन्नति करने की चाट पड़ गई।

आठवीं सदी में (charlemagne) शार्लमेन नामक एक बड़ा वीर राजा योरप में हुआ। इसने सब छोटी २ परंतु परस्पर लड़ने वाली जातियों को वश में कर एक महान साम्राज्य स्थापित किया। इस ही बीच में (सन् ८०० में) पोप लियो तृतीय को, उसके शत्रुओं ने, जब पोप बड़ी धूमधाम से रोम नगर में होकर जा रहा था, घोड़े से उतार कर पृथ्वी पर पटक दिया और आंख निकाल कर जीभ काट लेना चाहा। रुधिर से लथ पथ पोप पास के मठ में पहुंचाया गया। शार्लमेन ने जब ये बात सुनी तो बड़ा क्रोधित हुआ और तुरंत इटली को चल पड़ा। इटली पहुंच कर उसने अपने धर्म गुरु के शत्रुओं की खूब खबर ली। ईश्वर की कृपा वश पोप भी अच्छा हो गया और उसने शार्लमेन का अपने हाथ से राज्याभिषेक कर उसे सारे योरप का सम्राट् बनाया और उसके

साम्राज्य को पवित्र रोमन साम्राज्य के नाम से विभूषित किया। योरप के इतिहास पर इस घटना का बड़ा प्रभाव पड़ा है। इस घटना के बाद से पोप की पदवी साम्राट् से भी ऊंची मानी जाने लगी और पोपों का यह अधिकार हुआ कि भविष्य में जिसे वे अपने हाथों राज्याभिषिक्त करें वही वास्तविक जर्मन सम्राट है।

पोपों ने अपने इस अधिकार को धर्म शास्त्र सम्मत् बनाने का उद्योग करना प्रारंभ किया। बाइबिल में लिखा है कि ईसा ने एक बार कहा कि "जिसके पास असि न हो उसे चाहिये कपड़े बेचकर असि क्रय करे" तब शिष्य ने कहा "भगवन्! यहां तो दो असि हैं" ईसा ने उत्तर दिया "बस ये पर्याप्त हैं"। इन बाइबिल वाक्यों का यह अर्थ किया गया कि "भगवान् ईसामसीह ने अपने गिरजेको अतः उस गिरजे के नायक पोप को, दो प्रकार की असि दीहै (१) धार्मिक (२) सांसारिक। धार्मिक असि के प्रभाव से पोप समस्त ईसाई संसार का धार्मिक विषय मे सर्वोपरि गुरु हुआ। सांसारिक असि के प्रभाव द्वारा पोप समस्त ईसाई संसार का सम्राट हुआ। अतः सब भौतिक सम्राट पोप से नीचे हैं और पोप सम्राटों का सम्राट है। पोप ऐसे धार्मिक व्यक्ति के लिये यह अनुचित जान पड़ता है कि वह सांसारिक विषयों में लिप्त हो अतः पोप ने अपनी प्रसन्नता पूर्वक अपना सांसारिक अधिकार संसार के सम्राटों को सौंप दिया है जो पोप के प्रतिनिधिवत् संसार का राज्यकार्य चलाते हैं। अतः पोप को पूर्ण अधिकार है कि जब चाहे वह जिस सम्राट् को राज्यच्युत कर दें और जब चाहें जिसे किसी देश का सम्राट् बना दें क्योंकि पोप ही

एक मात्र प्रभु ईसामसीह का प्रतिनिधि है"।

उपरोक्त सिद्धान्त निरा पुस्तकस्थ सिद्धान्त मात्र न था। जैसा आगे चल कर दिखाने का उद्योग किया जायगा पोप सदा इस सिद्धान्त के कार्यपरिणत होने के उद्योग में लगे रहते थे और बहुत कुछ सफल मनोरथ भी होगये थे कि इतने में लूथर महाशय रणांगन में कूद पड़े और पोपों के पैर फिसल गये।

हमने ऊपर संक्षेपतः यह दिखाने का उद्योग किया है कि किस प्रकार पोप पद धीरे २ ईसाई संसार में सर्व मान्य होता गया। अब आगे चल कर हम यह दिखावेंगे कि सांसारिक वैभव और शक्ति का मदिरा पीकर पोप किस प्रकार उन्मत्त हो उठे और किस प्रकार उन्होंने योरप की भिन्न २ जातियों के स्वतन्त्र सम्राटों को अपनी आज्ञा मानने के लिये अपमानित करना प्रारम्भ किया।

जर्मनी के सम्राट् हेनरी चतुर्थ और उनके कुछ सामन्तों में मत भेद हुआ। सामन्तों ने पोप के पास अपील की कि आप हमारी रक्षा कीजिये। उस समय पोप था ग्रेगरी सप्तम्। उस का अभिमान पोप होने के कारण आकाश चूमता था। कोई सम्राट् क्यों नहो, होगा अपने देश का सम्राट् होगा, पोप के आगे तो उसका कोई मूल्य है नहीं। उसने तुरन्त हेनरी चतुर्थ के नाम सम्मन भेज दिया कि आप रोम आइये आप और आपके सामन्तों के बीच हम न्याय करेंगे। हेनरी चतुर्थ इस सम्मन को पा हंसने लगा और उसने कहा कि एक दिन वो था कि जब हमारे पूर्वज शार्लमेन ने पोप और उसके शत्रुओं का न्याय किया था आज पोप का यह घमंड है कि वह उस ही शार्लमेन के

उत्तराधिकारी सम्राट् के बागी सामन्तों का पक्ष ले उसे रोम बुलाता है। हेनरी इस समय २५ वर्ष का था। उसने आगा पीछा कुछ न सोचकर पोप ग्रेगरी को पदच्युत करने की आज्ञा निकालदी। पोप ग्रेगरी ने इसके उत्तर में हेनरी को ईसाई धर्म से वहिष्कृत कर दियाः—अर्थात् हेनरी नास्तिक माना गया और प्रत्येक सच्चे ईसाई को आज्ञा दी गई कि वह हेनरी से कोई सम्बन्ध न रक्खे, हेनरी के विरूद्ध राज्यविरोध कोई पाप नहीं है, हेनरी के साथ की गई प्रतिज्ञा तोड़ने में कोई पाप नहीं है। और जो कोई हेनरी का साथ देगा उसे नर्क होगा हेनरी ने जब यह आज्ञा सुनी तो वह हंसने लगा। हेनरी बिलकुल न समझ सका कि पोप की यह विचित्र आज्ञा किस प्रकार पूरी की जायगी। परन्तु शीघ्रही उसकी हंसी दुखाश्रु में बदल गई। उसे शीघ्र पता लग गया कि पोप के पदच्युत करने की उसकी आज्ञा मौखिक मात्र थी परन्तु पोप की वहिष्कार आज्ञा रामबाण की तरह अमोघ थी।

हेनरी चतुर्थ दूसरे दिन सोकर उठा तो देखता क्या है कि सारा महल खाली पड़ा है। रातो रात सब दास दासी भाग गये हैं। उसकी सदा की अपमानित स्त्री वर्था को छोड़* सबही सेवक अनुचर, सूर, सामन्त, भाग गये हैं। बाहर आते ही उस को खबर मिली कि उसके सब सूरसामन्तों ने मिलकर उसके बहनोई को राजा बनाना निश्चित किया है। अब हेनरी की आंखों तले अंधेरा आगया। उसे केवल एकही राह दिखाई

* क्योंकि यदि बहिष्कृत राजा का कोई स्पर्श करेगा तो उसे घोर नर्क में पड़ना होगा यह सब प्रजा का दृढ़ विश्वास था।

पड़ी वह यह कि वह तुरन्त इटली जाकर पोप से क्षमा मांगे, और बहिष्कार की आज्ञा रद्द करावे। १०७६ ईसवी का जाड़ा और सालों से घोरतर था। राइन नदी जम चुकी थी। ऐसे घोर समय में हेनरी, अपनी स्त्री बर्था अपने नवजात शिशु तथा एक सिपाही सहित इटली के लिये चल पड़ा। अपूर्व दृश्य था। मानो किसी विकट जादूगर ने अपने एकही मंत्र से हेनरी की सारी सेना नाश कर दी हो।

पोप ग्रेगरी उस समय एक पहाड़ी किले कनोसा में था। हेनरी को प्रथम दिवस पोप के दर्शन न प्राप्त हुए। सारे दिवस भूखा नंगा सम्राट् किले के बाहर बर्फ में खड़ा २ पश्चात्ताप करता रहा परन्तु पोप को दया न आई। दूसरे दिन शार्लमेन के वंशधर को फिर उसी प्रकार पश्चात्ताप करना पड़ा तब भी पोप ग्रेगरी की ईर्षा न कम हुई। तीसरे दिन हेनरी को पोप दर्शन हुए। जैसे कोई गुरु अपने एक तुच्छ शिष्य को अवहेलना के साथ क्षमा कर दे उसही प्रकार जर्मनी का सम्राट् पोप द्वारा क्षमा प्रदान किया गया। क्या एक यही उदाहरण पोप की क्षमता का यथेष्ट प्रमाण नहीं है।

पोप की क्षमता का दूसरा उदाहरण इस प्रकार है। १२१५ में फ्रेडरिक जर्मनी का सम्राट् हुआ। फ्रेडरिक ने पिल्स, इटली और लंबार्डी का भी सम्राट् था। इस समय पोप के पद पर था ग्रेगरी नवम्। उसे फ्रेडरिक की वीरता तथा बढ़ते हुए प्रताप से बड़ा भय लग रहा था। पोपों ने अपना यह एक सिद्धान्त निश्चित कर लिया था कि हम जर्मनी के सम्राटों की शक्ति न बढ़ने देंगे। अतः पोप लोग सदा किसी न किसी बड़े सामन्त को सम्राट् के विरुद्ध उभाड़ा करते थे। और इस तरह अपनी

प्रजा का दमन करने ही में जर्मन सम्राट् की शक्ति नाश हुआ करती थी। पोप ने फ्रेडरिक को*क्रूसेड नामक युद्ध पर जाने को विवश किया। पोप की आज्ञा कब लांघी जा सकती थी। फ्रेडरिक को विवश हो क्रूसेड के लिये तय्यार होना पड़ा। परन्तु बीचही में फ्रेडरिक बीमार पड़ गया। क्रूसेड में देर होते ही, पोप के क्रोध का कुछ ठिकाना न रहा। उसने तुरंत फ्रेडरिक को बहिष्कृत कर दिया। फ्रेडरिक ने तीन बड़े पादड़ी पोप के पास यह विश्वास दिलाने को भेजा कि मैं वास्तव में बीमार हूं। परन्तु पोप ने जिसकी हार्दिक इच्छा सम्राट् को नीचा दिखाना मात्र थी, इन पहाड़ियों से मिलना अस्वीकार किया। यह घटना सन् १२२७ की है।

पोपों की यह क्षमता जर्मनी तक परिमित न थी। समस्त ईसाई योरप के सम्राट् पोपों के आगे मस्तक झुकाते थे। इङ्गलैन्ड के राजा हेनरी द्वितीय को †टामस बेकेट की समाधि के

* १२ और १३ वीं सदी में ईसाई योरप को जेरुसलम नामक स्थान तुरकों से छीन लेने की बड़ी इच्छा हुई। सात बार योरप ने एशिया पर चढ़ाई की परन्तु तुर्क सदा विजयी हुए और ईसाई जेरुसलम न ले पाये। इन्हीं युद्धों को क्रूसेड कहते हैं।

† पादड़ी लोगों का विचार समान न्यायालय नहीं कर सकते थे। यदि एक घर गृहस्थ किसी की स्त्री को भगा ले जाय, व्यभिचार करे या किसी की हत्या करे तो राजा द्वारा स्थापित न्यायालय से उसे दंड मिलता था और निष्पक्ष न्यायवश पूरा दंड मिलता था। परन्तु यदि येही उपरोक्त पाप किसी पादड़ी या महन्त से बन पड़े तो उसका न्याय अन्य पादड़ी तथा महन्तों की सभा द्वारा होता था। पादड़ियों की सभा ने यदि बहुत कड़ा दंड दिया तो कहा इसको एक सप्ताह तक पश्चाताप करना पड़ेगा अथवा एक महीना तक बंद

सामने घुटने टेक कर पश्चाताप करना पड़ा था जब कि खुली पीठ पर पादड़ी लोग धड़ाधड़ चाबुक लगा रहे थे। इसही तरह इङ्गलेन्ड के राजा जान ने पोप के भेजे हुए पादड़ी को अपने यहाँ (Archbishop) सब से बड़ा पादड़ी बनाना अस्वीकार किया। पोप का कोई राजा कहा न माने! पोप ने अपना ब्रह्मास्त्र चला दिया। जान को वहिष्कृत कर दिया और फ्रांस के राजा को आज्ञा दी कि वह जान को सिंहासन से उतार कर स्वयम् इंगलैंड का राजा बन जाय। फ्रांस के राजा फिलिप द्वितीय इंगलैंड जीतने चल पड़े। इधर अंगरेज 'वहिष्कृत' राजा जान का मुख देखने से भी घृणा करने लगे कि कहीं नर्क न जाना पड़े। विचारा जान तुरंत पोप के प्रतिनिधि के पास

कोठरी में बैठकर ईश्वर के सामने पाप स्वीकार कर उससे क्षमा मांगनी पड़ेगी। [यही नहीं वरन् पाप के भंडा फोड़ होने के पहिले ही यदि पापी पादड़ियों के मठ में सम्मिलित हो जाय तो भी वह बच जाता था और राज कर्मचारी खिसिया के रह जाते थे—(सम्पादक)

ऐसे घोर पापों का ऐसा सीधा दंड मिलने के कारण पादड़ी तथा महन्तों में पाप करने की प्रवृत्ति दिन २ बढ़ती जाती थी। हेनरी द्वितीय ने इस प्रथा के विरुद्ध पादड़ी तथा महन्तों को भी राज न्यायालय द्वारा दंडित होने की आज्ञा निकली। पादड़ियों ने टामस वेकेट की नायकता में इसका घोर विरोध किया। एक दिन हेनरी टामस वेकेट की उद्दंडता पर बड़ा क्रोधित हुआ और चिल्ला २ कर कहने लगा कि "इस दुष्ट पादड़ी से हमारा कौन पिंड छुड़ावेगा।" दो सिपाहियों ने उसे यह कहते सुन लिया और तुरन्त जाकर टामस वेकेट का बध कर डाला। पादड़ी जो अपने को पोप ही के नीचे मानते थे और राजा को कुछ न गिनते थे बिगड़ खड़े हुए। धर्मान्ध प्रजा ने भी उनका साथ दिया और हेनरी को अपना सिंहासन बचाने के लिये सरे बाज़ार चाबुक खानी पड़ी।

दौड़ा गया। अपना मुकुट उतार कर उसके पैरों पर रख दिया और बोला आज से हम पोप ही द्वारा प्राप्त मुकुट पहिनेंगे, पोपकी सब आज्ञायें बिना हिचकिचाये मानेंगे और प्रतिवर्ष बहुत सा धन रोम को उपहार स्वरूप भेजा करेंगे। जब पोप ने इस तरह राजा का घमंड चूर कर लिया तब उसे क्षमा प्रदान की।

पोप की सर्व श्रेष्ठ क्षमता के उपरोक्त कारणों के अतिरिक्त प्रत्येक योरोपीय देशों में बहुत बड़े २ पादड़ी संघों तथा महन्तों के मठों का होना भी एक प्रधान कारण था। ये पादड़ी संगत और महन्तों के मठ सदा यही सिखाया करते थे कि पोप राजा से भी श्रेष्ठ है। वह ईश्वर का प्रतिनिध है। उस समय में पादड़ी ही लोग अधिकतर पढ़े लिखे होते थे—अतः राज्य भर में ये लोग बहुत बड़े २ पदों के अधिकारी होते थे। यद्यपि नौकरी तो ये राजा की करते थे परंतु मानते सब से बड़ा पोप को थे। ये लोग सदा पोप की महिमा बढ़ाने के उद्योग में लगे रहते थे क्योंकि पोप पदोन्नति के साथ ही साथ पादड़ी समुदाय का भी दबदबा बढ़ता जाता था। पोप भी सदा इन पादड़ियों की रक्षा तथा उन्नति का ध्यान रखता था। पादड़ियों के झगड़ों की अपील रोम जाती थी, पादड़ियों की नियुक्ति का अधिकार पोप अपने हांथों में ले लिया चाहते थे और बहुत कुछ ले चुके थे।

पोप का पद पैतृक न होकर वरन् चुनाव पर निर्भर था। कुछ परिमित संख्या के कारडिनलों द्वारा पोप चुना जाता था। अतः योरप का प्रत्येक चालाक तथा उच्चाभिलाषी पुरुष एक दिन पोप होने की आशा कर सकता था। केवल उसे पादड़ी

का वेश बनाने की आवश्यकता थी फिर क्या था बिना असि लुए ही भाग्यशाली मनुष्य उस पद को पहुँच सकता था जिसके पद पर सम्राटों के मुकुट लोटा करते थे। हाँ उस पद को पहुंचने के लिये धूर्तता, चालाकी, घूस खोरी आदि गुणों की बड़ी आवश्यकता थी। कहने को तो पोपों का पद साधुओं का पद था परंतु पोप वास्तव में कभी साधु न होते थे। उनके धन वैभव तथा सौख्य सामग्री की तुलना कोई सम्राट् न कर सकता था। उनका वस्त्र, उनका भोजन, उनकी रहन सहन विधि सब सम्राटों को मात करती थीं। सिद्धान्तानुसार वे विवाह नहीं कर सकते थे परंतु वास्तव में वे अपने को किसी सांसारिक सुख से वंचित नहीं रखते थे।

चतुर्थ परिच्छेद

पोपों के दुराचार

पूर्व के प्रकरण से कई बातें स्पष्ट होती हैः—(१) पोपों का ईसाई संसार में बड़ा दबदबा था, कोई उनका सामना न कर सकता (२) पोप अपनी शक्ति के घमंड वश राजाओं का बड़ा अपमान करते थे (३) पोप अधिकतर राजनैतिक विषय में फंसे रहते थे, धार्मिक विषय की ओर तनिक ध्यान न देते थे। परंतु इतना ही मात्र न था। इस प्रकरण में यह दिखाने का उद्योग किया जायगा कि पोप कैसे चरित्र भ्रष्ट और पापी होते थे।

पोपों की पाप लीला की चर्चा घर घर होती थी। कभी किसी को पोपों से किसी प्रकार की भलाई की आशा न थी। पोपों से एक मात्र इन्द्रिय परायणता तथा स्वार्थपरता ही की आशा की जा सकती थी। यदि हम पोपों के पद की पवित्रता की ओर ध्यान कर तब उनके कृत्यों की ओर दृष्टि फेरते हैं तो दोनों में इतना विपर्यय, इतना अंतर दिखाई पड़ता है कि हृदय कांप उठता है। सेंक्स्टस चतुर्थ, इन्नूसेन्ट अष्टम, अलेक्जेंडर षष्ठ, जुलियस द्वितीय, लियो दशम्, क्लिमेन्ट सप्तम उन पोपों के नाम है जिनसा पापी अपनी उपमा नहीं रखता है। एक जनरव है कि एक यहूदी एक बार रोम नगर को गया। वहां उसने इतना पाप देखा कि वह तुरन्त ईसाई हो गया। पूछने पर उसने बताया कि ईसाई धर्म पर निश्चय ईश्वर की विशेष कृपा दृष्टि है अन्यथा यह कभी संभव नहीं है

कि जिस धर्म में इतना पाप हो वह धर्म एक क्षण भी जीवित रह सके।

उपरोक्त वाक्यों की सत्यता का प्रमाण केवल एक अलेक्जेंडर षष्ठ की जीवनी ही से चल सकता है। इस पोप के एक पुत्र था सीज़र बारज़िया और एक लड़की थी लूक्रेशिया इन दोनों के पापमय चरित्र के ऊपर माध्यमिक काल में न जाने कितनी आख्यायिकायें लिखी गई हैं। गुइजों अपने फ्रांस के इतिहास में लिखते हैं कि अलेक्जेंडर षष्ठ के महापापी होने का एक यही प्रमाण पर्याप्त है कि उसके एक सीज़र बारजिया नाम का पुत्र था ?

अलेक्जेंडर षष्ठ एक वकील पेशे का मनुष्य था। यह जब प्रथम बार रोम आया तो वह एक वेश्या रोज़ा बनोज़ा के साथ रहता था। इसका चचा उस समय पोप था। उसने इसे आशा दिलाई कि हमारे बाद तुम्हें यह पद मिल सकता है। बस अलेक्जेंडर ने तुरंत दिखावे के लिये अपनी वेश्या का संसर्ग त्याग दिया और पादड़ी होगया। उसही वेश्या के पेट से इसके एक लड़का और एक लड़की हुई जिनके नाम ऊपर दिये जा चुके हैं। अपने चचा के मरने के उपरान्त इसे पोप का पद मिला। इस पोप का पद प्राप्त करने के लिये क्या २ दुराचार किये गये यह सब लिखना असम्भव है। बारजिया कुल अपनी उन्नति के कंटकों को गुप्त विष और गुप्त हत्याओं द्वारा ही दूर किया करता था। अलेक्जेंडर षष्ठ अपने लकड़ों तथा कुल वालों को इटली के राज्य * दिलवाने के लिये किसी

* उस समय इटली बहुत छोटे २ राज्यों में विभक्त था।

अमानुषिक पाप से न हिचकिचाता था। पोप के सिकरेटरी की हत्या करने के लिये उसके पुत्र सीजर बारजिया ने उसे दौड़ाया। वह हत भाग्य पोप की शरण में भागा। सीजर बार-जिया ने वहीं जाकर उसकी हत्या की यहां तक कि उस गरीब के रुधिर से धर्म पिता धर्म गुरु अलेक्जेंडर पोप के पवित्र कपड़े बिलकुल भीज गये। सीज़र को अपने बड़े भाई का हिस्सा हड़पने की इच्छा हुई। इच्छा की देरी थी कि गांडिया का ड्यूक (सीजर का बड़ा भाई) संसार से उठा दिया गया। लूक्रेशिया का पति नेपिल्स का राजा था। नेपिल्स का राज्य सीजर की आंखों में चढ़ा था। अतः भाई और बहिन ने मिल-कर अपने बहनोई तथा पति को खुले बाजार १८०० सन् के जुलाई मास में मरवा डाला। सामयिक इतिहास लेखकों का कथन है कि सीज़र और लूक्रेशिया में भाई बहिन होने पर भी पति पत्नी का सा सम्बन्ध था। सीज़र बारजिया छिपे छिपे विष प्रयोग द्वारा अपने शत्रुओं के मारने के लिये अति प्रसिद्ध है। १२ वीं अगस्त को एक भोज दिया गया जिसमें विष द्वारा कई शत्रुओं के प्राण लिये जाने वाले थे। ये विष सीज़र स्वयम्

इसमें कुछ सन्देह नहीं कि सीजर बोरजिया बड़ा दुष्ट और नीच वृत्ति का मनुष्य था परन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से उसके सम्बन्ध में कही हुई अनेक बातें संशय ग्रस्त होने से स्वीकार नहीं की जा सकतीं। उपन्यासकारों तथा पूर्व काल के अन्यान्य लेखकों ने उसके जीवन चरित्र को और भी कलुषित और भयानक बना दिया है। यह भी विचार लेना उचित है कि तत्कालीन इटली की राजनैतिक स्थिति से और सीजर की करतूतों से बहुत कुछ सम्बन्ध है। इटली में ही कुछ ऐसे विद्वान भी थे जो सीज़र को ज्यादा बुरी दृष्टि से नहीं देखते थे। (सम्पादक)

तय्यार करता था और उनके तोड़ भी वही जानता था। धोखे से विष का पियाला बदल गया और अलेक्जेंडर और सीज़र दोनों ने विष पी लिया। दोनों उसी रात को बीमार पड़े। सीज़र तो बच गया परंतु पोप १८ वीं अगस्त को चल बसा। अभी पिता का शरीर ठंढ़ा भी न हुआ था कि सीज़र के भेजे लुटेरों ने आकर पोप का कोष लूट लिया। पोप विष से मरा है यह बात किसी को ज्ञात न हो इस कारण उसका मृत शरीर किसी को दिखाया न गया। परन्तु ईश्वर की इच्छा विचित्र है। पोप की रत्थी के साथ जाने वाले पादड़ियों और सिपाहियों में झगड़ा होगया। रत्थी ले जाने वाले पोप की शव को छोड़ अपने प्राण बचाने में लग गये। पोप का शव खुल गया और योंहीं अकेला वहां पड़ा रहा। उस काले काले अत्यन्त घोर दुर्गंध देते हुए तथा कीड़ा पड़े हुये शव को जिसने देखा उसही को विश्वास होगया कि पोप विष से मरा है। इसके बहुत देर बाद कुछ लोगों ने आकर उस मृत पोप को (गाली दे देकर तथा उस पर थूक थूक कर) एक गड्ढे में एक दरी में लपेट कर फेंक दिया।

यह तो हुई पवित्र नगर और रोम उसके पवित्र धर्म पिता पोप की दशा! अब पोप के सैनिक पादड़ी और महन्त गण भी पोप से कुछ घटकर न थे। सिद्धान्तानुसार तो इन्हें विवाह करना मना था और स्पष्ट रीति से कोई भी किसी स्त्री से विवाह न करता था परन्तु स्त्री सुख से वंचित कोई रहना न चाहता था। फल यह था कि मठों में व्यभिचार अत्यन्त फैल गया था। यह पाप कहां तक फैल गया था इसका प्रमाण उस समय के साहित्य ही से यथेष्ट मिल जाता है। ऐसा मालूम होता

था मानों इन्द्रिय निग्रह करते करते पादड़ी गण उबिया उठे थे अतः अब थोड़े दिनों के लिये इन्द्रियपरायणता ही उन्होंने अपना धर्म मान लिया था। प्रायः महन्त और पादड़ी अपने पास स्त्रियां रखते थे, उससे लड़के होतथे और सब जानते थे कि यह किस के लड़के हैं परन्तु यदि कुछ भेद था तो इतना कि ये स्त्रियां धर्मानुसार व्याही न थी। लूथर कहता है "जिस स्त्री ने पादड़ी के साथ व्यभिचार किया वह धारोधार बह गई फिर उसे कभी पापमुक्त होने की आशा नहीं रहती। पादड़ी की रखैल से बढ़कर बुरी अवस्था में और कोई स्त्री नहीं होती।"

इस पोप लीला से भले मनुष्य नितान्त दुःखी हो उठे थे परन्तु किस की शक्ति थी जो धर्मपिता पोप के विरुद्ध अंगुली उठावे और यदि किसी ने उठाई भी तो उसे नास्तिक की उपाधि सहित जीते जी अग्नि में प्रवेश करना पड़ा।

कान्स्टैंस नामक स्थान में पादड़ियों की एक सभा हुई कारण कि उस समय एक नहीं तीन तीन पोप अपने को पोप कह रहे थे और इस तरह से ईसाई संसार तीन भागों में बँट रहा था। सभा इस लिये की गई थी कि सभा तीनों पोपों को पदच्युत कर एक पोप चुने और इस तरह ईसाई संसार को तीन भागों में बटने से रोके। इस सभा में एक जानहस नामक विद्वान भी आया जो प्रेग के विश्वविद्यालय में आचार्य के पद पर था। हस ने अपनी पुस्तकों द्वारा लोगों को यह बताने का उद्योग किया था कि किस प्रकार पादड़ी संसार पाप में लिप्त है। हस का विचार था कि पादड़ी संसार के सारे पापों की जड़ उसका धन वैभव है। अतः हस के मतानुसार पादड़ियों को धन कदापि न मिलना चाहिये। पादड़ियों से ये

बातें कब सही जा सकतीं थी। उस गरीब को बिना अपने बचाव का मौका दिये ही नास्तिक सिद्ध कर जीते जी ही जलाये जाने की आज्ञा देदी गई और वह जीते जी ही जला दिया गया। यद्यपि हस जला दिया गया परंतु उसका सिखाया सत्य न जलाया जा सका और धीरे २ लोग पोप लीला का भेद जानते गये और जैसे जैसे जानते गये वैसे ही पोप लीला का नाश करने को भी उद्यत होते गये।

जब से पश्चिम में ईसाई धर्म का प्रचार हुआ और विशेष कर १० वीं से १४ वीं सदी तक, रोमन और ग्रीक लोगों की सभ्यता लुप्त प्राय सी हो रही थी। ग्रीक और रोमन विद्वानों और उनके ग्रंथों को पढ़ना एक प्रकार से पाप सा समझा जाता था कारण कि ईसाई धर्म ने उनके हाथ बड़ा कष्ट उठाया था। दूसरे, पुराने ग्रीक और रोमन लोग थे विधर्मी फिर भला यह कब संभव था कि ईसा के भक्त विधर्मी विद्वानों की पुस्तकें पढ़ कर उन्हें अपने से बड़ा मानने पर विवश होते। पादड़ी लोग जिनका सारा वैभव जनता की मूर्खता पर निर्भर था सदा उनके कान उन विधर्मी विद्वानों के विरुद्ध भरा करते थे। *ईसाई धर्म की स्वयम् जो पुस्तकें थी उनमें व्यर्थ के धार्मिक वाद विवाद भरे थे। वैसी पुस्तकों से किसी प्रकार का मानसिक विकाश होना असंभव था। अतः पश्चिम के इतिहास का यह मूर्खतामय काल इतिहासज्ञों द्वारा (Dark

---

*यह सब होने पर भी पादरी लोग ही अधिकांश में इन पुस्तकों की नाश होने से रक्षा करते और पढ़ते थे। (सम्पादक)

ages) "अंधकारमय काल" *के नाम से पुकारा गया है। और यही अंधकारमय काल पोपों की पदोन्नतिका काल है।

इस समय की ईसाई जनता महा मूर्ख और घोर अंध विश्वासी थी। पादड़ी लोग सदा अपना ऐश्वर्य यह बात कह कर सिद्ध किया करते थे कि हमारे पास स्वप्नों में, अकेले में, सदा स्वर्ग दूत आया करते हैं। और सब लोग इसे बिलकुल सत्य मानते थे। ठीक इसके विरुद्ध पादड़ी प्रथा के शत्रुओं के पास (पादड़ी, लोगों को, ऐसा विश्वास दिलाते थे) भूत प्रेत और शैतान आया करते थे। इस बात में भी लोग पूरा विश्वास करते थे। पादड़ियों ने यह जनरव फैला दिया कि लूथर की मां ने स्वीकार किया है कि मेरे पास रात को शैतान आता था और लूथर का गर्भ शैतान ही से रहा है। अतः लूथर शैतान पुत्र है और लूथर की बात मानना मानो शैतान की बात मानना है!

अंत में रात के उपरान्त प्रातःकाल होता ही है। एक ओर छापे की कल के आविष्कार ने पुस्तकों को छाप, विद्या का मार्ग सुगम कर दिया दूसरी ओर कान्स्टैन्टीनोपुल-पतन के कारण भागे हुए ग्रीक विद्वानों ने आकर पश्चिम् में शरण ली और पुरातन ग्रीक और रोमनसभ्यता का लोगों में प्रचार किया। इस काल का नाम इतिहास वेत्ताओं ने 'पुनरुत्थान काल' (Renaissance period) रक्खा है। ग्रीक तथा लैटिन भाषा के ज्ञान, पुराने विद्वानों की पुस्तकों के परिशीलन

* अब आधुनिक ऐतिहासिक निरीक्षण द्वारा इस काल पर बहुत कुछ प्रकाश पड़ चुका है अतः यद्यपि इस काल के साथ उपरोक्त विशेषण का अधिक प्रचार होने से प्रयोग होता है परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। सम्पादक

आदि ने ईसाई जनता के चक्षु खोल दिये। इस ही समय लूथर और केलविन आदि दृढ़ प्रतिज्ञ विद्वानों ने धर्मसुधार का कार्य अपने ऊपर लिया। योरप की जातियों में धीरे २ जातीयता का भाव उत्पन्न होने लगा और उनके लिये यह असह्य हो गया कि उनका राजमुकुट एक विदेशीय पोप के पैरों पर लोटे। धर्म और राजनीति, धर्म और सांसारिक कार्यों का अन्तर ईसाई जातियों को समझ पड़ने लगा। अतः अब पोप के लिये धर्म के नाम पर लूट करना असंभव हो गया। जातीयता के भाव में पग कर उस ही अंगरेज जाति ने जिसने राजा जान को पोप की आज्ञा के कारण त्याग दिया था, अब अपने राजा हेनरी अष्टम को ही अपना धार्मिकनेता माना, और पोप से नाता तोड़ दिया। योरप की जनता ने ३० वर्ष तक घोर युद्ध करके यह सिद्ध कर दिया कि अब पोप की महिमा अधिक नहीं टिक सकती अब पोपो का अत्याचार अधिक नहीं सहा जा सकता।

उन अनेक शक्तियों में जिनके समूह ने पोप लीला का नाश किया लूथर की आत्मशक्ति तथा दृढ़ता एक विशेष महत्व की शक्ति थी। या यों भी कहना अनुचित न होगा कि लूथर की शक्ति उन सब शक्तियों की मुखिया थी। पोप लीला की उत्पत्ति स्थिति तथा प्रलय का वर्णन करने से (जो अत्यन्त संक्षेप में किया गया है) हमारा मुख्य उद्देश्य यही है कि लूथर के कार्य का महत्व पूर्ण रीतिसे समझा जाय और इसका ज्ञान हो जाय कि लूथर ने किन घोर कर्मों और शक्ति-शाली पोपों से युद्ध कर संसार में अक्षय कीर्ति प्राप्त की है।

पंचम परिच्छेद

लूथर रोम में

लूथर अपने चिरवांछित पवित्र नगर में आ उपस्थित हुआ। उसने वहाँ जो देखा सुना उसका वर्णन बहुत स्थानों में किया है। लूथर कहा करता था कि रोम नगर देखने से जो अनुभव मुझे प्राप्त हुआ है उसे मैं सहस्रों स्वर्ण मुद्राओं के लिये भी बेचने को तय्यार नहीं हूँ। १५३० ईस्वी में लूथर यों लिखता है "रोम नगर देखकर मैं एक प्रकार से उन्मत्त हो उठा था। सब गिरजों, सब स्थानों को पागलों की भांति देखता फिरता था। सब कुत्सित और असत्य बातों को सच्चे भक्त की भांति बिना संदेह किये विश्वास कर लेता था। मैंने इतनी बार रोम में मास (Mass) कहे कि किसी रोम नगरस्थ महन्त ने भी न कहे होंगे। मुझे यदि कुछ शोक था तो यही कि मेरे माता पिता जीवित हैं अन्यथा मैंने रोम नगर में इतने पुण्यमय कार्य किये थे इतनी प्रार्थनायें कहीं थीं, इतने मासों में भाग लिया था कि यदि मेरे माता पिता नर्क में होते तो उन्हें सीधा स्वर्ग मिल जाता। रोम में एक कहावत है कि वो माता निश्चय धन्य है जिसका पुत्र महात्मा जान के गिरजे में शनैश्चर की मास पढ़ता है। मैं भी अपनी माता को धन्य बनाने का कितना उत्सुक था (अर्थात् शनैश्चर को जान के

---

*मास रोमन कथालिकों की एक प्रकार की प्रार्थना विशेष का नाम है।

गिरजे में मास पढ़ना चाहता था) परंतु करूं क्या उस दिन ऐसी भीड़ थी कि मैं वेदी तक पहुँच ही न सका"

रोम की उच्च २ अट्टालिकाओं और विशाल गिरजों ने लूथर के ऊपर बड़ा प्रभाव डाला। लूथर ने राज सी ठाठ बाट से पोप को एक गिरजे से दूसरे गिरजे को जाते देखा। यद्यपि जिस कार्यके लिये लूथर रोम भेजे गये थे उसमें तो उन्हें सफलता न हुई तब भी उन्हें पोप दर्बार देखने का सौभाग्य मिल गया। लूथर को पोप के न्यायालयों की कार्य प्रणाली बड़ी दूषित देख पड़ी। रोम नगर की पुलीस के विषय में लूथर का कहना है कि यद्यपि वो थी तो बड़ी कड़ी परन्तु उसमें योग्यता का नाम न था। अलेकजेंडर षष्ठ तथा उसके पुत्र सीज़र बारजियाके अमानुषिक अत्याचारों की कहानियों से अभी तक सारा रोम नगर गूंज रहा था। लूथर ने स्वयम् अपनी आखों पोप जूलियस द्वितीय को इटली देश में घोर अत्याचार करते देखा। लूथर तो पवित्र नगर देखने की आशा से रोम गया था परन्तु वहां जो उसने देखा सुना उससे तो रोम नास्तिकों के नगरों से भी घोरतर प्रकट होता था। उस समय का पोप जूलियस द्वितीय ठीक उसी समय वेनिस नगर जीत कर लौटा था जहां सेना संचालन कार्य उसने स्वयम किया था। लूथर ने ऐसे २ कार्डिनलों * को रोम में 'महात्मा' की पदवी से भूषित देखा जिन में यदि कोई गुण था तो यही कि वे अपनी मां बेटियों को कुदृष्टि से नहीं देखते थे। जनता खुल्लम खुल्ला कहा करती थी कि यदि नर्क कहीं पृथ्वी पर है तो रोम उसके

*उच्चपदके पादरी जो पोप के धर्म के प्रचारक और उसके प्रति निधि अथवा दूत होते थे। स०

ऊपर बसा है। दूसरे इसमें इतना और जोड़ देते थे कि बस अब शीघ्र ही इस नगर का नाश होगा। लूथर एक स्थान पर लिखता है कि रोम में पवित्र से पवित्र वस्तु की हंसी उड़ाई जाती है और यदि किसी को ऐसी अश्लीलता से दुख होता है तो लोग उसको (Bron Christian) 'मूर्ख' की उपाधि देते हैं "मानो ईसाई होना ही मूर्खता है। यह सब देखने सुनने पर भी यह कहना अत्युक्त होगा कि लूथर रोम से कैथलिक धर्म द्रोही होकर लौटा क्योंकि जन्म जन्मांतर के संस्कार कहीं महीनों में नहीं पलटते।

लूथर उसही वर्ष रोम से लौट आया और आकर विटेन्बर्ग के विश्वविद्यालय में धर्म शास्त्रों की शिक्षा देने लगा। सन् १५१२ से सन् १५१७ तक लूथर इस ही स्थान पर अपना कर्त्तव्य करता रहा। इन पांच वर्षों में उसे कठिन मानसिक परिश्रम करना पड़ा। कभी २ उसे एक ही दिन में ४ बार तक धार्म्मिक विषय पर उपदेश देना पड़ता था। इस ही समय में उसने बहुत कुछ यहूदी भाषा का भी अभ्यास कर लिया। उन दिनों लूथर को इतना कठिन परिश्रम करना पड़ता था कि उन्हें बहुत कम अवकाश अपने निज के कार्यों के लिये बचता था।

धीरे २ करके लूथर की ख्याति इतनी बढ़ी कि लूथर सैक्सनी के राजकुल के शिक्षक नियत होगये और यहीं उनको उन लोगों से मित्रता करने का अवकाश मिला जिनकी सहायता बिना स्यात् लूथर पोपयुद्ध में सफल न होते।

छठवाँ परिच्छेद

लूथर और पोप की प्रथम मुटभेड़

पोप जूलियस द्वितीय की मानवलीला समाप्त हो चुकी है। उसके स्थान पर अब पोपलियो दशम् पोप हुआ है। इस पोप का ईसाई धर्म पर कितना ओछा विश्वास था वह इसके इस ही कथन से स्पष्ट है कि "ईसाई धर्म तो वास्तव में एक धनोपार्जन की कहानी है"। यद्यपि उसको ईसाई धर्म पर कुछ भी विश्वास न था तोभी वह सांसारिक सुखों का दृढ़ भक्त था। सांसारिक सुखों में यदि कोई ऐसा सुख है जो उच्च पद प्रतिष्ठित व्यक्तियों को भी भर पेट नहीं मिलता तो वह है नाम की इच्छा। आज कल के धनी लोग "राय बहादुरी" की बहादुरी के पीछे दुबले रहते हैं पुराने समय के धनी लोग मंदिर धर्मशाला आदि बनवा कर अपना नाम अमर करने का उद्योग करते थे। पोपलियो भी इसी विचार में था कि किस प्रकार उसका नाम अमर हो कि इतने में उसे सूझीकि लावो मैं एक ऐसा गिरजा बनवाऊं जिसका प्रति द्वन्दी संसार में न निकले। सेंट पीटर का एक गिरजा बनना चाहिये। प्रश्न यह था कि इतना धन कहां से आवे परन्तु इसके लिये अधिक सोच विचार करने की आवश्यकता न थी। पोप ने इन्डलजेंसों की दुकानें अपने सारे साम्राज्य में खोल दी। इन्ड-लजेन्स कुम्भ मेले के टिकट की तरह बिकने लगे।

प्रश्न होता है कि इन्डलजेन्स थे क्या ? इन्डलजेन्सों का सिद्धान्त सच्चा था या झूठा इस विवाद में हमें न पड़ना चाहिये सिद्धान्तानुसार उन्हें बहुत से कैथलिक बिलकुल निरापद सिद्ध कर सकते हैं परन्तु पोप लोगों ने जिस प्रकार इन्डलजेन्सों को धन पैदा करने की कल बना रक्खा था इसे कोई पोप भक्त भी निरापद नहीं सिद्ध कर सकता। सारे ईसाई संसार में करोड़ों पोप भक्त नित्यप्रति पाप करते हैं। इन पापों के कारण इन सब पापियों को नरक में बास करना पड़ेगा। परन्तु ये पापी यदि चाहें तो नर्क यातना से उसी प्रकार साफ बच सकते हैं जैसे एक हत्यारा दशहजार पेशी का एक वारिस्टर कर हाई कोर्ट अपील से साफ़ बच आता है। पापी को सीधे पोप के पास जाना होगा, पोप से पाप कहना होगा। पोप तब कहेंगे कि तुम्हें इतना रुपया देना होगा तब तुम्हें क्षमा प्रदान की जायगी। पापी रुपये की वोरी पोप के सामने करता है, पोप उसे क्षमा प्रदान का पत्र देता है। पापी विश्वास कर लेता है कि बस अब उसे नर्क का कष्ट न उठाना पड़ेगा। उदाहरण के लिये मानलो जान ने अपने भाई पीटर को मार कर उसकी एक लाख की सम्पत्ति हड़प करली। हर समय उसे भय रहता है कि यद्यपि हाई कोर्ट में तो वारिस्टर की बहस ने प्राण बचालिये परन्तु नर्क की आग में तो पड़ना ही होगा। जान ने बीस हजार पोप की नजर किये; पोप ने उसे क्षमा प्रदान करदी। इस ही का नाम है इन्डलजेन्स। अब जान सुख की नींद सोता है। न नर्क की यातना का भय है न राजा की मार का। यद्यपि उसको रुपये बहुत खर्चने पड़े तब भी पोप की जय बनी रही रोजगार

बुरा नहीं है। अब भी पीटर के साठ हजार जान की टेंट में हैं। जान को कभी संदेह भी नहीं होता कि पोप की क्षमा प्रार्थना खरीदने के बाद भी उसे नर्क की आग में पड़ना पड़ेगा। और संदेह करने का कोई कारण भी नहीं दिखाई पड़ता। ईसाई धर्म ही ने सिखाया है कि मृत्योपरान्त पापी को नर्क मिलता है उस ही धर्म के संचालक प्रभु ईशुमसीह का सर्वोपरि प्रतिनिध पोप कहता है कि पापी इन्डलजेन्स ख़रीदने के उपरान्त नर्क नही जाता। बस इसमें संदेह करने की कौन बात है। ईसाई धर्म ही ने नर्क का भय पैदा किया था ईसाई धर्म ही उस भय को रुपया ले निवारण करता है। जान सत्यता में संदेह नहीं करता।

यह तो सदा की प्रथा थी। अब पोपलियो ने पापियों की सुगमता के लिये एक नया उपाय निकाल दिया है। पापियों को अब रोम जाने की आवश्यकता नहीं है। पोपलियो ने शहर शहर ग्राम ग्राम इन्डलजेन्स बेंचने की दुकाने खोल दी हैं मानो महात्मा लियो ने एक दम ही सारे संसार को निष्पाप करने की कल आविष्कृत करली है! कहीं ऐसा नहो कि निर्धन पापी पोप की इस क्षमा-पदान का लाभ न उठा सकें इस कारण पोप ने दया वश अपनी क्षमाप्रदान का मूल्य सब से एकसां न लेकर सबसे उसकी धन सामर्थ्य के अनुसार (मूल्य) लेना निश्चय किया है। राजा महाराजा तथा राजकुमार इत्यादि को इन्डलजेन्स क्रय करने के लिये २५ सुवर्ण मुद्रायें देनी होती थी। ऐवट वेरन इत्यादि बड़े जमीन्दारों को दस, जिनकी वार्षिक आय ५०० सुवर्णमुद्राएं हो उन्हे छः; सामान्य दूकानदारों तथा उन व्यक्तियों को जिनकी

वार्षिक आय दो सौ सुवर्ण मुद्रा हो उन्हे तीन सुवर्ण मुद्रायें देनी पड़ती थी। यद्यपि बिल्कुल निर्धन मनुष्य को केवल पश्चात्ताप और व्रत करने के उपरान्त इन्डलजेन्स प्रदान करने का नियम था परंतु ऐसा वास्तव मे कभी होता नहीं था। माइकोनियस कहता है कि अनावर्ग मे एक नव युवक ने बिना धन दिये इन्डलजेन्स प्राप्त करने की प्रार्थना की परन्तु उसकी प्रार्थना किसी ने न सुनी।

ये इन्डलजेन्स सारे योरप मे बेंचे जाते थे। इन्डलजेन्स बेचने के लिये सारा जर्मनी तीन भागों मे विभक्त किया गया था। उन तीन भागों में से वह भाग जिसमे लूथर रहते थे मेएंस के बड़े महन्त (archbishop) अलवर्ट को सौंपा गया है। यह केवल बड़ा महन्त ही न था वरन् जर्मनी के दो और उच्च पदों का भी अधिकारी था। इसकी आयु अभी केवल सत्ताइस वर्ष की थी। कहने को तो यह धर्म पिता था परन्तु वास्तव में इससे बढ़कर पाप पिता स्यात् ही दूसरा महन्त होगा। यह महा स्त्रीलंपट और व्यभिचारी था। यदि कुछ गुण था तो यही कि विद्वानों तथा कलाकुशलों का अच्छा मान करता था। इसने बड़े महन्त का पद प्राप्त करने के लिये पोप को बड़ी भारी रकम उत्कोचरूप में दी थी। और ये सब रकम उस समय के प्रसिद्ध महाजन फगर्स से उधार ली गई थी। फगर्स आग्सबर्ग में रहता था। कासलिन नामक एक विद्वान ने जर्मन भाषा में लूथर की एक जीवनी बड़ी खोज परताल से लिखी है। उसका अंगरेजी मे भी उलथा हो चुका है) कासलिन अपनी पुस्तक मे अलवर्ट का चित्र यों खींचता है (अलवर्ट का चित्र भी उसकी पुस्तक में दिया गया है।

"उसके ओठ मोटे मोटे, चेहरा भारी, आखें निष्प्रभ, नाक लंबी और झुकी हुई थी"

उधार ली हुई रकम के लिये तकाज़े पर तकाज़े आने लगे। अलवर्ट के पास द्रव्य कहाँ जो फ़गर्स का कर्ज़ा पाटे। ठीक इसही समय पोप लियो को इन्डलजेन्सों की बिक्री के लिये एक सुयोग्य व्यक्ति की आवश्यकता हुई। अलवर्ट से बढ़कर अच्छी तरह इस काम को स्यात् ही अन्य कोई कर सकता। पोप और अलवर्ट में तुरन्त समझौता होगया। जर्मनी के एक भाग में जितने इन्डलजेन्स बिकें उन सब का ठेका अलवर्ट को मिल गया। ठेके की शर्त यह थी कि उस भाग में इन्डलजेन्स बेचने से जितना वसूल हो उसका आधा पोप को भेजा जाय और आधा अलवर्ट स्वयम् लेले।

फ़गर्स भी चुप बैठने वाला महाजन न था। फ़गर्स को ज्योंही पता लगा कि अलवर्ट को एक आय का मार्ग मिल गया त्योंही उसने अपने सिपाही अलवर्ट के पास भेजे। तय यह हुआ कि फ़गर्स के इन दूतों के पास संदूक की दूसरी ताली रहे और प्रत्येक दिन की आमदनी का आधा ये लोग तुरन्त अपने अधिकार में कर लिया करें। इस तरह इन्डलजेन्स प्रचारकों के पीछे पीछे फ़गर्स के दूत भी लगे रहते थे। अलवर्ट ने टटज़ेल नामक एक महन्त को सैक्सनी में इन्डलजेन्स बेचने को भेजा था। यह निर्विवाद प्रमाण से सिद्ध होचुका है कि टटज़ेल ने स्वयम् इतना द्रव्य हड़प किया कि वह धनी होगया।

जिस नगर में इन्डलजेन्स बेचना होता था उस नगर में पहिले से बड़ी धूम धाम की जाती थी। झुंड के झुंड पादड़ी

पुरोहित और महन्त नियमानुसार एक पंक्ति में होकर उस नगर मे निकलते थे। ये सब हांथों मे मोमबत्ती और बड़े बड़े झंडे लिये रहते थे। धर्मगान और भजनों के साथ साथ घंटे बजते जाते थे। ये सब झुंड बड़े गिरजे के निकट ठहर जाता था। गिरजे में वेदी के ऊपर एक रक्त वर्ण * क्रूस रक्खा जाता था। गिरजे के ऊपर बड़े भारी भारी रेशमी झंडे जिनमें पोप के अस्त्र का चिन्ह बना होता था फहरात थे। सब के नीचे एक बड़ा भारी लोहे का तसला रक्खा जाता था। इसही तसले में करोड़ों वर्षों की नरकाग्नि से बचाने वाली औषध का मूल्य रक्खा जाता था। बड़े बड़े सुमुख वक्ता उपमा अलंकार पूर्ण बड़े बड़े धर्म व्याख्यान देते थे। उन व्याख्यानों द्वारा लोगों को यह बताया जाता था कि किस प्रकार अल्पमूल्य में वे अपने को घोर नरकाग्नि से बचा सकते हैं। व्याख्यान के अन्त होने पर वे सब हत्यारे लुटेरे डांकू जो पूर्व ही से इस कार्य के लिये एकत्रित किये गये थे आगे बढ़ बढ़ कर इन्डलजेन्स क्रय करते थे। बीच बीच में वक्ता महाशय यह भी कहे जाते थे कि यह कुछ अत्यावश्यक नहीं है कि पापी ही मनुष्य इसे मोललें। यदि किसी व्यक्ति को संदेह है कि उसके पूर्वजों में किसी ने कुछ पाप किया है और वह नरक में है तो उस व्यक्ति का यह धर्म है कि वह एक इन्डलजेन्स मोल लेकर अपने पूर्वजों का नरक से उद्धार करे और उसे स्वर्ग भेजे।

---

*क्रूस पुराने समय की एक प्रकार की सूली का नाम है। इस ही पर ईसा को फांसी दीगई थी। तब से ईसाई लोग उस चिन्ह को पवित्र मानने लगे है।

इन्डलजेन्स रूपी औषध की अमोघता* पर हजारों शपथ खायी जाती थीं। और इस पर भी यदि कोई संदेह प्रकट करता था तो तुरंत उसे नास्तिक की उपाधि देदी जाती थी और कहा जाता था कि यदि वह इन्डलजेन्स पर अपना विश्वास न लायेगा तो धर्म से वहिष्कृत कर दिया जायगा।

बहुधा यह काम मेले तमाशों में भी किया जाता था जहाँ लोग आपही मेले तमाशे के लिये जमा होते थे। यही नहीं था कि इन्डलन्जेस केवल नरकाग्नि बचाने ही के लिये बेचे जाते हों। कैथालिक मतानुसार मनुष्य दिन भर में सैकड़ों पाप करता है। प्रत्येक पूजा का, प्रत्येक दैनिक कर्म का सूक्ष्म से सूक्ष्म भी विस्तार निश्चित है। यदि एक शब्द जिस प्रकार से कहना चाहिये उस प्रकार से नहीं कहा गया, यदि मंत्र पाठ करते समय जिस तरह आंख मूदना चाहिये उस प्रकार आंख नहीं मुदी, यदि हाथ हृदय तक न उठ कर कमर ही तक उठे, बस पाप लग गया। लूथर कहता है "जिस पात्र से पहिले ईश्वर का प्रसाद नहीं लगाया गया है उस पात्र से यज्ञ करना पाप है; अपवित्र

* माईकोनियस जो उस समय अनावर्ग के फ्रांसिस्कन मठ मे रहता था इस प्रकार लिखता है।

"So highly honoured was the indulgence that when the commissary was brought in the town the Bull was borne aloft on a velvet or golden cushion and all priests monks Councillors, School Masters scholars men women virgins and children marched in procession with banners and tapers and singing; then all bells were rung, all organs played............

वस्त्रों को पहिन कर पूजा करना पाप है, मंत्र पढ़ते समय दूसरी बात बोल उठना पाप है, यदि मंत्र का उच्चारण करते समय जिह्वा तुतला उठे तो पाप है" परंतु इन सब भिन्न २ पापों से रुपया देकर छुटकारा मिल सकता था। पोप को एक पुल बनाने को रुपया चाहिये। पोप ने बटर-ब्रीफ़ (butter-(brief) नामक इन्डलजेन्स बेचना प्रारंभ किया। इस इन्डलजेन्स को मोल ले लेने के उपरान्त यदि व्रत के दिन मनुष्य मक्खन खाय तो उसे पाप नहीं लगेगा। यदि एक पोप भक्त से सारे दिन विभुक्षित रह कर व्रत नहीं किया गया और संध्या के निकट आने पर भूख से व्याकुल हो उसने थोड़ा सा मक्खन खा लिया—उसने पाप किया। बस उद्धार तब ही होगा जब वह उपरोक्त नामक इन्डलजेन्स मोल ले।

धीरे २ जान टटज़ेल महाशय विटेन्वर्ग के निकट पहुंचने लगे। जैसे २ टटज़ेल महाशय निकट आते गये वैसे ही वैसे टटज़ेल के विषय में अनेक किम्वदंतियां लूथर के कान तक पहुँचती गईं। लोग आ आ कर लूथर से कहने लगे कि टटज़ेल तो अपने उपदेशों में कहता है कि "यदि किसी मनुष्य ने ईशू की मा मरियम् के साथ भी घोरतर व्यभिचार किया हो तो उसका भी उद्धार इन्डलजेंसों द्वारा हो सकता है, मैंने इन इन्डलजेसों द्वारा जितने पापियों को तार दिया है उतने पापी तो कभी पीटर स्वयम् अपने उपदेशों द्वारा न तार सका होगा।" इन्डलजेन्स क्रय करने वाले एक ओर तो किये हुए पापों से मुक्त हो जाते हैं दूसरी ओर यदि भविष्य में पाप बन पड़े तो उसका भी दंड उन्हें नहीं मिल सकता टटज़ेल कहा करता था कि ज्योंही मुद्रा गिरने से तसला बजा कि बस उसी

क्षण पापी की आत्मा नरक को त्याग तुरंत स्वर्गधाम को चली जाती है"।

इसमें संदेह नहीं कि इन उपरोक्त कथनों में बहुत कुछ अतिशयोक्ति मिली हुई हो सकती है परंतु तब भी जब ये ध्यान में आता है कि किस तरह के धनलोलुप इस कार्य को कर रहे थे तब सभी हाँ विश्वास करना पड़ता है। महाजन के दूत जिसके पीछे २ डंडा लिये फिरते थे ऐसे अलबर्ट से क्या उचित अनुचित कारवाइयाँ इन्डलजेन्स बेंचने के लिये न की गई होंगी यह एक सोचने की बात है। टटज़ेल ने तो मानों इन्डलजेन्स बेंचने के लिये अवतार ही लिया था। इन्डलजेंस बेंचते २ टटज़ेल के १७ वर्ष बीत चुके थे जब उसने अलबर्ट की नौकरी स्वीकार की। टटज़ेल का निज का चरित्र भी वैसा ही था जैसा कि ऐसे ठग से आशा की जानी चाहिये। व्यभिचार में पकड़े जाने पर उसे डुबाये जाने का दंड मिला परंतु फिर यह दंड बदल कर उसे आजन्म कारागार का दंड दिया गया। वह लीपज़िग के कारागार से भाग निकला और इन्डलजेंस बेचने का काम करने लगा।

लूथर के मित्र आ आ कर उससे यह सब कहते थे और पूछते थे कि आपके विचार में यह न्याय है या अन्याय। इन अनेक अन्याय पूर्ण बातों को सुनते २ लूथर की अन्तरात्मा दुःखी हो उठी। उससे न रहा गया। १५१७ इसवीं की ३१ वीं अक्टूबर का दिन यौरप के इतिहास में बड़े महत्व का है। इस ही दिन विटेनवर्ग के गिरजे के दरवाज़ेपर लूथर द्वारा लिखित एक चिट्ठा दिखाई पड़ा। इस चिट्ठे में लूथर ने इन्डलजेंसों के विरुद्ध ९५ आक्षेप किये थे और

आह्वान किया था कि जिसका जी चाहे वह आकर लूथर से उन विषयों पर शास्त्रार्थ कर ले। लूथर इस समय चौंतीस वर्ष के थे।

एक तरह से विचार करने पर लूथर के इस कार्य में कोई विशेषता नहीं दिखाई पड़ती क्योंकि उन दिनों यह एक सामान्य प्रथा थी कि विद्वान लोग परस्पर शास्त्रार्थ करने के लिये एक दूसरे का आह्वान करें। यदि अमुक मनुष्य ने अमुक पक्ष लिया तो इससे यह कभी नहीं समझा जाता था कि वास्तव में वह उस पक्ष पर विश्वास करता है। बहुधा ही विद्वान अपने निश्चित् विश्वास के प्रतिकूल पक्ष का समर्थन करते थे और इस तरह ख्याति कमाते थे। जब ईसाई धर्म के निश्चित् सिद्धान्तों के ऊपर भी शास्त्रार्थ हुआ करते थे और लोग उनके विरुद्ध पक्ष को ग्रहण कर सत्यासत्य का निर्णय किया करते थे तब फिर इन्डलजेन्सों पर आक्षेप करना कौन बड़ी कठिन बात थी, क्योंकि इन्डलजेन्सों का विषय तो उस समय तक निर्विवाद सिद्ध भी नहीं हो चुका था और ईसाई विद्वानों का उस विषय पर बहुत *मतभेद था।

लूथर ने ९५ आक्षेपों को बहुत शीघ्रता में लिखा था और उसने कभी स्वप्न में भी न सोचा कि यही "आघातावं" काग़ज़ सारे यौरप में आग लगा देगा। वो चिट्ठा यों प्रारम्भ होता है

* इसाई धर्म के विद्वानों का इन्डलजेन्स पोप के इन्डलजेन्स से बिलकुल विपरीत था। उन लोगों ने तो तत्वज्ञान दृष्टि से यह बताने का उद्योग किया था कि मनुष्य किन २ उपचारों द्वारा पाप निर्मुक्त हो ईश्वर के सम्मुख जा सकता है। हमने उनके मत को इस पुस्तक में सविस्तर वर्णन करने की आवश्यकता न समझा क्योंकि वह बहुत रुचि कर न होता।

"सत्य को स्पष्ट करने की इच्छा और प्रेम के कारण माननीय धर्म पिता मार्टिन लूथर की अध्यक्षता में निम्न लिखित विषयों पर विटेनवर्ग में शास्त्रार्थ होगा........"। पोप लियो को जो पत्र लूथर ने लिखा उसमें वो कहता है "ये विवाद विषय है, न सिद्धान्त है न आदेश"। लूथर को पूरा विश्वास था कि यदि वह इन्डलजेन्स की बुराइयों को बड़े पद के पादड़ियों को समझावेगा तो निश्चय है कि वे इसका सुधार करेंगे। और इसी विचारानुसार उसने एक पत्र अलवर्ट को भी लिखा जिसके उत्तर में अलवर्ट ने केवल इतना लिख भेजा कि तुम्हारी रिपोर्ट पोप के पास भेज दी गई है और तुम्हें रोम से आने वाली आज्ञा की प्रतीक्षा करनी चाहिये। चाहे लूथर का विचार कुछ भी क्यों न रहा हो ईश्वर की यही इच्छा थी कि यही "आधेताव" कागज़ यौरप को पोप-पाप से निर्मुक्त करे। दोही सप्ताह के भीतर उस "आधेताव" कागज़ की सहस्रों प्रतियाँ छपकर बँटने लगीं। उसका जर्मन भाषा में उल्था हुआ। देखतेही देखते उसका इतना प्रचार होगया कि घर २ उन विषयोंपर चर्चा होने लगी। पोपों का प्रताप इस समय सूखी घास का ढेर मात्र था उसमें दिया सलाई लगा दी गई अब उसे स्वाहा होने से कौन रोक सकता था। माइकोनियस कहता है कि वे विवाद विषय घर २ इतनी शीघ्रता से फैल गये "मानो स्वर्ग दूतों ने उनके प्रचार करने का भार अपने ऊपर स्वयम् लिया था"।

उस चिट्ठे का मूल्य समझाने के लिये उसमें से कुछ महत्व शील विवाद विषय नीचे दिये जाते हैं। (५) *पोप केवल उन्हीं

---

* विषयों के नम्बर हैं।

दंडों की क्षमा दे सकता है जो उसने स्वयम् अपनी इच्छा से दिये हों या जिनकी क्षमा का विधान धर्मशास्त्रों में हो और अन्य किसी प्रकार के पाप की क्षमा न तो पोप दे सकता है न उसे देना चाहिये। (४२) ईसाइयों को यह सिखाना चाहिये कि यह पोप की कभी इच्छा नहीं है कि इन्डलजेन्स क्रय करना दया धर्म से भी बढ़कर माना जावे। (४३) ईसाइयों को सिखाना चाहिये कि दरिद्रों और दुःखियों की सहायता करना 'क्षमा क्रय' से कहीं अधिक श्रेयस्कर है। (५०) ईसाइयों को सिखाना चाहिये कि यदि पोप को इस बात का ज्ञान हो कि उसकी भेड़ों* का रुधिर मांस अस्थि किस प्रकार उपदेशकों द्वारा इन्डलजेन्स रूपमें चूसा जा रहा है तो वो अपना गिरजा कदापि न बनवायेगा। (८२) यदि पोप दयावश धन ले पापियों को नरक से मुक्त कर सकता है तो वह उसी दयावश नरक ही का नाश कर सब को नरक यातना से मुक्त क्यों नहीं कर देता। (८६) पोप स्वयम् कारूं† की तरह धनवान् है अतः उसे चाहिये कि पीटर का गिरजा स्वयम् अपने निज के द्रव्य से बनवाये और अपने दरिद्र भेड़ों को न चूसे।

इन उपरोक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि लूथर ने उस चिट्ठे में कहीं यह नहीं लिखा था कि पोप की कोई आज्ञा न माने या पोप धर्म के विरुद्ध एक नया धर्म चलाया जावे। लूथर ने उस चिट्ठे द्वारा केवल इन्डलजेन्स क्रय का अनौचित्य मात्र दिखाया था। पोप पद पर किसी प्रकार का आक्षेप नहीं

*पोप के भक्तों की उपमा बहुधा भेड़ों से दी जाती है और पोप स्वयम् मेषपाल समझा जाता है।

† एशिया माइनर के एक बहुत पुरातन राजा का नाम है जो अत्यन्त धनी मानाजाता था।

किया था। यदि लूथर ने टटज़ेल द्वारा बेचे जाने वाले इन्ड-लजेन्सों का विरोध किया था तो वह विरोध केवल एक कर्मचारी द्वारा किये हुए एक कार्य विशेष के प्रति था। पोप* पद के विरुद्ध वह विरोध कदापि न था। परन्तु उसके अर्थ यही किये गये कि लूथर पोप का विरोधी है। इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। यह भेद इतना सूक्ष्म है कि इसकी सीमा का ज्ञान बीसवीं शताब्दी में भी बहुत कम लोगों को है। अनेकों घटनाओं में समालोचना मात्र ही अराजकता का पूरा प्रमाण मान ली जाती है।

लूथर ने कभी स्वप्न में भी यह न सोचा था कि इसही 'आधे ताव' कागज के लिखने के कारण उसे पोप ऐसे महाबल-शाली व्यक्ति का सामना करना पड़ेगा। जब उसे यह स्पष्ट होगया कि यह आधाताव कागज़ घोर आन्दोलन का कारण बन चुका है तब भी उसकी इच्छा उस आन्दोलन में भाग लेने की न थी। लूथर ने इस घटना के कई वर्षोपरान्त कहा कि "भला मुझ ऐसे तुच्छ और नीच महन्त में यह साहस कहां कि मैं पोप ऐसे महा प्रतापी पुरुष के विरुद्ध खड़ा होऊं"। पोप लियो जिसके पास लूथर की रिपोर्ट गई थी उन व्यक्तियों में से था जो संसार को अपने आनंद का उपवन समझते

---

* लूथर पोपलियो के प्रति अपनी नम्रता इस प्रकार दर्शाता है—हे परम पवित्र पिता मैं आपके चरण कमलों में साष्टांग प्रणाम करता हूं। आप मेरे तन मन धन सब के प्रभु हैं। आप (चाहे) घटायें, बढ़ायें, बुलायें, पुचकारें, दुत्कारे, मानें, न माने, जो आपकी इच्छा हो करें। मैं आपकी आज्ञा प्रभु ईशु की आज्ञावत मानूंगा। यदि मैंने मृत्युके योग्य कार्य किया है तो मैं मरने से मुख न मोड़ूगा।

हैं और जो अपने निज के सुख में इतने मग्न रहते हैं कि संसार के व्यर्थ वादविवादों को सुनने का उन्हें अवसर ही नहीं रहता। जैसे ही पोप लियो को विदित हुआ कि वह पोप चुना गया है वह तुरंत कह उठा "ईश्वर ने हमे पोप का पद दिया है, आवो इस पद को पेट भर भोगें"। लूथर की रिपोर्ट सुन उसने हंस कर कह दिया। "भाई! मार्टिन की बुद्धि अच्छी है, यह तो सब ईर्षक महन्तों की कार्रवाई है"। परंतु मेंज़ के बड़े महन्त ने रिपोर्ट की थी अतः उसके सम्मानार्थ आज्ञा दी कि लूथर के विषय में आगस्टाइन मठ के बड़े महन्त जांच पड़ताल करें। परंतु अभी तक लियो ने 'आधा ताव' कागज नहीं पढ़ा था—पढ़ने का अवकाश कहां था, जब उस 'आधे ताव' कागज़ को पढ़ा तब तो कुछ घबड़ा उठा और बोला "एक मद्यपी महन्त ने इसे लिख मारा है, होश आते ही उस का विचार पलट जायगा"। परंतु आन्दोलन बढ़ता गया और पोप ने संकल्प कर लिया कि लूथर को कुछ कठिन दंड देना आवश्यक है। एक वर्ष के भीतर ही भीतर पोप ने कार्डिनल कजेटेन को जर्मनी भेजा कि वह जाकर सब आन्दोलन शांत करे। इस ही के साथ ही साथ एक पत्र सम्राट् मैक्सफ्रेडमीलियन को भी लिखा गया और दूसरा सैक्सनी के राजा फ्रेडरिक को। फ्रेडरिक को आज्ञा दी गई कि वह "पाप पुत्र" लूथर को पोप दूत के हाथों सौप दे। १५१८ के अगस्त मास में साम्राज्य की एक सभा होने की घोषणा की गई और लूथर के पास इसमें उपस्थित होने के लिये सम्मन भेजा गया।

लूथर आज्ञा मानने को विवश था। दुःखित हृदय लूथर

विन्टेवर्ग से चल पड़ा। उसे पूरा विश्वास था कि उसके जीवन का अंत आ गया है। उसके मित्रों ने पत्र द्वारा उपदेश किया कि विटेन्वर्ग से बाहर जाने का साहस कदापि न करे। मैंस-फील्ड के काउन्ट अलवर्ट ने लिख भेजा कि उसे पकड़ने को षड़यंत्र रचा गया है। डा० स्टापिज़ ने लिखा कि जहां तक मैं देख पाता हूं मुझे तो यही मालूम पड़ता है कि तुम्हारे लिये (लूथर के लिये) वहां (सभा में) सूली के अतिरिक्त और कुछ नहीं रक्खा है। लुथर को भी अपने सामने मृत्यु के अतिरिक्त और कुछ नहीं सूझता था। उसे बार बार यही दिखाई पड़ता था कि मानो चिता जल रही है और वह नास्तिकवत् उसमें जलाया जा रहा है। फिर एकाएक चौंककर सोचने लगता कि या ईश्वर यह सब सुनकर मेरे माता पिता क्या कहेंगे, उनकी भी मेरे कारण कितनी निन्दा होगी। लुथर को विटेन्वर्ग से पैदलही चलना पड़ा। उसके पास रुपया भी कुछ न था। नूरेम्बर्ग पहुंचकर लूथर ने अपने एक मित्र से एक कोट उधार लिया क्योंकि उसके पास ऐसा कोई वस्त्र न था कि वह ऐसी महासभा में समर्य्याद खड़ा हो सके। अन्त में वह थका माँदा किसी प्रकार आग्सवर्ग पहुंच गया। आग्सवर्ग में भी उसे बहुत से मित्र सहायता देने को प्रस्तुत होगये। विवाद विषयों को छपे और प्रकाशित हुए एक वर्ष होने आता था। अनेकों लोगों ने उसे पढ़ा था और उनमें से न जाने कितने उसे पूज्य दृष्टि से देखने लग गये थे। अपने मित्रों की मन्त्रणानुसार लूथर ने सम्राट से एक अभयपत्र की प्रार्थना की। सम्राट उस समय आग्सवर्ग के निकट ही आखेट खेल रहे थे अतः "अभयपत्र" मिलने में लूथर को बहुत

कष्ट नहीं उठाना पड़ा। 'अभय पत्र' मिलने के उपरान्त लूथर पोप के कार्डिनल से मिला। लूथर के मित्रों ने समझा दिया था कि कार्डिनल के साथ बड़े आदर सम्मान से मिलना। लूथर अकेला मिलने नहीं गया था वरन् दो या तीन मित्र उसके साथ थे।

लूथर कार्डिनल के निवास स्थान पर पहुंचा। साक्षात् होते ही लूथर ने कार्डिनल को साष्टाँग प्रणाम किया। कार्डिनल ने भी बहुत शिष्टता से लूथर को उठने की आज्ञा दी। इसके उपरान्त क्षेम कुशल पूंछी गई। जब यह सब हो चुका तो वास्तविक विषय सामने आया। कार्डिनल निश्चय लूथर के साथ बड़ों का सा बर्त्ताव करना चाहता था और लूथर को छोड़ना भी स्वीकार करता था परन्तु प्रतिज्ञा यह कराना चाहता था कि लूथर उसी समय उसही की उपस्थिति में अपनी पूर्व की सब समालोचनायें लौटाल ले और अपनी मूर्खता स्वीकार करे। कार्डिनल की तीन आज्ञायें थीं:—(१) लूथर अपनी नास्तिकता को लौटाल ले और पश्चात्ताप करे (२) लूथर प्रतिज्ञा करे कि भविष्य में वह ऐसी समालोचनायें कभी न करेगा (३) लूथर कोई ऐसा अन्य कार्य न करेगा जिससे रोमन कैथालिक धर्म में अशांति फैले। लूथर ने इन सब का उत्तर यही दिया कि यदि हमारी समालोचनाओं में कोई प्रमाद दिखा दिया जाय तो हम उसे तुरंत स्वीकार कर लेंगे। इस पर दोनों में थोड़ी देर तक अच्छा शास्त्रार्थ हुआ परन्तु लूथर को विदित हुआ कि ऐसे शास्त्रार्थ से उसका कोई भला न होगा यदि कुछ फल होगा तो यही कि कार्डिनल और चिढ़ जायगा। अतः लूथर ने उस दिन

घर जाने की प्रार्थना किया और कहा कि कल हम अपनी स्थिति को लिख लावेंगे और तब परस्पर समझौता शीघ्र हो जायगा।

दूसरे दिन लूथर तीन राज सचिवों को भी साथ लेता आया। आज डाक्टर स्टापिट्ज़ भी साथ थे। लूथर का चिट्ठा जिस पर वह अपनी स्थिति लिख लाया था कुछ लम्बा था परन्तु संक्षेपतः उसका तात्पर्य यह था कि "मैं तन मन धन से पोप का सेवक हूं परन्तु सत्यान्वेषण करना कोई ऐसा पाप नहीं है कि मुझे बिना बचाव का समय दिये दंड दे दिया जाय। मुझे पूरा विश्वास है कि मैंने कोई ऐसा कार्य नहीं किया है जो शास्त्रविगर्हित हो। यद्यपि मैं स्वीकार करता हूं कि मुझसे प्रमाद हो सकते हैं परन्तु बिना प्रमाण मैं कोई दोष स्वीकार नहीं कर सकता। इस पर कार्डिनल ने कहा "पुत्र! मैं तुमसे शास्त्रार्थ करने नहीं आया हूं और न ऐसा करने की मेरी इच्छा है। मैं तो इसलिये आया हूं कि सहानुभूति तथा सहिष्णुता सहित तुम्हारी बातें सुनूं और तुम्हें कुछ उपदेश दूं"।

तीसरे दिन लूथर उससे भी बड़ा चिट्ठा लेकर उपस्थित हुआ और उस चिट्ठे में उसने स्पष्ट कह दिया कि बाइबिल का प्रमाण ही उसके लिये मान्य है। पोप की आज्ञाओं को वह बाइबिल की आज्ञाओं के अन्तर्गत समझता है। पोप की आज्ञायें बाइबिल की आज्ञाओं के अनुसार होने पर माननीय हैं विरुद्ध होने पर त्याज्य है। लूथर बाइबिल के अर्थ जैसे वास्तव में हैं वैसे किया चाहता था। कार्डिनल कहता था कि बाइबिल के अर्थ जैसे पोपों को सम्मत होते आये हैं, और सम्मत हो

वैसे होने चाहिये। इस पर वादविवाद जोर पकड़ता गया। कार्डिनल अत्यन्त चिल्लाकर विवाद करने लगा। दशबार लूथर ने उत्तर देने का उद्योग किया परन्तु दशहोबार कार्डि-नल की गर्जना ने उसे स्थगित करदिया। अन्त में लूथर भी गरम हो उठा और चिल्लाने लगा "यदि आप दिखा सकें कि प्रभु ईशु के सुकृत ही इन्डलजेन्स की निधि है तो मैं सब लौटाल लूंगा"। इसे सुनतेही कार्डिनल खूब हँसा और पुस्तक उठाकर लगा जल्दी २ पन्ने उलटने। एक स्थान से उसने पढ़ कर सुनाया "प्रभु ईशु ने अपने धार्मिक भावों द्वारा निधि प्राप्त किया"। "ठहरिये धर्म पि..ा!" लूथर उछल कर बोला "तनिक 'प्राप्त किया' शब्द पर ध्यान दीजिये,। यदि ईशु ने अपनी सुकृतियों से निधि प्राप्त किया तो यह स्पष्ट है कि ईशु के सुकृत स्वयम् निधि न थे और न हो सकते हैं"। कार्डिनल ऐसे सीधे घाव को खा घबड़ा गया और लगा अपने हाथ पैर फेंकने। परन्तु लूथर कब चूकने वाला था, उसने कहा "परम पवित्र पिता आप यह न समझें कि जर्मनी के लोग व्याकरण से बिलकुल अनभिज्ञ होते हैं, निधि होना एक बात है और निधि प्राप्त करना दूसरी बात है"। अब कार्डिनल फिर अपने पुराने ढर्रे पर आ अड़ा और कहने लगा "जावो और तब तक मत आना जब तक सब बातें लौटाने को राजी न हो"। इसके उपरान्त लूथर दो दिन आग्सवर्ग में और रहा और फिर उसे कुछ अपने प्राणों के जाने का भय उपस्थित हुआ और रातो रात छिपकर विटे-न्वर्ग लौट आया।

जब लूथर नूरेम्वर्ग के निकट पहुंचा तो लूथर को एक पोप के आज्ञा पत्र की प्रति मिली जो कार्डिनल को लिखी गई थी।

लूथर को उसे पढ़ने से विदित हुआ कि पोप ने उसे पूर्व ही से नास्तिक मान लिया है। उस आज्ञा पत्र द्वारा कार्डिनल को सूचित किया गया था कि यदि लूथर पूर्ण रीति से अपनी समालोचनायें लौटाल ले, और पश्चाताप करे, और कार्डिनल उतने से संतुष्ट हो जाय तो वह लूथर को छोड़ सकता है अन्यथा उसे आज्ञा दी जाती है कि वह लूथर को पकड़कर रोम भेज दे जहाँ उसे उपयुक्त दंड दिया जायगा। विटेन्वर्ग पहुंच कर लूथर ने जो पहला काम किया वह यह था कि उसने आग्सबर्ग की सारी घटनाओं को पुस्तक रूपमें प्रकाशित कराया।

कार्डिनल ने बड़े गर्व के साथ फ्रेडरिक को लिखा कि यह बड़ा अनुचित हो रहा है कि लूथर सा नास्तिक उसकी शरण में है अतः फ्रेडरिक का यह धर्म है कि लूथर को पकड़कर वह रोम भेज दे या कम से कम उसे सैक्सनी से निर्वासित कर दे। फ्रेडरिक ने यह पत्र लूथर को भेज दिया। लूथर ने उस पत्र के उत्तर में कार्डिनल की बहुत सी बातों का प्रतिवाद करने के उपरान्त लिखा कि यद्यपि मनुष्य होने के कारण उसकी समालोचनायें प्रमाददोष पूर्ण हो सकती हैं परंतु अभी तक किसी ने कोई प्रमाद सिद्ध नहीं किया है। उसे पकड़ कर रोम भेज देना बड़ा अन्याय होगा क्योंकि रोम में पोप को स्वयम् अपने प्राणों का भय बना रहता है"। "परंतु" लूथर ने लिखा कि, "मेरी यह इच्छा कदापि नहीं है कि मेरे कारण महाराज के सुविख्यात नाम पर धब्बा लगे अतः मैं स्वयम् पेरिस चला जाऊंगा"। फ्रेडरिक ने लूथर के पत्र सहित एक पत्र कार्डिनल को लिखा जिसमें उन्होंने कहा कि अभी

तक लूथर नास्तिक सिद्ध नहीं किया गया है अतः उसे अभी अपनी शरण से नहीं हटाया जा सकता। यदि लूथर नास्तिक प्रमाणित हो चुका होता तो वह बिना किसी संकोच तथा बहिर्प्रेरणा के ही उसे निवार्सित करना अपना परम धर्म समझता।

सप्तम परिच्छेद

पोप की चालें

यह तो निश्चित था कि पोप फ्रेडरिक और लूथर की परस्पर जो स्थिति थी उसमें कुछ परिवर्तन होगा परंतु प्रश्न यह था कि यह स्थिति परिवर्तन किस नीति द्वारा होगा—दंड या साम। पोप को अभी साम नीति की सफलता में बहुत कुछ आशा थी और उसने उस ही नीति का अवलंब लिया। पोप ने अपना एक मिलटिज़ नामक दूत फ्रेडरिक के पास एक पत्र सहित भेजा। उस ही पत्र के साथ २ पोप ने 'सुवर्ण गुलाब' (Gold Rose) भी फ्रेडरिक को भेजा। 'सुवर्ण गुलाब' उसे दिया जाता था जिसका पोप सर्वोपरि मान करता था और फ्रेडरिक को इसे पाने की बहुत दिनों से बड़ी उत्कट इच्छा थी। यही नहीं कि केवल सुवर्ण गुलाब ही भेजा गया था वरन् पत्र भी बड़ी नम्रता से लिखा गया था। उस पत्र द्वारा पोप ने बड़ा आश्चर्य प्रगट किया था कि उसके धर्म साम्राज्य में एक मृत्युनंदन नास्तिकता का प्रचार कर रहा है। उसने लिखा कि ',मुझे पूर्ण आशा और विश्वास है कि मेरा प्यारा पुत्र तथा न्यायाधीश सैक्सनी का राजा फ्रेडरिक इस शैतानात्मज (लूथर) का मुख बंद कर देगा"।

१५१८ के नवम्बर मास में चार्ल्स हान मिलटिज़ इटली से ज़रमनी के लिये चल पड़ा। दिसम्बर मास तक उसके प्रस्थान का समाचार उन सब लोगों को विदित होगया जिनसे उसका

कुछ सम्बन्ध था। नूरेन्बर्ग तक पहुंचते २ जो उसने देखा सुना उससे उसे विदित होगया कि जर्मनी में यदि तीन मित्र लूथर के हैं तो एक पोप का। इन सब बातों को देख सुन उसने भी अपना भाव बदल दिया और सरल उपायों द्वारा काम निकालना निश्चित किया। मिलटिज़ को विदित हुआ कि सब से पहिले यह आवश्यक है कि वह टटज़ेल की धूर्तता के दोष से पोप को बचावे। उसने टटज़ेल को लीपजिग़से अलटेन बर्ग आने की आज्ञा दी। परन्तु टटज़ेल ने एक बड़े और नम्र पत्र द्वारा वहां न आने के लिये क्षमा मांग भेजी। उसने लिखा कि "लीपज़िग छोड़ने से हमारे प्राणों पर आ बनेगी क्योंकि उस आगस्टियन महन्त लूथर ने ऐसी आग लगाई है कि सारा जर्मनी हमारे रुधिर का प्यासा हो रहा है"। अंत में मिलटिज़ स्वयं लीपज़िग गया और वहाँ पहुंचकर उसने टटज़ेल को अपने सामने बुलाया। मिलटिज़ को टटज़ेल की परीक्षा के उपरान्त विश्वास होगया कि टटज़ेल ने बड़ी २ धूर्तता और दुष्टतायें की हैं। उसे यह भी विदित हुआ कि टटज़ेल बहुत सा रुपया स्वयं हड़प गया है। इसके छः महीने के उपरान्त टटज़ेल बड़ी दुर्दशा के साथ मर गया।

६ जनवरी को मिलटिज़ लूथर से मिला। उस अवसर पर फ्रेडरिक का एक सचिव भी साथ था। दोनों ने बड़ी आव भगत और मित्रता दिखाई। कुछ मिलटिज़ ढीला पड़ा कुछ लूथर और निश्चित हुआ कि लूथर भविष्य में इन्डलजेन्सों के विषय में कुछ न लिखेगा और पोप लूथर को किसी विद्वान् पादड़ी के पास भेजकर उसको उसके दोष स्पष्ट करा देगा। इस प्रकार दोनों व्यक्ति परस्पर आलिङ्गन कर एक

दूसरे से विदा हुये।

लूथर की इच्छा न थी कि वह पोप के विरुद्ध कुछ और अधिक आन्दोलन करे परन्तु कुछ घटनाएँ ऐसी हुईं कि लूथर को विवश हो मिलटिज़ द्वारा सम्पादित शान्ति तोड़नी पड़ी। जानईक नामक विद्वान् से लूथर को एक घोर शास्त्रार्थ लीपज़िग नामक नगर में करना पड़ा। लीपज़िग में भी एक विश्वविद्यालय था जो कट्टर कथालिक पोप भक्तों का दुर्ग था। इस शास्त्रार्थ का अध्यक्ष जार्ज ड्यूक भी कट्टर कथालिक था। इस ही ड्यूक के दुर्ग में यह शास्त्रार्थ हुआ। जैसा बहुधा होता है इस शास्त्रार्थ में भी असंबद्ध प्रलाप दोष बहुत किये गये। ईक ने लूथर को हस का अनुगामी बनाया। लूथर ने हसको सच्चा ईसाई सिद्ध करते हुये अपने को बचाने का उद्योग किया। इस पर ईक ने उसे यह स्वीकार करने पर विवश किया कि सभायें भी भ्रम में पड़ प्रमाद कर सकती हैं। इतना मुंह से निकलना था कि ईक ने अपने को विजयी मान लिया। लूथर १५२० ईस्वी को फरवरी को यों लिखता है "आज तक मैं बिना जाने बूझे हस ही के सिद्धान्त सिखाता रहा, उसही तरह अज्ञानवश डाकृर स्टापिज भी हस ही की शिक्षा देते रहे, संक्षेप में यह कि हम सब हस के शिष्य हैं यद्यपि अभी तक इसे जानते नहीं थे..."। उस विवाद के उपरान्त लूथर ने हस की पुस्तकें पढ़ीं तो उसे विदित हुआ कि इसके और हसके विचारों में बड़ा ऐक्य है।

यह शास्त्रार्थ कई दिन तक होता रहा और इसका कुछ निर्णय नहीं हुआ कि कौन विजयी है। लीपज़िग वाले सब एक स्वर से ईक को विजयी स्वीकार करते थे। अध्यक्ष ड्यूक का भी यही निर्णय था। लीपज़िग में ईक की बड़ी ख्याति

फैली। घर २ में उसका सम्मान होने लगा। दिन प्रतिदिन उसे बड़े २ कुलों से भोज के लिये निमंत्रण मिलने लगे। लूथर ने भी ऐसे शत्रु नगर से बहुत शीघ्र अपना प्रस्थान किया। इस शास्त्रार्थ के विषय में ईक ने मन मानी बातें फैलाना प्रारंभ किया जिसका प्रतिवाद करने में लूथर को बहुत कुछ परिश्रम करना पड़ा, और कई लघु पुस्तकें प्रकाशित करनी पड़ीं। लूथर को ईक ही से अकेले युद्ध न करना पड़ा नित्य ही कोई न कोई विद्वान् लूथर पर आक्षेप करता था और अकेला लूथर उन सबकी पुस्तकों का उत्तर पुस्तक तथा पत्रिकाओं के रूप में देता था। इस तरह उसे एक प्रकार से अकेले ही चतुर्दश सहस्र राक्षसों से युद्ध करना पड़ रहा था पर धन्य है उसका साहस कि वह सब ही को चाहे खर हो त्रिशरा, चाहे दूषण, पुस्तकाकार बाणों से विद्धही कर छोड़ता था।

इधर महात्मा ईक रोम पहुंचे। रोम क्यों गये इसके विषय में मत भेद है। ईक स्वयं तो यही कहता है कि हमें रोम से निमंत्रण आया था परंतु उसके शत्रुओं का कथन है कि निमंत्रण आदि की बात सब बहाना है; लीपज़िग का विजेता ईक पोप से अपनी विजय के प्रतिफल में कोई उपयुक्त उपहार प्राप्त करने स्वयं ही गया था। रोम में ईक का बड़ा सम्मान किया गया। पोप और उसके कार्डिनलों ने उसकी बड़ी आव भगत की यहाँ तक कि पोप ने उसका सर्व साधारण के सम्मुख चुम्बन किया। लूथर द्वारा प्रज्वलित अग्नि अब इतनी प्रबलता से जर्मनी को दग्ध कर रही थी कि उसकी आंच रोम तक पहुंचती थी। पोप लूथर को उपयुक्त दंड देने को कटिबद्ध हो चुका था। लूथर के बहिष्कार का आज्ञापत्र तय्यार हो

रहा था कि इतने में ईक महाशय वहाँ पहुंच गये। ईक भी उस अंतरँग सभा के सदस्य बना लिये गये जो लूथर का वहिष्कार पत्र तय्यार करने में लगे थे। ईक एक स्थान पर बड़े गर्व के साथ लिखता है कि "परम पवित्र पोप, दो कार्डिनल, एक स्पेन का विद्वान और मैं" एकबार बराबर पांच घंटे तक इस ही विषय पर विचार करते रहे"। इससे यह स्पष्ट विदित होता है कि पोप लूथर का विषय कैसे महत्व का समझता था और उसके ऊपर हाथ उठाने से उसे कितना भय लग रहा था। स्यात् ही ग्रेगरी सप्तम ने हेनरी चतुर्थ का वहिष्कार करते समय इतनी माथापच्ची की हो। अंतरंग सभा में एक बड़ा मतभेद था। कुछ लोग चाहते थे कि लूथर रोम बुलाया जाय और रोम में बुलाकर उस पर नियम पूर्वक नास्तिकता का अभियोग लगाया जाय और उसे अपनी रक्षा का समय दिया जाय। दूसरे कहते थे यह सब व्यर्थ होगा क्योंकि लूथर यहां आवेगा ही नहीं अतः यही उचित है कि उसका यों ही वहिष्कार कर दिया जाय।

वहुत वाद विवाद के उपरान्त यही निश्चित हुआ कि लूथर का वहिष्कार बिना न्याय किये ही किया जाय और इस ही सिद्धान्तानुसार १५ जून सन् १५२० को लूथर के वहिष्कार का आज्ञा पत्र प्रकाशित हुआ। इस आज्ञा पत्र को, पोप कहता है, प्रकाशित करते उसके वत्सल हृदय में घोर कष्ट हो रहा है परंतु क्या किया जाय "वन्य शूकर प्रभु ईशु के द्राक्षाक्षेत्र में घुस पड़ा है"।, पोप जो अभी तक लूथर की नास्तिकता को क्षमाशील पिता की भांति सहन करता चला आया है, जर्मन देशवासी अपने अन्य पुत्रों के नास्तिक हो जाने के भय से,

लूथर को वहिष्कृत करता है। पोप आज्ञा देता है कि लूथर द्वारा लिखित सब पुस्तकें जहाँ कहीं पाई जावें तुरंत अग्नि में झोंक दी जाँय, लूथर धर्मोपदेश देने से वंचित किया जाय; लूथर और उसके पक्षपातियों को २ मास के भीतर अपनी नास्तिकता से विमुख होने की आज्ञा दी जाती है। यदि वे ऐसा न करें तो स्पष्ट है कि वे घोर नास्तिक हैं और उन्हें नास्तिकवत् दंड दिया जावे (अर्थात् जीते जला दिये जायँ)। ईक लूथर का वहिष्कार पत्र लेकर जर्मनी आया। प्रथम तो लोगों ने वहिष्कारपत्र की सत्यता पर संदेह प्रकट किया कारण कि इसके पूर्व पोप के आज्ञापत्र इस प्रकार अज्ञात पुरुषों द्वारा नहीं आया करते थे परंतु मास दो मास के उपरान्त रोम से समाचार आगये कि ईक के हाथ भेजे गये पत्रादि पोप के भेजे हैं। फिर क्या था सैक्सनी के अतिरिक्त अन्यत्र सब कहीं भरी वाजारों में कट्टर पोप भक्तों द्वारा लूथर लिखित ग्रंथों का अग्नि संस्कार होने लगा। सब से पहिले इस धर्म कार्य को लीपज़िग के विश्वविद्यालय ने ही किया।

यह कब संभव था कि सैक्सनी को पोप की आज्ञा का कुछ उत्तर न देना पड़े। पोप का आज्ञापत्र अन्त में फ्रेडरिक के पास पहुंचा। फ्रेडरिक ने लूथर से इस विषय में परामर्श मांगा। परामर्श करने के उपरान्त फ्रेडरिक ने एक पत्र पोप को लिखा जिसका स्पष्ट कार्य टाल मटूल करना था। लूथर अब सोलहों आने पोप के विरुद्ध हो गया। लूथर ने कई लघु पुस्तकें लिखीं जिनके द्वारा सारी जर्मन जाति तथा जर्मन सम्राट् को उत्तेजित करने का उद्योग किया गया था। पोप को लूथर ने 'शैतान' तथा 'ईशु के शत्रु' की उपाधि दी। लूथर ने

अखंडनीय प्रमाणों द्वारा यह सिद्ध कर दिखाया कि पोपों के सारे आचरण बाइबिल की आज्ञा के विरुद्ध हैं और सच्चे ईसाइयों का कर्तव्य है कि वे पोप रूपी धार्मिक दासता की बेड़ी तोड़ स्वतंत्र हो जायँ। सदा की भांति ये अपीलें भी जनता में बड़ी शीघ्रता से फैलने लगीं।

पोप ने लूथर लिखित ग्रंथ जलवाये थे अतः लूथर ने भी दिल में ठान लिया कि मैं भी पोप का वहिष्कार पत्र सर्वसाधारण के सम्मुख जलाऊँगा। लूथर ने दसवीं जुलाई को लिखा "यदि मेरी पूंछते हो तो मेरा पांसा तो पड़ चुका। मैं न तो पोप के प्रेम से प्रफुल्लित होने का, न उसके क्रोध से भयभीत होने का हूं। अब मुझे पोप से किसी प्रकार का संबंध रखने की इच्छा नहीं है। पोप मुझे नास्तिक कहे, मेरी पुस्तकें जलावे, जो मन में आवे करे मैं भी यदि मुझे इस संसार में कहीं भी आग मिल सकी तो सारी पोप लीला की पुस्तकें तथा पोपीय नास्तिकता को सर्वसाधारण के सम्मुख भस्म करके ही शांत होऊंगा"। नवंबर के अंत में उसने सुना कि मेरे ग्रंथ लोवेन में जलाये गये, वस लूथर से और न रहा गया। एक दिन प्रातःकाल उसने थोड़े से विज्ञापन विटेन्वर्ग के विद्यार्थियों में बँटवा दिये। उस विज्ञापन द्वारा विटेन्वर्ग के 'पवित्र और अध्ययन प्रेमी' विद्यार्थीगण दस दिसम्बर को प्रातःकाल एक "पवित्र और धार्मिक दृश्य' अर्थात् पोपीय धर्म पुस्तकों का अग्नि संस्कार, देखने के लिये स्पाइटल के निकट एल्स्टर फाटक पर एकत्रित होने लगे। एक शिक्षक ने जिसके नाम का पता नहीं चलता पूर्व ही से वहाँ एक चिता बना रक्खी थी। नियत समय पर लूथर उपस्थित हुआ; चिता जलाई गई, और

उस भभकती हुई चिता में, पोप का आज्ञापत्र तथा पोप की प्रभुता का समर्थन करने वाले अन्य बहुत से ग्रंथ झोंक दिये गये। अग्नि में स्वाहा करते समय लूथर ने मंत्रवत् लैटिन भाषा में यह पढ़ा "तूने ईश्वर के पवित्र भक्त को दुःखाया है अतः तुझे अनंत अग्नि चट कर जाय"। यह करने के उपरान्त लूथर तो तुरंत अपने स्थान को लौट गया परंतु विद्यार्थीगण जिनके लिये यह एक आनंदमय उत्सव था वहाँ डटे रहे। उन्होंने उस चिता के चारों ओर प्रदक्षिणा करना और अपना जातीय गान गाना प्रारंभ किया। जब यह सब करके उन्होंने छुट्टी पाई तब तक मध्यान्ह हो आया था। मध्याह्न के उपरान्त पोपके बहिष्कारवाले आज्ञापत्र का अपमान करने के लिये विद्यार्थियों ने एक जुलूस निकाला। जो किताबें लूथर ने जलाई थीं उनकी जितनी प्रतियाँ नगर में मिलीं वे भी सब जला दी गईं। ये सब कृत्य उस दिन प्रातःकाल से संध्या तक होते रहे। दूसरे दिन लूथर ने दर्शकों को उपदेश में बताया कि बिना पोप से नाता तोड़े मुक्ति कदापि नहीं मिल सकती। इस तरह वो लूथर जो चार दिन पहिले पोपके कार्डिनल को साष्टांग प्रणाम करता था आज पोप का पूरा वैरी बन बैठा।

अष्टम् परिच्छेद

लूथर के धार्म्मिक विचार

मानसिक क्रान्ति अथवा विचारों के परिवर्तन विशेष कर धार्म्मिक विचारों के समूल परिवर्तन कभी भी किसी व्यक्ति विशेष मात्र की शिक्षा से नहीं होते। व्यक्ति विशेष जैसे बुद्ध या ईसा, जिन को संसार के विचारों को समूल परिवर्तन करने का सौभाग्य प्राप्त है, केवल एक केन्द्रमात्र थे जिसमें उनके समय की विचार प्रवृत्तियाँ, समाज के हृदय में दूर तक फैली हुई भावनायें, (जो यद्यपि उस समय सर्व साधारण को अव्यक्त थीं परन्तु तब भी अनुभवी विद्वानों को सुस्पष्ट थीं) एकत्रित हो, अव्यक्त से व्यक्त, अदृष्ट से दृष्ट, निःशक्त से शक्त, मूक से वाचाल, बन, इतने अनियंत्रित प्रवाह से वह निकली कि शिवजटा भ्रष्ट भागीरथी के प्रवाह की भांति फिर उनका रोकना नितान्त असंभव हो गया। वे भावनायें, वे विचार प्रवृत्तियां यद्यपि निकली, उस व्यक्ति विशेष के शरीर से परंतु तब भी उस व्यक्ति विशेष का मानसिक क्षेत्र उन प्रवृत्तियों तथा उन भावनाओं का आदिगर्भ कभी नहीं माना जा सकता। उनका गर्भाधान अव्यक्त रूप से निश्चय उस समाज में पूर्व ही हो चुकता है जिस समाज का वह व्यक्ति विशेष उन विचार तथा भावना रूपी संतति को व्यक्ति में लाने वाला एक अंग विशेष होता है। अतएव यह प्रश्न कि सुधारक के युग का

सुधारक पर कितना प्रभाव था—अर्थात् सुधारक ने युग को सुधारा या युग ने सुधारक को सुधारा, पूर्णतया हल नहीं किया जा सकता यदि हम यह सिद्धान्त मान के चलें कि जो जिसका कारण है वह उसका कार्य नहीं हो सकता और जो जिसका कार्य है वह उसका कारण नहीं हो सकता।

संभव है कि नैयायिक इस सिद्धान्त की सर्वत्र अप्रतिहतगति मानें परन्तु ऐतिहासिक गवेषणा करते समय तो इस सिद्धान्त की लगाम बहुत कसकर थामनी पड़ती है। प्रत्येक क्रान्तिकारी ऐतिहासिक व्यक्ति में और उसके युग की ऐतिहासिक अवस्था में इस प्रकार से घात प्रत्याघात का संबन्ध है कि प्रत्येक को बारी बारी एक दूसरे का पिता पुत्र मानना पड़ता है। दोनों ओर की शक्तियों में घात प्रत्याघात प्रारम्भ होता है; युग सुधारक को बनाता है सुधारक युग को बनाता है। यदि एक न होता तो दूसरा, असंभव था। एक था, अतएव दूसरा भी हुआ या यों कहना चाहिये कि एक के होने पर दूसरे का होना अवश्यम्भावी था।

लूथर जिस समय पैदा हुआ वह यौरप का परिवर्तन काल था यौरप की जनता शताब्दियों तक अंधेरे में टटोलने के उपरान्त फिर ज्ञान के प्रभात में बढ़ रही थी। क्रूसेड के युद्ध, नवीन और अज्ञातपूर्व देशों का ज्ञान, छापे की कल, यौनानी और रूमी सभ्यता का प्रादुर्भाव, पोपों के अत्याचार, बढ़ती हुई जातीयता का भाव, साम्राज्यों का संगठन, फ्यूडल प्रथा का नाश, विज्ञान के प्रति बढ़ती हुई रुचि, व्यापारिक प्रतिद्वंद्वता का समावेश, आदि अनेक नवीन शक्तियाँ उस समय के संकुचित बंधनों को प्रबल शक्ति से तोड़ मरोड़ रही थीं। जनता

को एक अव्यक्त सा ज्ञान था कि वह एक नवीन युग की ओर बढ़ रही है। ऐसे समय में यदि पुराना ईसाई धर्म भी समय के अनुसार चलने को तय्यार होता, यदि नवीनकाल के आने की सूचना देने वाले अरुणशिखाओं का गला नास्तिकता के अग्निसंस्कार द्वारा न घोंगा जाता तो लूथर लूथर ही रहता सुधारक कभी न बन पाता। ऐसा नहीं हुआ फल यह हुआ कि अधिक उन्नति शील ईसाई जनता पुराने धर्म से अलग हो गई। लूथर की सफलता का मुख्य रहस्य यही था कि वह अपने युग की आवश्यकता पूरी कर रहा था जो बातें लोगों के हृदय में थीं उन्हें वह मुँह से निकाल मूर्तिमान बना रहा था। लूथर की पुस्तकें छापेखाने से बाहर आते ही धूलि की तरह उड़ जाती थीं कारण कि उनमें अपने युग के रोग की औषधि थी।

जैसा कि अभी तक के वर्णन से विदित हुआ होगा, लूथर एक दमही सुधारक नहीं होगया था। पोप प्रतिष्ठित ईसाई धर्म में धीरे २ उसे दोष दिखाई पड़ने लगे और उनके सुधार का वह उद्योग करने लगा। प्रारम्भ में जब उसने इन्डलजेन्सों पर आक्षेप किये थे, तब उसका केवल तात्पर्य इतना था, कि टटजेल ऐसे दुष्ट व्यक्ति मन मानी रीति से इन्डलजेन्स बेंच कर ईसाई धर्म को दूषित न करने पावें। लूथर लियो के पत्र में एक स्थान पर लिखता है, "परम पवित्र पिता! वे लोग जिनका मैं विरोध करता हूं आपके पवित्र नाम पर धब्बा लगाने का उद्योग करते हैं आपके नाम से मन मानी मूर्खता की बातें बक के धन कमाते हैं और जब उनका विरोध करता हूं कि ये सब आपकी आज्ञायें नहीं हैं तो उलटे मुझ ही को आपका

शत्रु सिद्ध करने का उद्योग करते हैं।" लूथर की यह कभी इच्छा न थी कि वह कोई नया धर्म स्थापित करे। लूथर अपने ऊपर लगाये हुये नास्तिकता के आक्षेप का घोर विरोध करता था और बराबर सफलता पूर्वक सिद्ध करके दिखा देता था कि जो कुछ वह कहता या लिखता है वह सब बाइबिल सम्मत है। लूथर की यह इच्छा थी कि उसके समय का ईसाई धर्म इस तरह से सुधारा जावे कि वह अपनी आदि पवित्रता और स्वच्छता को फिर पहुंच जावे। पोपों को और पोप भक्तों को ये सब अति कटु मालूम पड़ता था और इन विचारों को वे नास्तिकता के विचार कहते थे और कहें भी क्यों न, क्योंकि कहावत ही है कि "अर्थी दोषं न पश्यति"

पोपभक्त पोप को ईशू का प्रत्यक्ष प्रतिनिधि मानते थे। उनका विचार था कि पोप की सत्ता संसार की सब सत्ताओं के ऊपर है और अपने कार्यों के लिये संसार में वह किसी को उत्तरदाई नहीं है। बाइबिल का अर्थ जो पोपों को सम्मत हो वही माननीय है। अन्य किसी को यह अधिकार नहीं है कि वह किसी नवीन रीति से बाइबिल का कोई नवीन अर्थ करे। पोप-भक्त पोप की सत्ता को अपरिमित सिद्ध करने की लालसा में इतने मुग्ध होगये थे कि वे कहने लगे थे कि सत्य कोई वस्तु नहीं है जो पोप कहे वही सत्य है। सच तो यों है कि पोपों ने बाइबिल को तो उठाकर अन्यत्र रख दिया था और अपनी स्वार्थ सिद्धि की बातों को बाइबिल सम्मत कह कर प्रचलित करते थे। यदि कोई महापुरुष इन दोषों के विरुद्ध कुछ कहता सुनता था तो जान हस या प्रेग नगरबासी जीरोम की तरह उसका भी अग्नि संस्कार कर दिया

जाता था।

ईसाई धर्मानुसार मनुष्य के सात* संस्कार होते हैं। इन संस्कारों के विषय में लूथर के सिद्धान्त और पुराने ईसाई धर्म (अर्थात् वर्तमान रोमन कैथालिक धर्म) में बड़ा मत भेद है। लूथर के विचारानुसार मनुष्य एक स्वतंत्र जीव है अतः बलपूर्वक उससे किसी प्रकार का सुकृति करना व्यर्थ और निरर्थक है। जिन धर्म कृत्यों को मनुष्य स्वतंत्र बुद्धिवश और अपने अन्तरात्मा की प्रेरणा से करता है उन्हीं से वह लाभ उठाता है। अतः उसके लिये किसी प्रकार के धर्म संस्कार निश्चित कर देना जिन्हें करने को वह विवश हो, व्यर्थ का शक्ति अपव्यय मात्र है। जिन जिन धर्मों में संस्कार निश्चित कर दिये गये हैं उन धर्मों में यह देखा गया है कि उन २ धर्मों के अनुयायी थोड़े ही दिनों में यह बात भूल गये कि इन संस्कारों का वास्तविक आधार हृदय की पवित्रता है न कि बाह्य कर्म कांडों की अक्षरशः पूर्ति। ईसाई धर्म में पाप का प्रायश्चित्त पश्चात्ताप पाप स्वीकृति, शारीरिक दंड इत्यादि माने गये हैं। अब प्रश्न यह है कि पश्चात्ताप पाप स्वीकृति इत्यादि के अर्थ केवल रोना धोना या औरों के सामने अपने को पापी स्वीकार कर लेना मात्र है या इनका पापी के हृदय की अवस्था से भी कुछ संबंध है। लूथर कहता था कि गिर्जों में जाना तीर्थयात्रा करना माला फेरना शारीरिक कष्ट उठा कर तप करना निराहार व्रत करना, अपने को पापी स्वीकार

---

* वे ये हैं, बपटीजम् (Baptism), कनफरमेशन (Confirmation) यूकेरिस्ट (Eucharist) पेनेंस (Penance) इक्स्ट्रीम अंक्शन (Extreme-unction) होली आर्डर (Holy order) मैट्रीमानी (Matrimony)

करना, इत्यादि जब धर्म द्वारा निश्चित कर दिये जाते हैं तब प्रत्येक पापी की ऐसी धारणा होजाती है कि पाप मोचन के लिये यह पर्याप्त है कि उसने किसी पादड़ी के सन्मुख पाप स्वीकार कर लिया है, दसरोज निराहार व्रत कर लिया है, सौ बार माला फेर, पवित्र स्थान गिर्जे में हो आया है, या किसी तीर्थस्थान की यात्रा कर आया है इत्यादि २। इन वाह्य कर्म कांड के आंडवरों में फँसे होने के कारण उस पापी को कभी स्वप्न में भी यह सोचने का अवसर नहीं मिलता था कि जब तक उसका हृदय पश्चात्ताप से पूर्ण नहीं है, जब तक उसके हृदय में ईश्वर की भक्ति का प्रकाश नहीं फैला है, जब तक वह भविष्य में सच्चे हृदय से पाप न करने का प्रण नहीं करता है तब तक उसे वाह्य आडंवरों से कोई लाभ नहीं होसकता। लूथर के विचारानुसार इन सब बातों से पापी के पाप की निवृत्ति तबही हो सकती है जब वह इन्हें स्वयं अपनी स्वतंत्र वुद्धि से स्वीकार करे। रोना अनुताप पूर्ण हृदय का वाह्य लक्षण है। यदि हृदय अनुताप पूर्ण नहीं है तो रोने से कोई लाभ न होकर वरन् बहुत कुछ हानि ही है। ठीक इसी सिद्धान्त का फल रूप लूथर ने यह भी सिखाया कि पश्चात्ताप आदि कृत्यों के लिये किसी पादड़ी इत्यादि अन्य व्यक्ति के उपस्थित की आवश्यकता नहीं है। पश्चाताप आदि हृदय की अवस्थायें है। इनकी पर्याप्तता या अनपर्याप्तता का ज्ञान पापी को हो सकता है या उस ईश्वर को जिसके सम्मुख वह पश्चात्ताप करता है। पादड़ी विचारा किसी के हृदय को क्या जाने। अतः उसकी उपस्थिति की कोई आवश्यकता नहीं है। ११ अक्टूबर सन् १५३३ ईस्वी को लूथर एक मित्र को यों लिखता

है, "यह सत्य है कि मैंने कहा है कि पाप स्वीकृति एक अच्छा कार्य है। इसी तरह मैं किसी को निराहार व्रत करने या तीर्थ यात्रा करने से भी नहीं रोकता। मेरे सब कहने सुनने का तात्पर्य केवल इतना ही है कि मैं इन कार्यों को व्यक्तियों की विवेक बुद्धियों पर छोड़ देना चाहता हूं (चाहे वे करें चाहे न करें) और इनका न करना मैं कभी घोर पापों में गिनने को प्रस्तुत नहीं हूं। मैं सब मनुष्यों की अंतरात्मा को बिलकुल स्वतंत्र कर दिया चाहता हूं—"

पोपों का ईसाई धर्म सारा ध्यान मनुष्य के वाह्य कृत्यों की ही ओर देता था। यदि धर्म विहित कर्म कांडों को मनुष्य करता जावे तो वह धार्मिक है यदि न करे तो वह पापी है। लूथर कहता था कि धर्मोपदेशकों का कर्तव्य है कि वे सारा जोर इस बात के सिखाने पर दें कि धर्म का सम्बंध हृदय की पवित्रता तथा स्वच्छता से है। यदि मनुष्य का हृदय पवित्र है तो वह धार्मिक है यदि उसका हृदय पवित्र नहीं है तो वह अधार्मिक है। "तुम पूछते हो" लूथर लिखता है "कि "मास" पूजा किस प्रकार की जाय। मैं प्रार्थना करता हूं मुझ से इन विवरणों और विस्तारों को न पूँछो। मेरा कहना यही है कि इन सब विषयों में अन्तरात्मा को स्वतंत्र रक्खो। किसी भी पूजा करने की विधियाँ इतने महत्व की कभी नहीं हो सकतीं कि हम अपनी आत्मा को उन विधि विशेषों का दास बना डालें। जितने नियम उपनियम अभी तक बने हैं मेरी बुद्धि में तो वे ही आवश्यकता से अधिक हैं।"

लूथर के पूर्व सारे धार्मिक कृत्य लैटिन भाषा में होते थे। लैटिन कुछ इने गिने पादड़ियों को छोड़ और किसी को नहीं

आती थी। लूथर ने सिखाया कि प्रत्येक धार्मिक कृत्य प्रत्येक पूजा उस भाषा में होना चाहिये जो उन धर्मानुयायियों की मातृ भाषा हो। ऐसा करने से उसका तात्पर्य यह था कि प्रत्येक व्यक्ति जो करे उसे समझे और परमात्मा के सम्मुख जाने के लिये लैटिन भाषा विज्ञ किसी पादड़ी की वकालत की उसे कोई आवश्यकता न रहे। लूथर लिखता है "बपतिस्मा हम भी करते हैं भेद इतना है कि वह मातृभाषा (जर्मनी भाषा) में होता है"।

पोपों के युग में महन्तों के मठ और साधुओं के संघ बरसाती मेंढकोंकी भांति बढ़ते जाते थे। इन सब साधु महन्तों को आजन्म अविवाहित रहने की शपथ खानी पड़ती थी। लूथर यद्यपि स्वयं महन्त था परन्तु तब भी वह इन साधु मठ और संघों से बड़ा घबड़ाता था। अविवाहित रहने की शपथ तो उसे विशेषकर कांटे की भांति चुभती थी क्योंकि उसने महन्त होकर खूब अनुभव प्राप्त कर लिया था कि यह शपथ ही मठों और संघों के बढ़ते हुए व्यभिचार का कारण है। लूथर ने यह शिक्षा दी कि विवाह करना सबका धर्म है चाहे साधू हो चाहे गृहस्थ। लूथर लिखता है "यह परमात्मा की आज्ञा के विरुद्ध है कि हम मनुष्यों से ऐसे प्रण करा लें कि जिन्हें मानुषिक स्वभाव सदा तोड़ने को तयार रहता है......यदि मेरे घोर शत्रु इस बात को जानते कि मठों में कैसे २ व्यभिचार होते हैं तो मुझे पूर्ण आशा है कि मठ और साधु संघ की प्रथा नाश करने में वे मुझे पूर्ण सहायता देते......" रोमन कैथालिक साधु होने को एक संस्कार मानता था अतः साधु होने के उपरान्त सदा साधु ही रहता था वह फिर मरने के पूर्व गृहस्थ नहीं हो

सकता था। लूथर साधु होना संस्कार नहीं मानता था। उस के विचारानुसार प्रत्येक साधु जब चाहे साधु कर्म छोड़ गृहस्थ बन सकता है। लूथर कहता था कि साधु और कृषक में यही भेद है कि साधु का कर्म धर्मोपदेश है और कृषक का कर्म कृषी है। कर्म भेद को छोड़ इन दोनों में संस्कार भेद कुछ भी नहीं है, अतः साधु जब चाहे गृहस्थाश्रम को लौट सकता है।

बाइबिल के विषय में लूथर का विचार था कि बाइबिल समझने के लिये किसी को भी बड़े भाष्यों के पढ़ने तथा अनेकों बाइबिल अध्ययन के नियमों को जानने की कोई आवश्यकता नहीं है। बाइबिल के अर्थ सीधे और सरल हैं। यदि मनुष्य वास्तव में बाइबिल समझना चाहता है तो बिना भाष्यकारों की सहायता के भी वह बाइबिल समझ सकता है। बाइबिल के भाष्यकारों पर लूथर को बहुत कम श्रद्धा थी।

नवम् परिच्छेद

लूथर राजसभा में

जर्मनी का सम्राट मैक्समीलियन अचानक १२ जनवरी सन् १५१९ को मर गया, उसके स्थान पर चार्ल्स पंचम सम्राट हुआ। नवीन जर्मन सम्राट ने वर्मस नगर में अपना प्रथम दर्बार करने की घोषणा दी। वर्मस का राजदर्बार यद्यपि केवल लूथर का न्याय करने को नहीं किया गया था, परन्तु घटना चक्रवश इतिहास उसे इसी लिये स्मरण करता है कि वहां लूथर का न्याय किया गया था। फ्रांस के सम्राट फ्रैंसिस प्रथम में और जर्मनी के सम्राट चार्ल्स पंचम में घोर प्रतिद्वंद्वता थी। १३५६ ईसवी से जर्मनी के सम्राट का पद पैतृक नहीं रहा था। सात* प्रधान सामन्तों को यह अधिकार दिया गया था कि वे चाहे जिसको सम्राट चुनें। जर्मनी का सम्राट चुनने का अधिकार प्राप्त इन सात सामन्तों में तीन पादड़ी थे और चार सांसारिक राजे थे। इन सातों की इलेक्टर उपाधि इसी कारण थी कि इन्हें सम्राट इलेक्ट अर्थात् चुनने का अधिकार प्राप्त था। फ्रैंसिस प्रथम और चार्ल्स दोनों ने सम्राट होने के लिये खूब घूसखोरी की चालें चलीं परन्तु अंत में चार्ल्स ही सम्राट चुना गया। फ्रैंसिस प्रथम को इस हार से बड़ा दुःख

---

* मेज़ का बड़ा पादड़ी, कलोन और ट्रीव्जक बड़े पादड़ी, सैक्सनी बैडेन्वर्ग, वहोमिया और पलेटाइन, के राजे ये सात इलेक्टर कहे जाते थे।

हुआ और वह चार्ल्स से बड़ी ईर्षा रखने लगा। दोनों चार्ल्स और फ्रैंसिस पोप को अपना मित्र बनाने का उद्योग कर रहे थे कारण कि जिसकी ओर पोप होता था उसकी तलवार दुधारी हो जाती थी और वह अपने शत्रु से स्पष्ट कह सकता था कि "क्रोधस्य ज्वलितु झटित्यवसरश्चापेन शापेन वा"।

पोप अपने शत्रु लूथर से बहुत घबड़ा गया था अतः पोप लूथर को चार्ल्स की सहायता से कुचलना चाहता था। पोप को चार्ल्स की सहायता लूथर के नाश के लिये चाहिये थी और चार्ल्स को पोप की सहायता फ्रैंसिस को नीचा दिखाने के लिये चाहिये थी। दोनों स्वार्थियों में समझौता हो गया। पोप चाहता था कि चार्ल्स लूथर को योंही दंड दे दे। चार्ल्स भी पोप को प्रसन्न करने के लिये सब कुछ करने को प्रस्तुत था। परंतु लूथर की रक्षा सारा जर्मनी करने को प्रस्तुत था। अतः चार्ल्स का यह साहस न हुआ कि वह पोप की प्रसन्नता के लिये सारे जर्मनी में विद्रोहाग्नि भड़कावे। चार्ल्स को सबसे अच्छी विधि यही देख पड़ी कि वह लूथर को वर्म्स की राजसभा में बुलाकर कम से कम न्याय का दिखावा निश्चय करे।

अलीयन्डर पोप की ओर से इस बात का बड़ा उद्योग कर रहा था कि लूथर को वर्म्स की सभा में आने का अवकाश न मिले क्योंकि उसे भय था कि ऐसा करने से लूथर को अपने बचावे का समय मिलेगा और उसकी उपस्थिति और उपदेश को देख सुन उसके पक्षवालों का उत्साह द्विगुणित हो जायगा। अलीयन्डर चार्ल्स से मिला उसने चार्ल्स से स्पष्ट कह

दिया कि नास्तिकों का न्याय करने का अधिकार एक मात्र पोप ही को है क्योंकि वह समस्त ईसाई संसार का धर्म पिता है भौतिक सम्राटों का तो एक मात्र इतना ही कर्तव्य है कि पोप जिसे नास्तिक कहे उसे वे अपनी भौतिक शक्ति की सहायता से पोप की इच्छानुसार दंड दे। अलीयन्डर ने कहा कि लूथर को राजसभा में बुलाकर उसका न्याय करना मानो पोप का धार्मिक अधिकार छीन कर उसका अपमान करना है। जब पोप ने लूथर को नास्तिक कह दिया तब किसी भौतिक शक्ति को पोप के न्याय में संदेह करने का साहस कैसे हो रहा है। अलीयन्डर ने बड़ी भारी वक्तृता दी और लूथर को पूरा नास्तिक सिद्ध करने में कुछ उठा न रक्खा। वक्तृता समाप्त होने के उपरान्त उसने चार्ल्स से कहा, "मुझे केवल दो प्रार्थनायें करनी हैं—प्रथम तो आप घोषणा करा दें कि लूथर लिखित जितने ग्रंथ मिलें सब जला दिये जावें, दूसरी यह कि या तो आप स्वयं लूथर को प्राण दंड दें या आजन्म कारागार दें या उसे पोप के हवाले कर दें"। इस धर्मोपदेश का यह फल हुआ कि चार्ल्स अलीयन्डर की इच्छा पूरी करने को प्रस्तुत हो गया। लूथर के हितैषी बड़े घबड़ाये। उन सब ने मिल कर ऐसी नीति का घोर विरोध किया। अंत में चार्ल्स को अपने सामन्तों का कहना मानना पड़ा और लूथर को बुलाने के लिये उसके नाम निम्नलिखित आज्ञा पत्र निकाला गया। "माननीय, प्यारे भक्त लूथर! हमने और पवित्र रोम साम्राज्य की सभा ने जो इस समय वर्म्स में एकत्रित है यह निश्चित किया है कि तुमसे तुम्हारे धर्म तथा धार्मिक ग्रंथों के विषय में कुछ स्पष्टीकरण कराया जाय। अतः तुम्हें यह 'अभयदान पत्र'

भेजा जाता है कि तुम अपने को अभय समझो इस अभयदान पत्र के पाते ही तुम तुरंत रवाना होजाओ, क्योंकि ऐसी ही हमारी इच्छा है और हमारे आज्ञापत्र के पाने के बीस दिवस उपरान्त राजसभा में आ उपस्थित हो। तुम्हें किसी प्रकार के बलात्कार अथवा गुप्तपाश का भय न करना चाहिये। हमारी इच्छा है कि तुम हमारी राज-प्रतिज्ञा का विश्वास करो और हमारी तीव्र इच्छा का अनुगमन करो"। जिसे पोप ने नास्तिक कह कर दंड देने को कहा है उसे "माननीय प्यारे भक्त लूथर" संबोधित करके साम्राज्य सभा इतने मान से बुला रही है यह अलीयन्डर को असह्य प्रतीत हुआ। उसने इसका घोर प्रतिवाद किया। परंतु बिचारा करे क्या पोप का प्रताप सूर्य अस्ताचल की ओर बढ़ रहा था इसके आगे का वर्णन लूथर स्वयं यों करता है "राजदूत ने मुझे मंगलवार को बुलाकर अभयदान पत्र दिखाया। यह अभयदान पत्र सम्राट तथा और राजे महाराजों की ओर से था; परंतु उस ही के दूसरे दिन अर्थात् बुद्ध ही को उस राजपत्र की प्रतिज्ञायें वर्म्स में तोड़ी गईं। वर्म्स में मैं नास्तिक स्थिर किया गया और मेरी लिखी पुस्तकें जलाई गईं। इन घटनाओं का संवाद मुझे वर्म्स पहुँचने पर मिला। यही नहीं, मेरी दंड आज्ञा पूर्व ही सब नगरों में प्रकाशित हो चुकी थी यहां तक कि राजदूत ने मुझ से पूछा भी कि क्या मैं यह सब देख सुनकर भी वर्म्स जाने को प्रस्तुत हूं। मैंने उत्तर दिया कि मैं वर्म्स जाऊंगा चाहे वहाँ इतने शैतान क्यों न हों जितने इस खपरैल पर खपड़े हैं। जब मैं वर्म्स के निकट आपेनहीम के पास पहुंचा तो वहाँ का रहने वाला मास्टर बूसर मुझे वर्म्स जाने से बड़ा निषेध करने

लगा । उसने कहा कि सम्राट के पादड़ी ने मुझ से कहला भेजा है कि आप वर्म्स कदापि न जायँ नहीं तो आपको वे लोग जला देंगे ।...... यह सब करने से उन दुष्टों का तात्पर्य यह था कि मैं अपने मार्ग में देर करूं और अभयदान पत्र की अवधि बीत जाय । वे जानते थे कि यदि मैं इन सब सोच विचारों में पड़ तीन दिन और ठहर जाऊँगा तो मेरा अभय-दान पत्र मुझे न बचा सकेगा । मैं वर्म्स में न घुसने पाऊंगा और बिना मेरी सुनवाई हुए ही मुझे दंड दे दिया जायगा । परंतु मैं निर्दोष था और अपनी निर्दोषता के भरोसे मैं बराबर चलता ही गया । मैं वर्म्स पहुँच गया और मैंने फ्रेडरिक के मंत्री को समाचार भेजवाया कि मैं आगया हूं और मुझे समाचार दें कि मुझे कहाँ ठहरना होगा । मेरे आने का समाचार सुन सब को बड़ा अचंभा हुआ क्योंकि उनको विश्वास था कि मेरा भय मुझे दुष्टोंके जाल में फंसा देगा और मैं निश्चित समय के भीतर वर्म्स कदापि न पहुंच पाऊंगा ।

फ्रेडरिक के भेजे हुये दो सभ्य पुरुष मेरे पास आये, और मुझे उस गृह को ले गये जहां मेरा ठहरना निश्चित हुआ था । उस समय तो मेरे पास कोई राजे महराजे मिलने न आये लेकिन कुछ ने मेरी ओर बड़ी दृढ़ता से देखा । ये वे राजे महाराजे थे जिन्होंने पूर्व ही से सम्राट को एक विज्ञप्ति दे रखी थी । इस विज्ञप्ति में पोप के प्रति लगभग ४०० दोष लगाये गये थे और सम्राट से प्रार्थना की गई थी कि आप पोप को इन सब दोषों का सुधार करने के लिये विवश करें, और यदि ऐसा न होगा तो हम अपने अपने रोग की औषध आप कर लेंगे ।

'पोप ने सम्राट को लिखा था की आप को अभयदान पत्र की लाज रखने की कोई आवश्यकता नहीं है । पादड़ी लोग सम्राट को पोप की प्रार्थना पूर्ण करने के लिये उत्साहित कर रहे थे । परन्तु राजे महाराजे ऐसा करने को प्रस्तुत न थे और बहुत कुछ संभव था कि यदि ऐसा किया जाता तो बहुत बड़ा गोल माल खड़ा हो जाता । इन सब घटनाओं ने जनता में मेरी ख्याति और भी बढ़ा दी । और मेरे शत्रु जितना मैं उनसे नहीं डरता था उससे कहीं ज्यादा मुझसे डरने लगे ।

लूथर संध्या को ४ बजे सभा में बुलाया गया। लूथर को इस समय अपने सारे धैर्य्य को एकत्रित करने की आवश्यकता पड़ी । लूथर राजसभा में पहुंचा । राजसभा में स्पेन, इटली आस्ट्रिया, जर्मनी आदि देशों के बड़े २ राजे महाराजे और उच्च पदस्थ पादड़ी गण बड़े ऐश्वर्य से अपने दिव्य वसन भूषण पहिने हुये यथा स्थान बैठे थे । लूथर ने यद्यपि बड़ी वीरता के साथ पुस्तकों द्वारा पोप और उसके अनुयायियों से युद्ध किया था परन्तु उस कृषक पुत्र को ऐसी ऐश्वर्यमय राजसभाओं में जाने का अभ्यास न था। वह इस महा-सभा के सामने आने पर एक प्रकार से घवड़ा गया। उसके सामने ही नवयुवक सम्राट अपने स्पेनी पादड़ी और सामंतों से घिरा हुआ बैठा था। सारी राजसभा गंभीरिता की मूर्ति बनी हुई थी। यद्यपि सबकी दृष्टि उसही की ओर थी परन्तु लूथर उन दृष्टियों में न तो किसी प्रकार से उसे उत्साहित करने की इच्छा न भर्त्सना देने का लक्षण पाता था। उसके एक ओर एक मेज पर कुछ पुस्तकों का ढेर

लगा था।

सभा का कार्य प्रारंभ हुआ। सम्राट के दूतने खड़े होकर लूथर को आज्ञा दी कि जब तक तुम्हें बोलने का कोई अधिकार नहीं है जब तक तुम से कुछ पूंछा न जाय। दूत के बैठने के उपरान्त ट्राएर का बड़ा पादड़ो खड़ा हुआ। उसने पहिले लैटिन और फिर जर्मन भाषा में लूथर से कहा कि सम्राट की आज्ञा से मैं प्रश्न पूछता हूं। "प्रथम क्या तुम स्वीकार करते हो कि सामने ढेर लगी हुई पुस्तकों के रचयिता तुम्ही हो? द्वितीय क्या तुम इन पुस्तकों के सिद्धान्तों से भविष्य में विमुख होने को प्रस्तुत हो?, इतने में डाक्टर जीरोम जो लूथर का एक प्रकार से वकील था। बीच ही में बोल उठा। कृपा कर इन पुस्तकों के नाम पढ़ डालिये। इसके उत्तर में एक एक करके पुस्तकों के नाम पढ़े गये। इसके उपरान्त लूथर ने जो बहुत भयभीत होगया था बड़े धीमें स्वर में कहा "मैं इन पुस्तकों का रचयिता होना अस्वीकार नहीं कर सकता। परन्तु दूसरे प्रश्न का उत्तर देना कठिन है,,। (इस बीच में लूथर ने अपना धैर्य एकत्रित कर लिया था और अब साहस के साथ बोल रहा था) इस प्रश्न के उत्तर और मेरे धार्मिक विश्वास तथा आत्मा की मुक्ति से बड़ा घनिष्ट संबन्ध है। यह प्रश्न बाइबिल से संबन्ध रखता है जिससे बढ कर महत्व की वस्तु न स्वर्ग में है न इस संसार में, यदि मैं बिना सोचे विचारे बोलूं तो बहुत कुछ संभव है कि मैं अति साहस वश प्रभु ईशु की इस आज्ञा का उल्लंघन कर जाऊं कि "जो कोई मुझे मनुष्यों के सम्मुख अस्वीकार करेगा उसे मैं अपने स्वर्गीय पिता के सामने अस्वीकार करूंगा,, अतः मैं दयानिधि

सम्राट से इस प्रश्न पर विचार करने के लिये कुछ समय पाने की प्रार्थना करता हूं" ।

इस विचित्र प्रार्थना को सुनकर उसके मित्र और शत्रु दोनों आश्चर्य में आगये । उसके शत्रु जो लूथर को महा डरपोंक समझते थे इस बात से अचंभा करने लगे कि लूथर में इतना साहस कि वह इस बड़ी सभा में अपने नास्तिकता के विचारों से विमुख होने के लिये आना कानी करता है ! उस के मित्र इस कारण आश्चर्य करने लगे कि लूथर इस सभा में आकर इतना सहम गया है कि अपने जीवन के सिद्धान्तों से विमुख होने के प्रश्न पर भी विचार करने का समय मांगता है ! सम्राट ने अपने मंत्रियों से मंत्रणा कर उसे २४ घंटे का समय दिया और लूथर अपने निवास स्थान को लौट गया ।

लथर की राजसभा में पहिले दिन की अवस्था कुछ ऐसी न थी, कि सभासदों में उसकी ख्याति बहुत कुछ बढ़ जाती । चार्ल्स पंचम ने स्वयं कहा "इस मनुष्य के बनाये तो मैं नास्तिक कभी नहीं बन सकता ।" । अलीयन्डर कहता है कि लूथर की उस दिन की अवस्था देख कर फ्रेडरिक स्वयं कुछ असन्तुष्ट सा होगया था । जो कुछ भी क्यों न हो परन्तु यह निश्चित है कि सर्व्व साधारण की दृष्टि में उसकी उस रोज की गति भी वैसी ही आदरणीय बनी रही जैसी की सर्वदा । उस के निवास स्थान लौटते समय तासी बजाती हुई जनता की अपार भीड़ थी । सहस्रों मित्र सहस्रों विधियों से उसका उत्साह बढ़ा रहे थे । एक ने तो यहां तक चिल्लाकर कहा, "वह समाधि धन्य होगी जिसमें तेरा शरीर सोवेगा"। उस ही दिन की संध्या को (१७ अप्रैल) लूथर अपने एक मित्र के पत्र में

यों लिखता है, "लेकिन मैं एक अक्षर से भी विमुख न होऊंगा" प्रभु इशु मेरे अनुकूल रहे। संध्या तक अपने को इस तरह दृढ़ बना लूथर दूसरे दिन की प्रतीक्षा करने लगा।

अट्ठारवीं तारीख की सभा जिस स्थान पर हुई थी वह बहुत अधिक बड़ा था। परन्तु उस दिन भीड़ इतनी अधिक थी कि बड़े बड़े राजा महराजाओं को भी स्थान मिलना दुष्कर होगया। लूथर नियत समय पर सभा में उपस्थित हुआ। परन्तु सभा उस दिन कुछ कारणों वश नियत समय से अपना काम प्रारम्भ न कर सकी। ४ बजे का समय नियत था परन्तु सभाने लगभग ६ बजे अपना काम प्रारम्भ किया पूर्व दिन का द्वितीय प्रश्न उससे फिर पूंछा गया। अब की बार लूथर ने बड़ी दृढ़ता से उत्तर देना प्रारम्भ किया। उसने अपने सारे ग्रन्थों को तीन बिधि के बताये। उसने कहा मेरे कुछ ग्रंथ तो ऐसे हैं जिनमें केवल वे ही बातें लिखी हैं जो बाइबिल में लिखो हैं। अतः ईसाई होता हुआ उनसे मैं कैसे विमुख हो सक्ता हूं। दूसरी विधि के वे ग्रंथ हैं जिनके द्वारा मैंने पोप के कृत्यों पर आक्षेप किया है; वे आक्षेप इतने सत्य संसार—विदित और स्पष्ट हैं कि उनसे विमुख होना मेरी शक्ति के बाहर है। बाकी रहे वे ग्रंथ जिनमें उसने अपने प्रतिद्वन्दियों के ऊपर आक्षेप किये हैं। उसने कहा मैं मानता हूं कि इन आक्षेपों को करते समय में आवश्यकता से अधिक कटु हो गया था परन्तु तब भी मैं उनको तब तक लौटा नहीं सक्ता जब तक उनमें कोई त्रुटि न दिखा दी जाय। लूथर ने अपनी ये वक्तृता जो न बहुत लम्बी थी न छोटी, बड़ी दृढ़ता और सौन्दर्य के साथ दी थी।

इसके उपरान्त उसका पूर्व का प्रतिद्वन्दी "ईक" उठ खड़ा हुआ उसने कहा लूथर के ग्रंथों में भी वेही दोष हैं जो बाइक्लिफ,, या "हस" के ग्रंथों में थे और फिर उसने लूथर की ओर मुख करके कहा "दो शब्दों में उत्तर दो 'हां' या 'नहीं' मुझे लल्लो चप्पो नहीं अच्छी लगती। इतना सुनते ही लूथर भड़क उठा और बोला "लीजिये यदि आप लोग सरल उत्तर चाहते हैं तो सरल ही उत्तर लीजिये। जब तक बाइबिल से या सरल और स्पष्ट कारणों द्वारा मेरे दोष मुझे न दिखा दिये जायँ तब तक मैं अपने कहे और लिखे एक शब्द से भी विमुख नहीं हो सक्ता हूं। न होना चाहता हूं। क्योंकि अंतरात्मा से विमुख होना न उचित है न धर्म है ईश्वर मेरी सहायता करे"।

ये सुनकर सभासद्गण लोग विचार करने के लिये अलग चले गये और उन्होंने लौटकर यों कहना प्रारंभ किया "मार्टिन! तुम एक ऐसी बात कह-रहे हो जो तुम्हारे ऐसे पुरुष को कहना उचित नहीं है। जो प्रश्न तुम से किया गया था उसका उत्तर तुमने कुछ नहीं दिया। तुमने उन विवाद विषयों को पुनः जीवित किया है जो कान्स्टैन्स की सभा द्वारा सदा के लिये दंडित माने जा चुके हैं। तुम चाहते हो कि वेही दोष बाइबिल के प्रमाण से पुनर्वार दिखाये जायँ। लेकिन यदि प्रत्येक मनुष्यों को यह स्वतंत्रता दी जाय कि वह उन विषयों को जो धर्म सभाओं द्वारा सदा के लिये निर्णीत हो चुके हैं अपनी इच्छानुसार जब चाहे उठा सक्ता है तो प्रश्न यह होता है कि फिर क्या काई धर्म सिद्धान्त निश्चित कहा जा सक्ता है? उदाहरण के लिये आज तुम कान्स्टैन्स की धर्मसभा का निर्णय मानने को प्रस्तुत नहीं हो। कल तुम समस्त धर्म सभाओं

को अप्रमाणिक कह सक्ते हो। फिर बताओ प्रणाम कौन वस्तु हो सकेगी। अतः सम्राट तुम से संक्षित और सरल उत्तर चाहते हैं कि तुम अपने सब सिद्धान्तों की रक्षा करने को प्रस्तुत हो या उनमें से किसी के विमुख होना चाहते हो"। लूथर ने इसके उत्तर में कहा कि जो कुछ मैंने कहा है उससे अधिक मैं कुछ नहीं कह सकता। "जब तक बाइविल के स्पष्ट प्रमाणों द्वारा मेरे दोष न दिखाये जायँ मैं अपने एक अक्षर से भी फिरने वाला नहीं हूं" । यदि धर्म सभाओं की बात चलाते हो तो धर्म सभाओं के निर्णयकोई धार्मिक सिद्धान्त नहीं हैं। धर्म सभाओं के निर्णय वहुधा परस्पर विरोधी और प्रमाद पूर्ण हुए हैं। अतः वे प्रमाण नहीं माने जा सकते; और यह कि वो बाइबिल में लिखी बातों से कभी विमुख नहीं हो सकता" । इस पर सभा की ओर से कहा गया कि क्या तुम धर्म सभाओं के दोष दिखा सकते हो। लूथर ने बड़े आवेश से कहा कि ऐसा करने को मैं हर समय प्रस्तुत हूं।

सम्राट ने यह समझ कर कि अधिक वाद विवाद से कुछ लाभ नहीं है सभा विसर्जित कर दी। लूथर अपने निवास स्थान को लौट आया। स्थान पर पहुँचते ही उसने हाथ ऊपर उठा कर बड़े आनंद से कहा "मेरी अग्नि परीक्षा पूरी हो गई। मैं अग्नि परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया। उस ही दिन उसने फ्रेडरिक के मंत्री से कहा—"यदि मेरे सहस्र मस्तक होते और एक २ कर काटे जाते तब भी मैं अपने सिद्धान्तों से विमुख होने वाला न था"। फ्रेडरिक ने अपने मंत्री से कहा कि 'आज लूथर की दृढ़ता से मैं बहुत संतुष्ट हुआ'। संतुष्ट होने की बात भी थी लूथर ने दृढ़ता पूर्वक यह दिखा दिया

था कि बाइबिल, अंतरात्मा और बुद्धि के प्रमाणों के आगे पोप, पादड़ी और धर्म सभाओं के निर्णय कोई वस्तु नहीं है।

उन्नीस अप्रैल के प्रातःकाल सम्राट ने फिर सभा की। लूथर को क्या दंड दिया जाय इस विषय पर विचार होने वाला था। सभा ने कहा कि दंड निश्चित करने के लिये हमें थोड़ा समय चाहिये। सम्राट ने इसके उत्तर में कहा-कि पहिले मेरा विचार सुन लो। यह कह कर सम्राट ने एक बड़ा चिट्ठा निकाला जिसमें लिखा था कि सम्राट तथा उसके पूर्वज सदा से सच्चे पोपभक्त होते चले आये हैं। अतः जो कुछ उसके पूर्वजों की सम्मति और जो धर्म सभाओं की आज्ञा है वही वह भी करेगा। लूथर ने अपने विचारों से स्पष्ट कर दिया है विवाह सारे ईसाई संसार का शत्रु है। समस्त सभाने कल जान लिया कि लूथर कैसा हठी नास्तिक है। अतः अब उससे कसी प्रकार का संबन्ध रखना व्यर्थ है। हमारी इच्छा है कि उसके अभयदान की अवधि २१ दिन के लिये और बढ़ा दी जाय और इस अवधि के पूर्व ही लूथर अपने स्थान को पहुंचा दिया जाय। परन्तु इस अवधि के भीतर उसे किसी प्रकार का उपदेशादि देने का अधिकार न होगा। "और जैसा कि मैंने पूर्व कहा है ये हमारी राजेच्छा है इसके उपरान्त उसको वही दंड दिया जाय जोकि सच्चे और प्रमाणित नास्तिक को दिया जाना चाहिये,,।

यद्यपि सम्राट ने अपनी इच्छा को इतना स्पष्ट कह दिया था परन्तु तब भी बहुत ऐसे सभासद थे जिनका विचार था कि अभी लूथर को और समय मिलना चाहिये। सम्राट के उपरोक्त विचार पर शुक्र और शनिश्चर को बराबर वाद

विवाद होता रहा। अंत में यही निश्चय हुआ कि लूथर को अभी और समय दिया जाय। सब सभासदों ने मिलकर सम्राट से प्रार्थना की कि बहुत बड़े बडे विद्वान् पादड़ियों का एक कमीशन लूथर के पास भेजा जाय। और वे लुथर से शास्त्रार्थ कर उसे उपदेश देने का उद्योग करें। यदि तब भी लूथर अपनी नास्तिकता पर दृढ़ रहे तो उसे समुचित दंड दिया जाय। सम्राट ने अपना विचार ऐसा दृढ़ कर लिया था कि यद्यपि यह प्रार्थना बहुत सहल थी यदि कुछ विचित्र घटनायें उसे विवश न करतीं तब भी वह उसे कदापि न मानता उन्नीस और बीस अप्रैल की रात को राजद्रोह के स्पष्ट लक्षण दिखाई पड़ने लगे। उसके शयनागार में एक पत्र मिला जिसमें लिखा था कि "उस देश के भाग्य फूट गये हैं जिसका राजा बच्चा है। नगर में यत्रतत्र विज्ञापन चिपके हुए मिले जिनके द्वारा लगभग आठ सहस्त्र योद्धाओं ने यह सूचना दी थी कि यदि लूथर को कुछ कष्ट पहुंचाया गया तो उस पोप के विरुद्ध घोर युद्ध करेंगे। ब्रैंडन वर्ग और सैक्सनी के राजाओं ने बहुत दबाव डाला। इन सब घटनाओं वश सम्राट चार्ल्स पंचम ने सभा की बात मान ली। सम्राट ने कहा कि हमारा विचार पलट नहीं सकता परन्तु तब भी हम तीन दिवसों का समय देने को तैय्यार हैं। यदि इन तीन दिवसों के अंदर लूथर अपनी नास्तिकता स्वीकार कर उसे त्यागने को प्रस्तुत होजाय तो बहुत अच्छी बात है और नहीं तो उसको दंड दिया जायगा।

आठ उच्च पदस्थ व्यक्तियों का एक कमीशन लूथर के पास गया। उनके वाद विवाद का विवरण देना व्यर्थ है। लूथर ने पूर्ववत् केवल एक बाइबिल ही को प्रमाण मानने की हठ की

बाइबिल के अतिरिक्त यदि उसके लिये और कोई वस्तु प्रमाण थी तो वह बुद्धि और तर्क था। भला ऐसी अवस्था में समझौता होना कब संभव था। कमीशन लौट आया। पूर्व इसके कि कमीशन अपनी रिपोर्ट राजसभा को दे, कमीशन के अध्यक्ष ने लूथर को अपने निज के कमरे में बुलाकर बहुत कुछ समझाया बुझाया। परन्तु लूथर अपने विचारों से न डिगा। यह सब हो जाने पर सभा को कमीशन की असफलता की रिपोर्ट की गई। इसके बाद राजसभा ने अपने और कार्य करना शुरू किये जिनके लिये वास्तव में सभा की गई थी और जो अभी तक लूथर के कारण रुके पड़े थे। राजसभा की अंतिम बैठक २५ मई को हुई।

यद्यपि लूथर भी दंडाज्ञा पर सम्राट के हस्ताक्षर २६ मई को हुए थे परन्तु उसमें तारीख आठ मई की डाली गई थी उस राजाज्ञा से पहले तो लूथर की नास्तिकता का बड़ा जुगुप्सित वर्णन किया गया था। उसके उपरान्त सम्राट के न्याय और पोप की निःसीम दयालुता की शेखी बघारी गई थी। इसके उपरान्त ये लिखा गया था कि आज से लूथर और उसके अनुयायी राज-रक्षा तथा कानून की शरण से वंचित किये गये। (जिसका तात्पर्य यह होता था कि लूथर तथा उनके अनुयायियों के मारने तथा लूटनेवाले को राजदंड का कोई भय नहीं है) और उसकी सारी पुस्तकें जहाँ पाई जावें जला दी जावें।

लूथर २६ अप्रैल को विटेनवर्ग के लिये लौट पड़ा। उसकी रक्षा के लिये वेही लोग उसे विटेन्वर्ग से लाये थे। लुथर उचित २ दूरी पर पड़ाव डालता हुआ विटेन्वर्ग की ओर

बढ़ रहा था कि शनिश्चर के दिन ४ मई को एक छोटे से नाले के करीब थुरिंजियन बन के बीच उसके ऊपर कुछ अश्वारोहियों ने आक्रमण किया और इतनी सफ़ाई से लूथर को पकड़ ले गये कि किसी के किये कुछ न बन पड़ा। लूथर के पकड़ ले जाने वाले शत्रु थे या मित्र यह बात किसी को मालूम न थी। लोग लूथर के विषय में मनमानी गप्पें लड़ाने लगे। कोई कहता था लूथर कहीं छिप रहा है दूसरे कहते थे कि लूथर मार डाला गया है परन्तु वास्तविक घटना का किसी को कुछ पता न था।

दशम परिच्छेद

लूथर का अज्ञातवास

सेकसनी के प्रभु फ्रेडरिक को विश्वास होगया था कि लूथर को अपनी हठवश घोर दंड सहना पड़ेगा। फ्रेडरिक ने सोचा कि राजसभा के बहुमत द्वारा दंडित किये जाने पर उसके लिये यह असंभव होगा कि वह पूर्ववत् लूथर को अपनी शरण में रख सके और यदि वह लूथर को अपनी शरण से वंचित करेगा तो लूथर के शत्रु उसे बिना नाश किये न मानेंगे। यही सब सोचकर फ्रेडरिक ने यह निश्चित किया कि लूथर को छिपाकर रखना चाहिये। यही कारण था कि फ्रेडरिक ने लूथर को बहुत शीघ्र विटेन्वर्ग की ओर जाने की आज्ञा दी थी। ऐसा करने से फ्रेडरिक की हार्दिक इच्छा यह थी कि वह लूथर को दंडित होने के पूर्व ही छिपा सके। लूथर को छिपा रखने की बात इतनी गुप्त रक्खी गई थी कि यह फ्रेडरिक के भाई जान तक को अविदित थी। सच पूछिये तो लूथर स्वयं अपने छिपाये जाने के विषय में कुछ नहीं जानता था। यद्यपि जीवनी लेखकों का इस विषय में मतभेद है। लूथर को इस प्रकार छिपा रखने से कई लाभ हुए। लूथर के शत्रु लूथर से बदला न ले सके। लूथर के मित्र और उदासीन व्यक्ति भी इस विचार से कि पोप पक्षवाले ऐसे दुष्ट हैं कि उन्होंने अभयदान की अवधि के भीतर ही लूथर को पकड़ कर बंदी कर लिया

और मार डाला, पोप पक्षवालों से इतने रुष्ट हो गये थे कि मरने मारने को कटिबद्ध होगये।

अपने बंदी होने का वर्णन लूथर स्वयं यों करता है "मैंने अपने माता पिता से मिलने के लिये बन पार किया और उनसे मिलकर वाल्टरहासेन जाने की इच्छा से आगे बढ़ा ही था कि आल्सटेन्हीन दुर्ग के निकट बंदी कर लिया गया। मेरे मित्र ने अश्वारोहियों को आते देख बिना पूंछे जांचे तुरंत गाड़ी से कूद अपनी जान बचाई और पीछे से मुझे मालूम हुआ कि वह पैदल ही वाल्टरहासेन पहुंचा। मेरे वस्त्र उन लोगों ने उतार लिये और पल्टनियाँ कपड़े पहना दिये। मेरे झूंठी दाढ़ी लगाई गई। मैंने भी अपनी दाढ़ी बढ़ाना प्रारम्भ किया अब तुम मुझे पहिचान नहीं सकते हो। सच बात तो यह है कि मैं स्वयं अपने को नहीं पहिचान पाता। यहां मैं ईसाईवत् स्वतंत्र रहता हूं। यहां मुझे किसी प्रजा पीड़क राजा के दंड का भय नहीं है"। लूथर के बंदी करने वाले उसे वार्टवर्ग के दुर्ग को ले गये। यह दुर्ग का दुर्ग और राजमहल का राजमहल था। यहां लूथर का नया नाम रिटर जार्ज रक्खा गया। निकट के लोग समझते थे कि कोई योद्धा बंदी है क्योंकि लूथर ने यहां महन्तों के से वस्त्र पहिनना छोड़कर भले घर गृहस्थों के समान कपड़े पहिनना प्रारम्भ किया था। लूथर ने दाढ़ी बढ़ाई और असि धारण करना प्रारम्भ किया। दुर्ग के सब लोग उसका बहुत मान करते थे। वह किले ही में न घुसे रहते थे परन्तु बहुधा वेष बदल कर थोड़ी दूर तक घूम भी आया करते थे। कभी २ आखेट खेलने भी जाया करते थे।

इस अज्ञातवास में लूथर ने एक ऐसा कार्य किया

जिससे जर्मन साहित्य और धार्मिक जीवन में एक नया युग प्रारम्भ होगया। लूथर ने बाइबिल को (New Testament) जर्मन भाषा में उलथा किया। इसके पूर्व बाइबिल जर्मन भाषा में न थी। यह न समझना चाहिये कि लूथर ने यह काम केवल अपना समय बिताने के वास्ते किया था। लूथर की हार्दिक इच्छा थी कि बाइबिल का उलथा जर्मन भाषा में हो परंतु अपने शत्रुओं द्वारा लिखी पुस्तकों आदि का उत्तर देने में वह ऐसा फंसा था कि उसे इस बहुमूल्य कार्य के करने का समय ही नहीं मिलता था। जब हम यह सोचते हैं कि लूथर की सारी धार्मिक शिक्षा तथा उपदेश की जड़ बाइबिल थी और वह पोप के विरुद्ध होने का सब से बड़ा कारण यह बताता था कि मैं बाइबिल की शिक्षा को पोप की शिक्षा के विरुद्ध पाता हूं, तब हमें स्पष्ट पता लग जाता है कि लूथर जर्मन भाषा की बाइबिल जर्मन सर्वसाधारण के हाथों में रखने को कितना उत्सुक होगा। यही नहीं लूथर इस बात का सदा विरोध करता था कि जितने धार्मिक कृत्य होते हैं सब लैटिन भाषा में होते हैं जब कि लैटिन भाषा को कुछ इने गिने पादड़ियों को छोड़ और कोई नहीं जानता सर्वसाधारण जिस भाषा को समझें उस ही भाषा में सब धार्मिक कृत्य हों लूथर इस बात का बड़ा पक्षपाती था। लूथर इस बात से बड़ी घृणा करता था कि तोते की भांति लोग लैटिन भाषा की प्रार्थनायें गिरजों में पढ़ा करते हैं जब कि उनकी समझ में उनके एक अक्षर भी नहीं आते। लूथर नहीं समझ पाता था कि जिस भाषा को जो समझ नहीं सकता उस भाषा में की हुई प्रार्थना भी क्या ईश्वर प्रार्थना है। अतः इन सब कारणों से बाइबिल का

भाषा में उलथा करना लूथर ने अपने जीवन का एक बहुत बड़ा उद्देश्य मान लिया था। वार्टवर्ग के बंदीखाने में उसे अवकाश मिला और उसने बाइबिल का जर्मन अनुवाद कर डाला।

लूथर ने कई कारणों से अधिक दिनों तक अज्ञातवास करना उचित न समझा और ६ मार्च सन् १५२२ को वह विटेन्वर्ग के सर्व साधारण में आकर उपस्थित होगया। इस भांति अज्ञातवास त्यागने की सूचना लूथर ने सैक्सनी के राजा को भी न दी थी परन्तु विटेन्वर्ग पहुंच कर लूथर ने एक पत्र फ्रेडरिक को लिख भेजा कि कहीं वह अप्रसन्न न होजाय।

एकादशवाँ परिच्छेद

लूथर के तत्कालीन मनमाने शिष्य और प्रतिद्वंदी

लूथर पोप का घोर विरोधी था परन्तु राजद्रोही न था। लूथर असिद्वारा संपादित धार्मिक सुधार का बड़ा विरोधी था। लूथर कृत पोपद्रोह धीरे२ यूरुप के अनेक देशों में फैल गया। सारा यूरुप पोप के अत्याचारों से दुःखी था बहुत से लोग पोप से अपना नाता तोड़ना चाहते थे। लूथर और जर्मनी को पोप के विरुद्ध होते देख यूरुप की अन्यदेशीय जनता भी पोप-विरोध के लिये तत्पर होगई। यद्यपि सारा यूरुप इस समय पोप-विरोध में तत्पर था परन्तु इससे यह न समझना चाहिये कि सारा यूरुप लूथर का शिष्य था अथवा लूथर की आज्ञा मानता था। अन्य देशों में अन्य धार्मिक नेता थे जिनका लूथर से बड़ा मतभेद था और यदि कुछ सामान्यता थी तो यही कि ये सब लूथर सदृश पोप विरोधी थे और धार्मिक सुधार चाहते थे।

लूथर की वर्म्स राजसभा की विजय अद्वितीय थी। यद्यपि इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण हैं कि, लोगों ने अपने प्राण देदिये परन्तु अपना धर्म न छोड़ा तब भी लूथर की ऐसों से समता नहीं की जासकती। प्राण दे देना एक बात है और मुख

सम्मुख एक निस्सहाय कृषक पुत्र का समस्त राजसभा में निर्भीक खड़े हो उस सभा का विरोध करना दूसरी बात है। लूथर ने ऐसा ही कर दिखाया। ऐसी अद्वितीय आत्मिक शक्ति और धार्मिक क्षमता रखनेवाले पुरुष के अचानक गुप्त हो जाने से जर्मनी में बड़ी गड़बड़ी मचगई। सारा जर्मनी असिवल से धार्मिक सुधार, और पोप-धर्म-नाशार्थ प्रस्तुत था परन्तु नायक की कहीं खबर न थी। इन नवीन धार्मिक आतताइयों में इतनी सहिष्णुता कहाँ कि ये समय की अपेक्षा करें? इन्होंने जिसे पाया उसही को अपना नायक बना पोप की जड़ काटना आरम्भ कर दिया। इन धार्मिक सुधारकों ने भी कुछ कम अत्याचार न किये। अत्याचार तथा असिवल द्वारा धार्मिक सुधार करना लूथरको अभीष्ट न था। ऐसे मनमाने नायकों की नायकता में धार्मिक सुधार होते देख लूथर को अज्ञातवास छोड़ना पड़ा। दूसरे लूथर को अपना अज्ञातवास त्यागने के कारण प्राण जाने का तनिक भय न रह गया था। जर्मन सम्राट अपने शत्रुओं से युद्ध करने में व्यग्र था। तुर्क सारा हँगरी हड़प कर हापना लेने का उद्योग कर रहे थे। पोप सदा की भांति चार्ल्स की बढ़ती शक्ति को घटाने का उद्योग कर रहा था। फ्रांस पीछे से आक्रमण करने के लिये सदा प्रस्तुत रहता था। ऐसी घटना चक्रों में फँसे होने के कारण जर्मन सम्राट लूथर का कुछ न बिगाड़ सकते थे। अतः लूथर के लिये अज्ञातवास में छिपे रहने का कोई कारण न था, फिर जब कि उसके मनमाने शिष्य उसके नाम पर मनमाने धर्म चला रहे थे!

लूथर का पुराना शिष्य कार्लस्टैड लूथर के गुप्त होते ही

मन माने धार्मिक सुधार करने लगा। उसने सैक्सनी के बहुत से लोगों को एकत्रित कर गिरजों में लूटमार मचाना प्रारम्भ कर दिया—मूर्तियाँ तोड़ डालीं, मास कहना बन्द करा दिया और अनेकों कार्य ऐसे किये जो लूथर को बहुत बुरे मालूम पड़े। जब डाकृर स्टापिज ने लूथर का पत्र दिखा उसे ऐसा करने से रोका तो उसने हंसकर कह दिया "मनुष्य की आज्ञा मानने से ईश्वर की आज्ञा मानना कहीं अधिक उचित है"। इस पर स्टापिज ने उससे कहा कि उसके इस प्रकार गिरजाओं तथा मूर्तियों के तोड़ने से लूथर को बड़ा कष्ट होता है। उसने उत्तर दिया कि ये कोई नवीन बात तो है नहीं कि ईश्वर की आज्ञा पालनवश संसार को कुछ कष्ट उठाना पड़े। इन सब बातों का लूथर को पता लगा और उसमें और उसके पुराने शिष्य कार्लस्टैड में घोर शत्रुता होगई।

इसी प्रकार ज्विंगील और कालविन ने स्विटज़रलैंड के ज्यूरिक और जेनेवा नगर में पोप के विरुद्ध अस्त्र उठाये। इन दोनों में और लूथर में मित्रता का भाव न था कारण कि यद्यपि ये सब पोप के शत्रु और नवीन सुधरे हुये धर्म के पक्षपाती थे परन्तु कोई भी किसी का शिष्य न था और सब अपने २ स्वतन्त्र विचार रखते थे। ऐसी अवस्था में यह बहुत संभव है कि कुछ बातें एक दूसरे की न मिलें और धार्मिक मतभेद शीघ्र शत्रुता में बदल जाय। इन सब से कहीं अधिक भयंकर शिष्य था अलस्टैड का पादड़ी मन्जर। इसने कहा केवल धार्मिक सुधार से काम न चलेगा केवल पोप ही दोषी नहीं है बड़े २ ज़मीन्दार तथा सामन्तों में सुख लिप्सा बढ़ गई है। मारे कर भार के कृषक जनता रसातल को चली जारही है। महन्तों

में जितनी ही सुखसामग्री बढ़ रही है कृषकों में उतनी ही दरिद्रता बढ़ती जाती है। इसने कहा लूथर ने केवल धार्मिक सुधार का उपदेश दिया है सो ठीक किया परन्तु इतने से काम न चलेगा हमको आर्थिक सुधार भी करना होगा। इसने उपदेश देना प्रारम्भ किया कि ईश्वर ने उसे आदेश दिया है कि वह इस संसार के शत्रुओं तथा पीड़कों को मार कर धर्मराज स्थापित करे, जिस धर्मराज में सब भ्रातृवत् रहेंगे, न कोई दरिद्र रहेगा न कोई धनी। इस धार्मिक आततायी ने एक "प्रभु ईशु की सैन्य" भी एकत्रित करली और अपने मन माने विचारों के अनुसार कार्य करने लगा। नगर ग्राम उजाड़ डालता था। बहुत से मनुष्यों को "प्रभु ईशु का शत्रु" कहकर इसने वध कर डाला। अनाबपटिस्ट नामक एक और धार्मिक आततायियों का झुंड था जिनके अत्याचार पूर्ण कृत्यों के वर्णन करने का न अवसर है न रुचि। यह अत्याचार धर्म के सुधार के नाम पर किया जा रहा था। लूथर इन आततायी धर्म सुधारकों का वैसा ही घोर विरोधी था जैसा पोप का। लूथर ने जर्मनी के सामन्त-कुलों से आग्रह करना प्रारम्भ किया कि आप अपना बलसंग्रह कर जर्मनों को इन धार्मिक आततायियों से बचावें।

पोपलियो का देहान्त होगया और उसके स्थान पर एड्रिएन षष्ठ पोप हुआ। यह बहुत शीघ्र मर गया और इसके उपरान्त क्लिमेन्ट सप्तम पोप हुआ। ये सब पोप यूरुप की धार्मिक उद्दंडता से घबड़ा २ कर जर्मनी के सम्राट को लूथर के प्रति वर्म्स की सभा द्वारा निर्धारित दंड को कार्य में परिणित करने के लिये उत्साहित और उत्तेजित करते थे परन्तु सम्राट अपने शत्रुओं से निपटने में ऐसा व्यग्र था कि उसे लूथर के विरुद्ध

हाथ उठाने का अवसर ही न मिलता था। चार्ल्स अच्छी तरह जानता था कि लूथर को दंड देने के लिये उसे तीन भाग जर्मनी से युद्ध करना पड़ेगा। परन्तु वह पुराने धर्म का कट्टर पक्षपाती भी था और यह उसकी आन्तरिक इच्छा थी कि सारा जर्मनी पूर्ववत् फिर धर्म विषय में एक हो जाय।

लूथर की अपील सुन लूथर के पक्ष के राजाओं ने जैसे सैक्सनी का राजा जान फ्रेडरिक (क्योंकि बुद्धिमान फ्रेडरिक मर चुका था और उसका भाई उसके स्थान पर राजा था) हेस का फिलिप, ब्रेंसविक का ड्यूक और मैंसफील्ड के काउंट इत्यादि-अपनी २ सैन्य एकत्रित कर मन्जर और अनाबप्टिस्टों आदि धार्मिक आततायियों का अंत करना निश्चित कर लिया। कृषक लोग हार खाकर इधर उधर भाग गये, मंजर पकड़ कर फांसी पर चढ़ा दिया गया।

राजाओं और सामन्तों ने लूथर के कथनानुसार घोर अत्याचार करके विद्रोह शान्त कर दिया अनेक इतिहास-कारोंने इन अत्याचारों के पाप का भार अंशतः लूथर के माथे मढ़ा है। इन लोगों ने अभी कृषकों का दमन किया ही था कि इन्हें सन्देह होने लगा कि जर्मन सम्राट को बहुत शीघ्र लथर के पक्षपातियों को सताने के लिये अवकाश मिलनेवाला है। ये सब यह निश्चय जानते थे कि जब तक सम्राट अपने शत्रुओं से घिरा है तब ही तक हम लोग (लूथर के पक्षवाले) सुख की नींद सो रहे हैं। जिस दिन जर्मन सम्राट अपने बाहरी शत्रुओं से निश्चिन्त हुआ उसही दिन हम लोगों को दो में से एक काम करना पड़ेगा। या तो पुनः पोप धर्म स्वीकार करें या अपने धर्म की रक्षा के लिये शस्त्र उठावें

पोप का धर्म स्वीकार करना किसी को भी अभीष्ट न था अतः सब लोगों ने जो पोप के विरोधी थे एक मित्रसंघ स्थापित किया। इस संघ का उद्देश्य यही था कि यदि कोई शक्ति बल पूर्वक हमें अपना धार्मिक विश्वास त्यागने पर विवश करेगी तो हम अपनी रक्षा अपने शस्त्र द्वारा करेंगे।

फरासीसियों की पैविया में हार हुई और उनका सम्राट फ्रैंसिस बन्दी हो गया। इस समय ऐसा मालूम होने लगा कि मानो सारा यूरुप जर्मन सम्राट के करतल में है। परन्तु फ्रैंसिस बहुत शीघ्र स्वतंत्रता पा गया और पोप से मित्रता कर फिर चार्ल्स से लड़ने की तैयारी करने लगा। चार्ल्स ने इस मित्रता से रुष्ट हो रोम पर आक्रमण किया। लूथर का काम चार्ल्स स्वयं कर रहा था। यह सब झगड़ा १५३० तक चलता रहा। १५३० में चार्ल्स और फ्रांस तथा पोप में संधि हो गई। तुर्क लोग भी व्हाएना के द्वार से कड़ी हार खाकर लौट गये। चार्ल्स अपने घर के शत्रुओं का सामना करने के योग्य हुआ।

चार्ल्स इधर स्वस्थ हुआ उधर उसने लूथर के पक्ष-पातियों को अपने धर्म त्यागने के लिये विवश करना प्रारम्भ किया। ये सब पूर्व ही से तय्यार थे। इस युद्ध के कुछ पूर्व ही लूथर का देहान्त हो चुका था अतः इस युद्ध की घटनाओं के वर्णन और लूथर की जीवनी से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है। इस संधि में अन्य राजनैतिक बातों के साथ २ धार्मिक प्रतिज्ञा यह थी कि पोप, लूथर और कालविन के अनुयायी समान दृष्टि से देखे जायंगे और कोई भेदभाव न किया जायगा। इस युद्ध में जर्मनी की बड़ी हानि हुई।

द्वादश परिच्छेद

लूथर का विवाह और गृहस्थी

वर्म्स की सभा के दंडाज्ञा के उपरान्त बहुत दिनों तक लूथर को दरिद्रता से बड़ा कष्ट उठाना पड़ा। विटेन्बर्ग के आगस्टाइन मठ में अब भी लूथर रहते थे परन्तु वहाँ न अब कोई महन्तही रहे गये थे न कुछ आय ही थी। लूथर की निज की भी आय कोई नहीं थी। एक जोड़ी कपड़े से लूथर को दो वर्ष काटने पड़े। दो वर्षों के उपरान्त इलेक्टर से थोड़ा सा कपड़ा नये वस्त्रों के लिये मिला। पुस्तक बेचनेवाले उसकी पुस्तकें बेच २ कर धनी हो रहे थे परन्तु लूथर को उनसे एक कौड़ी न मिलती थी।

अब हम लूथर के ही मुख से उसकी दरिद्रता की दशा का वर्णन करते हैं:—"स्टापिज ने हमारा रुपया अभी तक नहीं भेजा है और मैं दिन प्रति दिन अधिक ऋणी होता जाता हूं। मेरी समझ में नहीं आता कि मैं क्या करूं। इलेक्टर से फिर मांगूं या कै दिन इस तरह चले चलाकर देखूं और अधिक से अधिक कष्ट उठाता जाऊं। परन्तु अंत में नितान्त कष्ट और भूख से, ऐसा मुझे विदित होता है, एक दिन मुझे विटेन्बर्ग त्यागना पड़ेगा और पोप और सम्राटसे संधि करनी पड़ेगी। (नवंबर १५२३)। "मैं दिन प्रति दिन अधिक २ ऋणी होता जाता हूं, मुझे एक दिन गली २ भिक्षा मांगनी

पड़ेगी" (२४ अपरैल १५२४)। "ऐसी अवस्था अधिक दिन तक नहीं चल सकती। राजा की देरी निश्चय मेरे हृदय में बड़ी शङ्कायें पैदा करती हैं। मैंने तो बहुत दिन पूर्व ही यह मठ त्याग दिया होता और अन्यत्र जाकर अपने हाथों के परिश्रम से जीता (यद्यपि ईश्वर जानता है मैं यहां भी कुछ कमपरिश्रम नहीं करता) यदि मुझे ऐसा करने से यह भय न होता कि इस भांति मेरे राजा के धार्मिक सिद्धान्तों पर धब्बा लगेगा।"

"तुम मुझ से आठ रुपये मांगते हो। भला बताओ तो मैं कहाँ से लाकर तुम्हें आठ रुपये दूं। जैसा कि तुम्हें विदित है मैं बहुतही मितव्ययता से रहता हूं तब भी मेरा ख़र्चा नहीं चलता। ......धीरे२ करके मैं लगभग सौ रुपये का ऋणी होगया हूं जो मुझे किसी न किसी प्रकार चुकाना होगा। मुझे तीन प्याले पचास रुपयों के लिये गिरमी रखने पड़े हैं और एक तो १२ रुपये के लिये बेचही डालना पड़ा। निकलस इन्डे्सेस से कहो कि आदमी भेजकर मेरी लिखी कुछ पुस्तकें मंगा लेवें। अपने (पुस्तक) प्रकाशकों के ऊपर इसका मैंने कुछ आर्थिक अधिकार रख छोड़ा है। करूं क्या यद्यपि मैं इतना दरिद्र हूं तब भी ये (प्रकाशक) मेरे परिश्रम के लिये मुझे एक कौड़ी नहीं देते। यदि बहुत किया तो मेरे ग्रंथ की मुझे एक दो प्रतियां भेज देते हैं। ये भी क्या कुछ देना हुआ; जब कि दूसरे ग्रंथकार यहाँ तक कि केवल उल्था करने वाले भी एक रुपया पन्ना पाते हैं।" (५ जुलाई १५२७)

"मेरे प्यारे मंत्री ! कौन ऐसी बात होगई है कि आप ऐसा घुड़क कर और धमकाते हुए लिखते हैं।......मैं पूछता हूं

कि क्या यह बाइबिल से प्रेम करना है, कि आप उसही बाइबिल पूजक को पेट भर अन्न देने से भी मुख मोड़ते हैं। मैं फिर कहता हूं कि यह घोर अन्याय है, बड़ी विगर्हित तुच्छता है कि अकेले में तो मुझे चले जाने के लिये आज्ञा दी जाती है और सब के सामने ऐसा भाव दिखाया जाता है मानों ऐसी आज्ञा कभी दी ही नहीं गई थी। क्या आप यह समझते हैं कि आप की ये चालें परमात्मा भी न देख पावेगा।......मुझे पूरी आशा है कि यदि आप भोजन न देंगे तो ईश्वर देहीगा। ......" (२७ नवंबर १५२४)।

परन्तु धीरे२ लूथर की आर्थिक अवस्था कुछ सुधरने लगी। सैक्सनी के राजाने अपने विश्वविद्यालय का पुनः सुधार किया और लूथर को लगभग ५०० रुपया वार्षिक वृत्ति की एक जगह देदी। इसही बीच में सैक्सनी की अवस्था सुधरने लगी और लोग लूथर को उपहारादि भेजने लगे। विटेन्बर्ग में केथराइन हान बोरा नामक एक स्त्री रहती थी। वह उच्चकुल की थी परन्तु उसके मा बाप निर्धन थे। जब केथराइन नव वर्ष की थी तब ही उसके मा बाप ने दरिद्रता वश उसे एक मठ को दे दिया था। १६ वर्ष की होने पर उसे साधु होने की शपथ खानी पडी। यद्यपि भाग्य चक्र में फंसकर उसे साधु होना पड़ा परन्तु, वह इस साधु-जीवन से बड़ी घृणा करती थी। जब लूथर की शिक्षा के प्रभाव से साधुगण पुनः गृहस्थ होने लगे और मठ टूटने लगे तो केथराइन ने भी अपने मित्रों को लिखा कि मुझे इस अवस्था से निकाल लो। मित्रों ने उसकी इस प्रार्थना पर बिलकुल ध्यान नहीं दिया। १५२३ के अपरैल मास में वह अन्य नौ मनुष्यों के साथ अपने मठ से भाग निकली।

इसके उपरान्त ये सब के सब भूखों मरने लगे। लूथर ने दया-वश इन लोगों के लिये चंदा कराया। धीरे २ करके लूथर और केथराइन* में प्रेम हो गया। केथराइन उस समय चौबीस वर्ष की थी और बहुत कुछ सुन्दर भी थी। अंत में १३ जून सन् १५२५ को इन दोनों स्त्री पुरुषों का एक निकटस्थ ग्राम गिरजे में विवाह होगया।

इस विवाह के विषय में बड़ा आन्दोलन मचा। कुछ लोगों ने लूथर की बड़ी निन्दा करना प्रारंभ किया। लूथर का मित्र मिलंकथन कहने लगा कि बस अब लूथर बिगड़ गया। लूथर स्वयं घबड़ा गया और लिखता है "इस विवाह ने मुझे ऐसा घृणा का पात्र बना दिया है......"। बहुत लोगों का यह विचार था कि ऐसे समय में जब कि सारा जर्मनी घराऊ युद्ध के भय से विह्वल था और वह भी लूथर द्वारा प्रचारित धर्म के लिये, लूथर का इस प्रकार अचानक और बांध विवाह करना बहुत अनुचित था। कुछ लोग कहते थे कि ४२ वर्ष के पुरुष के लिये २४ वर्ष की युवती के संग विवाह करना सर्वथा अयोग्य था। लूथर स्वयं स्वीकार करता है कि वह केथराइन को बहुत चाहता था और उसे "मेरी केट" कहा करता था। इन सब प्रेम संबोधनों को सुन लोगों ने मनमानी जनरव फैलाना

---

१ ऐसा मालूम होता है कि इसके पूर्व केथराइन नूरेम्बर्ग में एक नवयुक विद्यार्थी जीरोम वामगार्टनर से प्रेम करती थी क्योंकि लूथर उसे १२ अक्टूबर १५२४ ईसवीं को यों लिखता है "यदि तुम्हे अपनी केथराइन पाने की इच्छा है तो तुरन्त चले आवो। नहीं तो वह किसी अन्य की संपत्ति हो जायगी...वह अभी तक तुम्हे भूली नहीं है। हमे बड़ा आनंद होगा यदि आप-का विवाह केथराइन के साथ होजाय क्योंकि आपका अधिकार पूर्व का है।"

प्रारंभ किया। लूथर लिखता है" मैंने अचानक विवाह कर लिया कि मुझे लोगों की मनमानी बातें न सुननी पड़ें और उन लोगों का मुख भी बन्द होजाय जो मुझे पूर्व ही से भला बुरा कहने लग गये हैं।"

मैंने पूर्व के प्रकरण में यह दिखाया है कि लूथर साधु होने और विशेष कर आजन्म ब्रह्मचारी रहने की प्रथा के बहुत ही विरुद्ध था कारण कि उसे निज का अनुभव था कि ऐसे अप्राकृतिक प्रण लोग करने को तो कर बैठते हैं परन्तु निवाह नहीं पाते, अतः मठों में घोर व्यभिचार फैलता है। लूथर के विचारानुसार विवाह एक ईश्वर सम्मत धर्म शास्त्र विहित अत्यन्त पवित्र संस्कार है जो प्रत्येक मनुष्य को स्वीकार करना चाहिये। बहुत से लोग जो लूथर को यह उपदेश देते सुनते थे कि साधू पुनः गृहस्थ हो सकता है और विवाह कर सकता है तथा विवाह बाइबिल विहित है लूथर को स्वयं विवाह करने को विवश करते थे और कहते थे कि आपको स्वयं आदर्श बनना चाहिये। इसके अतिरिक्त लूथर उदार और सच्चे हृदय से स्वीकार करता है कि उसके भी मनुष्य स्वभावोचित सब ही इच्छाएं थी "ईश्वर की शपथ में यह कभी नहीं कहता कि रुधिर मांस का मुझ पर कुछ प्रभाव ही नहीं है और मैं ईंटा पत्थर हूं परन्तु तब भी मुझे अभी विवाह करने की इच्छा नहीं है क्योंकि प्रति दिन मुझे यह भय लगा रहता है कि जाने कब मैं नास्तिकवत् चिता पर चढ़ा कर यमालय भेजदिया जाऊं"। लूथर आगे चल कर लिखता है "मुझे अब कुछ अधिक दिन जीवित रहने की आशा बंध गई है अतः अब मैं अपने पिता को इस चिरसंचित इच्छा को कि अब मैं विवाह

कर कुल चलाऊं नहीं रोक सकता। इसके अतिरिक्त मेरी इच्छा है कि मैं अपने उपदेशों का स्वयं आदर्श बन सकूँ ....इस विषय में ईश्वर की ऐसी ही इच्छा है। मेरा अपनी पत्नी के प्रति कोई व्यभिचार या कामुकता भाव नहीं है। हाँ मैं उससे निरपेक्ष प्रेम अवश्य करता हूं।

यदि लूथर का विवाह इन सब अपवादों के कारण कुछ कष्टप्रद होगया था तो लूथर को इन सब कष्टों का प्रतिफल बहुत शीघ्र अपनी नववधू के सद्गुणों में मिल गया। लूथर लिखता है कि मेरी पत्नी मेरी आशा के बाहर आज्ञानुकारिणी है। सदा मेरी इच्छानुकूल कार्य कर मुझे प्रसन्न रखती है। एकबार लूथर ने कहा "मैं अपनी पत्नी को फ्रांस के राज्य अथवा वेनिस के धन सम्पत्ति के लिये भी न बदलूंगा और सो भी तीन कारणों वश-प्रथम, मुझे ईश्वर ने इसे ऐसे समय में दिया है जिस समय मैं ईश्वर से एक स्त्री के लिये प्रार्थना कर रहा था, दूसरे, यद्यपि उसमें अवगुण हैं परन्तु और स्त्रियों से कहीं कम हैं, तीसरे, कि वह अपने सतीत्व को सच्ची है"।

लूथर कहा करता था कि "बाइबिल से उतर कर यदि इस संसार में कोई दूसरी निधि है तो वह है पवित्र विवाह सम्बन्ध। पवित्र, प्रसन्नवदना, ईश्वर भक्त, गृहकार्यकुशला पत्नी,* जिसे तुम विश्वास पूर्वक अपना तन, मन, धन सौंप

---

* अद्वैतं सुखदुःखयोरनुगतं सर्वास्ववस्थासु यत्।
विश्रामो हृदयस्य यत्र जरसा यस्मिन्नहार्यो रसः॥
कालेनावरणात्ययात्परिणते यत् प्रेमसारेस्थितम्।
भद्रं प्रेम सुमानुषस्य कथमप्येकं हि तत् प्राप्यते॥

:—भवभूतिः

सको। ईश्वर के सब उपहारों में श्रेष्ठ है। ऐसे भी स्त्री पुरुष हैं जो न अपनी सन्तति का ध्यान रखते हैं न परस्पर प्रेम करते हैं, ऐसे लोग मनुष्य नहीं कहे जा सकते। वे अपना घर नरक बना लेते हैं।"

विवाह के समय तो लूथर अकिञ्चन था परन्तु शीघ्रही जैसा पहिले बताया गया है उसे रोटी दाल का ठिकाना हो गया। लूथर का छोटा मोटा गृह एल्ब नदी के किनारे बना हुआ था। यह यद्यपि बहुत बड़ा न था परन्तु तब भी सुन्दर और हवादार था। धीरे २ करके लूथर ने एक खेत और गृह क्रय करलिया। लूथर की मृत्योपरान्त इसही गृह में उसकी पत्नी जाकर रही थी। केथराइन सब काम करने में बड़ी चतुर थी। वह खेत का काम करती, सुअर और मुर्गियों को पालती, शराब बनाती, अपने निकटस्थ मछली पकड़ने वाले तालाब से मछली पकड़ लाती—संक्षेप में गृहस्थी के सब कार्य बड़ी चतुरता और उत्साह से करती था। घर को साफ़ सुथरा रखना वह अपना मुख्य कर्तव्य मानती थी।

लूथर का कुटुम्ब एक प्रकार से बड़ा था। लूथर के सब मिलाकर पांच लड़की लड़के हुए। इनमें तीन लड़के और दो लड़कियाँ थी। हैंस, एलिज़बेथ मैगडलेन मार्टिन और पाल उनके नाम थे। केथराइन की चाची जो केथराइन के ही मठ में रहतो थी और केथराइन के साथही चली आई थी लूथरही के साथ रहती थी। लूथर इस स्त्री का बड़ा सम्मान करता था। इसके अतिरिक्त दो भतीजियां और थीं जो लूथर के साथ रहती थीं, कुछ विद्यार्थी भी लूथर के साथ रहते थे। अपने लड़के लड़कियों से लूथर को बड़ा प्रेम था। लूथर अपनी

संतति को प्रसन्न रखने तथा यथाशक्ति उनकी सरल इच्छाओं को पूर्ण करने का बड़ा उद्योग करता था। लूथर ने कोबर्ग से अपने ज्येष्ठ पुत्र हैन्स को निम्नलिखित वत्सलतापूर्ण पत्र लिखा था। "मेरे छोटे प्यारे पुत्र ईशु की जय। मैं यह देखकर बहुत प्रसन्न हूं कि तुम अपना पाठ खूब पढ़ते हो और ईश्वर की प्रार्थना करना भी नहीं भूलते हो। इसी तरह कार्य करते रहो। मेरे प्यारे बेटे! जब मैं घर लौटूंगा तो तुम्हारे लिये बहुत अच्छा खिलौना लाऊंगा। मैं एक सुन्दर उपवन जानता हूं जहां बहुत से प्रसन्न चित्त लड़के सच्चे काम के कुरते पहिने अच्छी २ नारंगी बेर आदि तोड़ा करते हैं। नाचते हैं गाते हैं और सुन्दर घोड़ों पर सुनहली लगाम और चांदी की जीन सहित बैठते हैं। मैंने माली से पूछा किसका उपवन है किसके लड़के हैं। माली ने उत्तर दिया "ये वे लड़के हैं जो पढ़ते हैं प्रार्थना करते हैं और सिधाई से रहते हैं"। तब मैंने उत्तर दिया "मेरे भी एक लड़का है उसका नाम हैंस लूथर है क्या वो भी इस उपवन में आकर नारंगी तोड़ सकता है, घोड़े पर चढ़ सकता है और सब के साथ खेल सकता है। तब उसने कहा "हां यदि वह अपना पाठ पढ़ता हो, प्रार्थना करता हो और अच्छा लड़का हो तो आ सकता है......" तब उसने मुझे एक स्थान दिखाया जो नाचने के लिये बहुत चिकना बनाया गया था और जहाँ खेलने को तीर धनुष रक्खी थी। मैंने कहा मैं अभी जाकर अपने लड़के को लिखता हूँ। उसने कहा "हाँ" "हाँ" "जाकर अभी लिखो"। अतः मेरे प्यारे बेटे मन लगाकर पढ़ा करो और

प्रार्थना किया करो। लियस* और जोस्ट से भी यही करने को कहो। तब तुम सब के सब इस सुंदर उपवन को आ सकोगे। सर्वशक्तिमान ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे......तुम्हारा प्रेमी पिता मार्टिन लूथर।

लूथर बैठा था और उसके सामने उसका छोटा मार्टिन तन, मन, धन से गुड़िया को कपड़ा पहिनाने में व्यग्र था। लूथर कहने लगा "स्वर्ग में हम लोग भी ऐसे ही सीधे सादे होंगे जैसे कि यह छोटा बच्चा। देखो ईश्वर के विषय में यह कैसा बातचीत करता है और तनिक भी संदेह नहीं करता। मन माना खेल ही बच्चों का सर्व्वोत्कृष्ट भोजन है। सच तो यों है कि वे स्वयं सर्व्वोत्तम खिलौना हैं। वे (बच्चे) जो कुछ भी करते या कहते हैं उसमें एक हार्दिक सचाई मिली रहती है।......

यद्यपि उनकी बुद्धि छोटी रहती है परन्तु धार्मिक विश्वास अधिक होता है। ये लोग हम ऐसे मूर्ख वृद्धों से कहीं अच्छे होते हैं........अब्राहम की बड़ी बुरी दशा हुई होगी जब उसे आइसक को मारने की आज्ञा मिली थी। यदि ईश्वर ने मुझे ऐसी आज्ञा दी होती तो मैं निश्चय उससे झगड़ पड़ा होता। इतना सुनते ही केथराइन (जिसे लूथर सदा केट या केटी कहा करता था) तुरन्त बोल उठी "मैं सात जन्म न विश्वास करूगीं कि ईश्वर किसी को अपने पुत्र की हत्या करने की आज्ञा देता है"। लूथर ने उत्तर दिया "प्रभु ईशु से बढ़कर ईश्वर का कोई प्यारा नहीं है। पर उसे भी उसने फांसी चढ़ने दिया"

* हैंस के साथ मित्रों के नाम हैं

इस प्रकार के आनंद में इस सुखी कुल का जीवन व्यतीत होता था। लूथर को अपनी 'केट' को चिढ़ाने खिराने और मनमाने तथा नित्य नवीन नाम रखने में बड़ी प्रसन्नता होती थी। लूथर ने कभी अपनी केट को गुस्सा होकर कुछ नहीं कहा लूथर उसके सद्गुणों का अच्छा परीक्षक था और उसका पूरा सम्मान करता था। एकबार लूथर ने कहा "केट यदि तुम सारी बाइबिल पढ़ जावो तो मैं तुम्हें पचास सुवर्ण मुद्रायें पारितोषिक दूँ"। ग्रंथकार को यह पता नहीं है कि इसपारितोषिक के लालच में केट फंसी थी या नहीं।

'कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा। नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण' के कथनानुसार लूथर के गार्हस्थ्य सुख के आकाश में भी कालिमा के बादल दिखाई पड़ने लगे। हैंस बहुत छोटी अवस्था में मर गया। इसके उपरान्त उसकी पहिली लड़की एलिज़बेथ भी बहुत छोटी अवस्था में मर गई। लूथर कहता है "आश्चर्य्य है! इस लड़की के मरने से मेरा हृदय इतना सुस्त हो गया। तबसे मेरा हृदय ऐसा घबराया करता है कि मैं स्त्री तुल्य हो गया हूं। मैं कभी स्वप्नमें भी न सोच सकता था कि मनुष्य का हृदय अपनी संतति के लिये इतना प्रेममय हो सकता है"। इसके उपरान्त उस की सब से प्यारी लड़की मैगडलेन भी १४ वर्ष की अवस्था में मर गई। लूथर को इससे बहुत कुछ आशा थी। उसके मरने से लूथर का हृदय टूट गया। जब उसका शव समाधि में गाड़ने को ले जाया जा रहा था तब लूथर ने उठानेवाले व्यक्तियों से कहा "मैंने एक देवता स्वर्ग भेज दिया है। यदि उसके सदृश मेरी भी मृत्यु हो सके तो मैं अभी मरने को

तय्यार हूं"। लूथर ने अपने मित्र को लिखा कि "प्राकृतिक प्रेम इतना शक्तिमान है कि मैं उसकी (मैगडेलन) मृत्यु विना हार्दिक घोर पीड़ा के नहीं सह पाता। जब मुझे उसके शब्द और हावभावों की याद आती है तब ईशु की मरण स्मृति भी मेरे दुःख को नहीं घटा पाती*"।

* इसकी समाधि पर लूथर ने निम्न लिखित पद्य स्वयं बनाकर खुदवाया था। उसका अंगरेजी उल्था इस प्रकार है।

Here do I Lena Luther's daughter rest
Sleep in my little bed with all the blest
In sin and trespass was I born
For ever was I thus forlorn
But yet I live and all is good
Thou Christ, redeemest me with thy blood.

त्रयोदश परिच्छेद

लूथर की मृत्यु

१५३७ की फरवरी में मालकाल्ड में युद्ध के संबंध में एक धर्म संबंधी सभा की गई। लूथर भी यहां उपस्थित हुआ। परंतु यहां आने पर उसे बड़ा भयंकर रोग हो गया। अश्मरी या मूत्रकृच्छ्र रोग हो जाने के कारण एकादश दिवसों तक लूथर मूत्र त्याग न कर सके। यद्यपि ऐसी भयंकर अवस्था थी कि जीवन से उसके मित्र निराश हो चुके थे परंतु लूथर ने अपनी यात्रा न तोड़ी। फल भी अच्छा ही हुआ और चलने के कारण लूथर रोग मुक्त हो गये। इसी प्रकार एकबार लूथर के हृदय के निकट कुछ रुधिर के जम जाने से भी लूथर को बड़ा कष्ट उठाना पड़ा था। लूथर कान और दांत की पीड़ा से बहुत हैरान रहते थे।

इस ही साल रोम ने यह देखा कि प्रोटेस्टेंट असिबल से नहीं दबाये जा सकते, पुनः सामनीति का आश्रय लिया। इस समय पोप था पाएस तृतीय। यह पोप कुछ अच्छे स्वभाव का भी था। इसने कहा कि लूथर की बहुत सी बातें सत्य हैं अतः हम लोग लूथर की उन सब बातों को मानने तथा अपना सुधार करने को प्रस्तुत हैं। उसने सभा का स्थान भी निश्चित किया जहां उभय पक्ष मिलकर परस्पर समझौता कर सकते थे। लूथर उनकी इन चालों में कब फंसनेवाले थे। लूथर ने कई पुस्तकें पोप की धूर्तता प्रकट करने के लिये लिखी।

उनका सब का फल यह हुआ कि पोप की चाल न चली। इसही भांति पोप पक्ष से युद्ध करते करते लूथर की जीवन अवधि समाप्त हो चली और १५४६ का वर्ष आ उपस्थित हुआ।

मैंसफील्ड के सामन्त कुल में परस्पर बटवारे के विषय में कुछ झगड़ा खड़ा हुआ। उन लोगों ने लूथर को निमंत्रण दिया कि लूथर आकर सीमा का विवाद निश्चित करदें यद्यपि लूथर को इन विषयों का बहुत कम ज्ञान था परन्तु तब भी उन्हें ईसलीवन जाना पड़ा। अतः विटेन्वर्ग में १७ जनवरी को अपना अंतिम उपदेश दे लूथरने २३ जनवरी को अपनी जन्मभूमि के लिये प्रस्थान किया। लूथर के साथ उनका मित्र जोना और उनके दो पुत्र थे। मैंसफील्ड की सीमा पर इन्हें शत अश्वारोही मिले जो इनकी अगवानी के लिये भेजे गये थे। इस प्रकार लूथर बड़े सम्मान सहित अपनी जन्मभूमि पहुंचे। परन्तु, मार्ग ही से उनका स्वास्थ्य बिगड़ चला था और ईसलीवन पहुंचते पहुंचते उनकी शारीरिक अवस्था बहुत बिगड़ गई। लूथर को विश्वास होगया कि मेरा समय अब आगया है अतः उन्हें घर लौटने की इच्छा होने लगी। परन्तु ईश्वर की इच्छा न थी कि वह सजीव विटेन्वर्ग लौटे।

१७ फरवरी को लूथर के हृदय में पीड़ा उठी। परन्तु थोड़ी ही देर में अच्छी होगई। लूथर ने सबके साथ भोजन किया और सदा की भांति खूब वार्तालाप किया। इसके उपरान्त लूथर सोने के लिये अपने कमरे में चले गये। अर्धरात्रि के निकट लूथर ने अपने सेवक को बुलाया। लूथर ने कहा, 'मुझे बड़ी सुस्ती मालूम होती है, मेरी पीड़ा बढ़ती जाती है। इसके उपरान्त कुछ बेचैनी मालूम हुई और लूथर उठकर कमरे

में टहलने लगे। दो एकबार टहल के फिर पलंग पर सो रहे। इस समय लूथर के पास उनके दो पुत्र और उनका मित्र जोना था। लूथर ने कहा "मृत्यु आगई, हम जाते हैं। ईश्वर! अपनी आत्मा तुम्हें सोंपते हैं" जोना ने पूंछा "पवित्र पिता! क्या आप अपने जीवन के धार्मिक विचारों में पूरा विश्वास रख कर मरते हैं" लूथर ने कुछ आखें खोल कर उत्तर दिया "हाँ"। इसके उपरान्त लूथर फिर सो गये। निकटस्थ लोगों ने देखा कि लूथर का मुख पीला पड़ता जाता है। लूथर का शरीर ठंडा होने लगा। स्वाँस धीमी पड़ने लगी। अंत में एक दीर्घ निश्वास निकली और 'सुधारक' संसार से उठ गया।

लूथर का शरीर एक दिन वहीं (ईसलीवन में) रहा। कई मूर्तियां बनाई गईं और तस्वीरें उतारी गईं। जान फ्रेडरिक समाचार सुनते ही अन्तिम भेट करने को दौड़ पड़े। मैंसफील्ड के सामन्त कुलवालों ने अपना झगड़ा बिना किसी विवाद के तय कर लिया। बीस तारीख़ को लूथर का शव गाड़ी पर चढ़ाकर विटेम्बर्ग भेजा गया। अश्वारोहियों की एक पल्टन सम्मानार्थ साथ थी। ईसलीवन नगर की जनता नगर के फाटक तक शव के साथ गई। दो दिनों तक चलने के उपरान्त सब विटेन्वर्ग पहुँचे और वहीं गिरजे में लूथर को समाधि * दी गई।

---

* पोप के भक्तों ने लूथर की मृत्यु के विषय में मन मानी झूंठी अफ़वाहें फैला कर अपनी नीच प्रकृति का पूरा परिचय दिया है। कुछ ने कहा लूथर की अचानक मृत्यु होगई, कुछ ने कहा शैतान ने उसका गला घोट दिया। एक महाशय लिखते हैं कि लूथर का शव इतनी दुर्गन्धि देता था कि वह मार्ग ही

लूथर की वसीयत का संक्षेप में अर्थ यह था कि उसकी सारी सम्पत्ति की उत्तराधिकारिणी उसकी प्यारी केथराइन हो। लूथर ने अपनी वसीयत में केथराइन की बड़ी प्रशंसा की है। लूथर को मृत्योपरान्त लूथर के सारे ग्रन्थ एकत्रित किये गये और सात भागों की एक पुस्तक में छापे गये। केथराइन लूथर के उपरान्त थोड़े ही दिन जीवित रही। १५४७ तक केथराइन विटेन्वर्ग ही में रहती रही परन्तु जब चार्ल्स पंचम ने नगर घेर लिया तो केथराइन वहां से अन्यत्र चली गई। चलते समय कई राजे महाराजों ने उसे अच्छे उपहार दिये। लूथर की संपत्ति और इन सब उपहारों को मिलाकर केथराइन के पास इतना होगया कि वह आनन्द से जीवन बिता सके, जब विटेन्वर्ग फिर इलेकृर के अधिकार में आगया तब केथराइन फिर विटेन्वर्ग लौट आई। १५५२ में विटेन्वर्ग में बड़ी महामारी फैल गई और केथराइन को विवश हो विटेन्वर्ग त्यागना पड़ा। केथराइन के पास

में फेंक दिया गया। लूथर जब जीवित था तब भी उसकी मृत्यु की झूठी २ खबरें खूब फैलाई जाती थीं। इन समाचारों में लूथर की मृत्यु का ऐसा भयंकर विवरण दिया जाता था कि लोगों के हृदय कांप उठते थे। परन्तु यहां पर एक घटना उल्लेखनीय है। १५४७ में (लूथर की मृत्यु के एक वर्षोपरान्त) चार्ल्स पंचम ने विटेन्वर्ग जीत लिया और नगर में प्रवेश किया। सैनिकों ने लूथर की एक प्रतिमा जिसमें दो खड्ग विंधे थे चार्ल्स को दिखाया। स्पेनवासी पोपभक्त चार्ल्स को बहुत दबाने लगे कि लूथर की समाधि खोद कर उसके शव का अपमान किया जाय और शव को फांसी दी जाय। परन्तु चार्ल्स ने उत्तर दिया " मैं मृत के साथ युद्ध नहीं करता "। परन्तु शोक ! उस समय इस प्रकार मृत से युद्ध बहुत होता था।

जो कुछ था सब उसने बेंच डाला और टरगाऊ में अपने अंतिम दिवस बिताने का निश्चय कर टरगाऊ के लिये चल पड़ी। परन्तु मार्ग में घोड़े बिगड़ गये और तोड़ा कर भागने लगे। केथराइन ने कूदने का उद्योग किया, कूदने में गिर पड़ी और गहरी चोट खागई। इस ही चोट से तीन महीने तक बीमार रहने के उपरान्त २० दिसम्बर सन् १५५२ में मर गई।

लूथर के विषय में एक निष्पक्ष विद्वान् की सम्मति उद्धृत कर यह संक्षिप्त जीवनी समाप्त की जाती है। "ईश्वर की इच्छा थी कि लूथर एक बहुत बडा और सुन्दर धर्म सुधारक नेता हो। यही कारण है कि उसका चरित्र दो विरोधी परंतु घोर अतिशयोक्ति पूर्ण रंगो से रंगा गया है। लूथर के विपक्षी यह देखकर कि किस निर्दयता के साथ वह उनके शताब्दियों के धार्मिक विचारों तथा पवित्र भावों को तोड़ मरोड़ रहा है, उसे दुष्ट मनुष्य ही नहीं वरन् राक्षस समझते थे। उसके अनुयायी यह समझ कर कि लूथर ही की कृपा से उन्हें सत्य मार्ग तथा सत्य धर्म का ज्ञान हुआ है उसकी कृतज्ञता तथा भक्ति में ऐसे पग गये थे कि वे उसमें दोष देखना तो दूर रहा मनुष्यातीत गुण और आभा देखते और उसे साक्षात् देवता का औतार मानते थे। परंतु हमें न शत्रु की घृणा न मित्र का प्रेम अपना पथ दर्शक बनाना चाहिये. हमें उसके चरित्र की ओर ध्यान धरकर लूथर की समालोचना करनी चाहिये। यह तो उसके शत्रु भी स्वीकार करेंगे कि लूथर में ये गुण भरपूर थे अर्थात् अपने निर्धारित सत्य के लिए उत्साह, अपनी कार्य प्रणाली की रक्षा में निर्भीक वीरता,

अपने सिद्धान्तों की रक्षा करने की योग्यता, उन सिद्धान्तों के प्रचारार्थ सतत उद्योग आदि। इन गुणों के साथ ही साथ यह भी कोई अस्वीकार नहीं कर सकता कि लूथर एक बहुत सदाचारी और सच्चा तथा निस्वार्थी पुरुष था। स्वार्थमय विचारों से परे, विषय भोग रहित, संसार के सुखों से वंचित लूथर की जीवनी एक अपूर्व आदर्श थी। परन्तु इन सद्‌गुणों के साथ ही साथ लूथर में कुछ मानुषिक स्वभाव के दोष भी थे। लूथर बहुधा इतना आवेश पूर्ण हो जाता था जितना कि बहुत से शांति प्रिय मनुष्यों को अच्छा न लगेगा। कभी २ लूथर अपने विचारों की सत्यता में ऐसा घोर विश्वास दिखाता था कि अभिमान की झलक आने लगती थी। उसकी दृढ़ता में एक प्रकार का हठ और धैर्य में अविमृश्यकारिता का दोष मिला रहता था। बहुधा वह अपने शास्त्रार्थों में क्रोध दिखा बैठता था। लूथर अपने आवेश में आने पर किसी की योग्यता या पद का ध्यान नहीं रखता था।

परन्तु ये सब दोष जो लूथर में दिखाये जा सकते थे सब उसके स्वभाव ही के दोष न थे। उनमें बहुत से दोष ऐसे हैं जो उसके युग की अवस्था के फल थे। उस समय की अर्ध सभ्य, समाज में नम्रता के वे नियम प्रचलित न थे जो मनुष्य को अपना क्रोध रोकनेको विवश करते हैं और जिनसे समाज में सुजनता का प्रचार होता है। उस समय के शास्त्रार्थ में मनमाना क्रोध, भाषा की कटुता, व्यक्तिगत आक्षेप, अश्लील बातें, कोई आश्चर्य का विषय नहीं समझी जाती थीं। हमें प्रत्येक मनुष्य के चरित का न्याय करते समय उसके समय की सभ्यता और नियमों पर ध्यान अवश्य रखना चाहिये। यह

बात ठीक है कि धर्माधर्म का ज्ञान सब समय में था परंतु चाल ढाल रीति रसम में बड़ा परिवर्तन हो सकता है। बहुत से दोष जिन्हें आज हम दोष कहते हैं, उस समय में किसी को दोषवत् नहीं मालूम होते थे। वे ही बहुत से गुण जिन्हें आज हम बुरा समझते हैं स्यात् लूथर की सफलता के कारण थे। मूर्खता में मग्न, धार्म्मिक छल कपट से आच्छादित, जनता को उत्साहित करने के लिये; असि सम्पन्न कट्टर धर्मान्धता से युद्ध करने के लिये स्यात् वैसे ही उत्साह तथा उद्दण्डताकी आवश्यकता थी। यदि लूथर बहुत मीठी और सुरीली तान अलापता तो उस समय की जनता की निद्रा कदापि भंग न होती। अपने जीवनके अन्तिम भाग में लूथर को अपनी सफलता देख बहुत कुछ अभिमान हो गया था। बात भी सही है, अपने ही जीवनकाल में सारे यूरुप को अपना अनुयायी होते देख, राजा महाराजाओं को अपना पक्षपाती होते पा, पोपों का सिंहासन डोलते देख, यदि लूथर को थोड़ा सा अभिमान न हो आता तो मानना पड़ता कि लूथर मनुष्य न होकर देवता था।

इति